युगानुकूल

मार्च 2018 मूल्य 25 रुपए

नवरचना

विकास के अनुकरणीय मॉडल आपके द्वार

समान अवसर और सबकी गरिमा एवं सम्मान का प्रतीक बनता मध्यप्रदेश

समाज में समानता एवं सद्भाव के प्रतीक संत रविदास के विचारों के अनुरूप मध्यप्रदेश सरकार द्वारा सभी वर्गों के उत्थान के लिए लागू योजनाओं ने पिछले लगभग एक दशक में इनके जीवन को आमूल रूप से परिवर्तित किया है।

हर क्षेत्र में मिल रहे समान अवसरों का परिणाम है कि आज मध्यप्रदेश का हर वर्ग गरिमापूर्ण जीवन जीते हुए निरंतर प्रगति कर रहा है।

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

रविदास जनम के कारणे, होत न कोऊ नीच।
मानुष को नीच कर डारिहै, ओछे करम की कीच।। - संत रविदास

- संत रविदास के आदर्शों, जीवन तथा कृतित्व से समाज को परिचित कराने के लिये मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की पहल पर सागर, मैहर और उज्जैन में रविदास महाकुंभ का आयोजन।
- मैहर में 2 करोड़ रुपये की लागत से श्री संत रविदास श्रद्धा केन्द्र का निर्माण।
- संत रविदास की जन्म स्थली बनारस मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना में शामिल।
- अनुसूचित जाति के सर्वश्रेष्ठ उद्यमियों को 5 लाख रुपये तथा समाजसेवियों को 2 लाख रुपये के श्री संत रविदास पुरस्कार।
- कक्षा सातवीं के स्कूली पाठ्यक्रम में संत रविदास जी की जीवनी शामिल।
- अनुसूचित जाति विकास के बजट में पिछले 12 वर्षों में लगभग 450 प्रतिशत की वृद्धि।
- मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के अंतर्गत इस वर्ग के 11 हजार एक सौ से अधिक युवाओं को रोजगार के लिये 388 करोड़ रुपये से अधिक की सहायता।
- 6500 से अधिक युवाओं को मुख्यमंत्री आर्थिक कल्याण योजना के अंतर्गत लगभग 31 करोड़ रुपये के ऋण एवं अनुदान सहायता।
- 1 लाख 22 हजार 560 युवाओं को विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत 620 करोड़ 48 लाख से अधिक की वित्तीय सहायता। 29000 से अधिक हितग्राहियों को विभिन्न योजनाओं में प्रशिक्षण एवं 9400 से अधिक सम्मानजनक रोजगारों में स्थापित।

“संत रविदास के विचारों से प्रेरणा लेकर हम हर वर्ग के लोगों की भलाई के लिये लगातार प्रयासरत हैं। हमारा संकल्प है कि समाज में हर वर्ग बराबरी का स्थान पाये।”

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

समावेशी विकास की राह पर-मध्यप्रदेश

/CMMadhyaPradesh /CMMadhyaPradesh /ChouhanShivrajSingh **Download App - Shivraj Singh Chouhan**

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2018

विश्वास की कमी से नहीं हो पाया विकास	4
विकास की महत्वपूर्ण कड़ी है धर्म	10
सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से भारत बनेगा समृद्धशाली	16
कला में अध्यात्म और धर्म का भाव	26
नानाजी की पहल से मोदी प्रेरित	28
विवेकानंद ने दिया था भारत में औद्योगिक विकास का मंत्र	34
सबको मिले 'पौष्टिक थाली'	42
राष्ट्र केवल सीमा से नहीं बनता	46
कारीगरों की समस्या का हो निदान	62
स्वावलंबन का काम देख राष्ट्रपति अभिभूत	66
संसाधन के संयमित उपयोग से होगी प्रगति	72
एकात्म मानवदर्शन की कथा रूप में प्रस्तुति	76
नानाजी ने जीने की राह दिखाई	78
स्वास्थ्य संवर्धन का अनुपम प्रयोग	84
डीआरआई के प्रयास से बढ़ा पशुपालन	86

दीनदयाल शोध संस्थान

संस्थापक
नानाजी देशमुख

प्रबन्ध सम्पादक
अमिताभ वशिष्ठ

सम्पादक
राकेश शुक्ला

आवरण सज्जा एवं लेआउट
अंशुमान सिंह
सतीश मालवीय
राजेश दुबे

विशेष सहयोग
आशीष सक्सेना

प्रबंधक
मेजर टी.आर.वर्मा (से.नि.)

प्रकाशक
अभय महाजन द्वारा
दीनदयाल शोध संस्थान के लिए,
7-ई, स्वामी रामतीर्थ नगर,
रानी झांसी मार्ग, झण्डेवाला एक्स.,
नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित
दूरभाष : 23526735/92
ईमेल : dridelhi@rediffmail.com

मुद्रक :
प्रीतिका प्रिंटर्स
ए-21/27, नारायणा इण्ड. एरिया,
फेस-2, दिल्ली-28

सम्पादकीय

बीते वर्ष, एक कृतज्ञ राष्ट्र ने एकात्म मानवदर्शन के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय और समाज जीवन में उसे मूर्त रूप में उकेरने वाले, राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की जन्म शताब्दी मनाई। पंडित जी ने कोई छह दशक पहले एकात्म मानवदर्शन के माध्यम से देश और दुनिया के सामने भारतीय जीवन मूल्यों, भारत की सांस्कृतिक विशिष्टताओं व देशवासियों की आकांक्षाओं का एक खूबसूरत चित्रण किया था। अपने दर्शन को उन्होंने एक राजनैतिक फ्रेम में भी रखा। उनका चिंतन बहुकोणीय था, राष्ट्र जीवन के सभी आयामों का समावेश करने वाला। उनकी असामयिक मृत्यु के पश्चात, उनके सहयोगी नानाजी ने इस चिंतन को धरातल पर उतारने का बीड़ा उठाया। दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से नानाजी ने गांवों में सर्वसमावेशी विकास का एक ऐसा मॉडल खड़ा किया जो आज देश-दुनिया में सबके लिए उदाहरण बन गया है।

निमित था दोनों महापुरुषों का जन्म शताब्दी वर्ष। भारत सरकार ने दोनों प्रेरणा पुरुषों की याद में उनकी जन्म शताब्दियों के बड़े स्तर पर मनाने का निर्णय लिया। इसके लिए संस्कृति मंत्रालय ने दीनदयाल शोध संस्थान को नॉलेज पार्टनर बनाया गया। संस्थान से अपेक्षा की गई कि वह देशभर में व्याख्यानों व गोष्ठियों आदि के माध्यम से एकात्म मानवदर्शन के विभिन्न आयामों पर चर्चाएं आयोजित करे। इसके लिए स्थानीय स्तर पर अन्यान्य संस्थाओं के साथ मिल कर ये कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। संस्थान ने अपनी क्षमताओं से परे जाकर देशभर में 62 व्याख्यानों व 5 राष्ट्रीय गोष्ठियों आदि का आयोजन किया। इनमें से दो कार्यक्रमों में पूजनीय सरसंघचालक जी व चार में माननीय सरकार्यवाह जी के श्रीमुख से मार्गदर्शन का सौभाग्य मिला। दो में माननीय सहसरकार्यवाह जी रहे। और दो बड़े कार्यक्रमों में माननीय प्रधानमंत्री का सानिध्य प्राप्त हुआ। बहुत से कार्यक्रमों में केंद्र सरकार के अन्य मंत्रीगण तथा समाज के विभिन्न क्षेत्रों की विभूतियों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

इस पूरे वर्ष की उपलब्धि रही ऐसे स्थानों व वर्गों के बीच एकात्म मानवदर्शन पर चर्चा जहां तब तक इसके बारे में जानकारी नहीं थी। इंडिया इंटरनेशनल सेंटर व इंडिया हैबीटैट सेंटर और शिलांग से बाड़मेर व कोचीन, तथा तिरुवनंथपुरम से जम्मू तक एकात्म मानवदर्शन के विभिन्न आयामों पर चर्चा हुई। लोगों में इसके प्रति जिज्ञासा जागी। इसकी गहराइयों को अपने विद्वान वक्ताओं ने सम सामयिक संदर्भों में समझाने का अनुपम प्रयास किया। खासकर अंग्रेजीदां वर्ग में, जहां इसे अज्ञानतावश दरकिनार कर दिया जाता था। वहां एकात्म मानवदर्शन के मर्म को समझने की भूख बढ़ी। बौद्धिक गतिविधियों के अलावा संस्थान ने ग्रामोदय मेले के माध्यम से देश में विकास के महायज्ञ का विराट स्वरूप ग्रामवासियों को दिखाया। संस्थान के कार्यकर्ताओं के ऐसे ही बहुत से अन्य भागीरथी प्रयासों से ग्रामवासियों की भागीदारी बढ़ी। यही श्रद्धेय नानाजी का सपना था।

-अतुल जैन, प्रधान सचिव

राष्ट्रीय एकात्म मानववाद... पं. दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान हर माह, 9 तारीख

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान

हर महीने की 9 तारीख़ को गर्भवती माँ को दिलाएं अहसास कि वो है सबसे ख़ास

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के अंतर्गत –

- नि:शुल्क जांच और उपचार के लिये गर्भवती महिला को 9 तारीख को शासकीय अस्पताल लेकर आये।
- यह सुविधा सभी शासकीय जिला चिकित्सालय, सिविल अस्पताल एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर नि:शुल्क उपलब्ध है।
- इस दिन शासकीय एवं निजी डॉक्टरों द्वारा गर्भवती महिलाओं की नि:शुल्क चिकित्सकीय एवं प्रयोगशाला जांच की जाती है।
- जांच में खतरे के लक्षण पाये जाने पर महिला को तत्काल उचित इलाज दिया जाता है।

ख़तरे के लक्षण

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2017

NATIONAL HEALTH MISSION

लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग
मध्यप्रदेश शासन द्वारा जनहित में जारी

विश्वास की कमी से नहीं हो पाया विकास

हमारी विकास की अपनी कल्पना है, लेकिन उसका कहीं प्रयोग नहीं हुआ। क्योंकि उस पर प्रयोग करने को कोई तैयार नहीं हुआ। इसका एक कारण विश्वास की कमी का रहा है, विश्वास था तो साहस नहीं था।

– डा. मोहनराव भागवतजी

भारतीय विकास की अवधारणा एकदम अलग है। विकास सब चाहते हैं। विकास ज़्या होना चाहिए ये तय करना पड़ता है। यहां विकास तब माना गया है, जब सबका विकास एक साथ हो। केवल धन बढ़ना विकास नहीं है, बल्कि नैतिकता का बढ़ना विकास माना जाता है। हमारे यहां धन का महत्व दान से है और शक़्ति का महत्व सज्जनों की रक्षा से है। हमारी विकास की अपनी कल्पना है, लेकिन उसका कहीं प्रयोग नहीं हुआ। ज़्योंकि उस पर प्रयोग करने को कोई तैयार नहीं हुआ। इसका एक कारण विश्वास की कमी का रहा है, विश्वास था तो साहस नहीं था। इसलिए विकास का ऐसा ढर्रा अपनाया गया जिसमें सारा कुछ सरकार नामक एजेंसी पर डाल दिया गया। सरकार का

अपना कर्तव्य है। उसकी नीतियां परिणामकारी होती हैं। परन्तु उस सरकार को बनाने वाला तो समाज ही होता है। इसलिए विकास की ऐसी योजना बननी चाहिए, जिसमें समाज विकसित हो सके।

हम सृष्टि का उपभोग नहीं करते, बल्कि आवश्यकता अनुसार उसका उपयोग करते हैं। इससे जो शक्ति मिलती है, उसे सृष्टि को समृद्धिशाली बनाने में लगाते हैं। ये विकास का तरीका हमें जंगलों और कृषि से मिला है। इस विकास से पर्यावरण में खराबी नहीं आती, ऊर्जा नष्ट नहीं होती। आज आधुनिक युग में उसी तत्व को नए रूप में खड़ा करने की जरूरत है। इसका उदाहरण माननीय नानाजी ने चित्रकूट में खड़ा किया है। हम देखते हैं कि उस

जागरूकता के कारण विकास के तीन आधार स्तंभ तैयार किए गए हैं। शासन की नीति, प्रशासन की कृति और समाज के स्वयं की पहल। देश के हर हिस्से में ऐसा होना चाहिए। हम देश में प्रवास के दौरान लोगों से कहते हैं कि जाओ चित्रकूट में देखकर आओ। चित्रकूट को देखकर भारत में कई संस्थान ऐसा काम करने के लिए खड़े होने लगे हैं। अब हम विदेशियों को भी कह सकते हैं कि हमारे विकास की कल्पना ज़्या है? ज़्योंकि दुनिया को भी इस एकात्म समग्र दृष्टि की जरूरत है। हमारे काम में एक गुप्त शज़्ति भी है। जो सामने नहीं आती। वह हमारा आत्मविश्वास है। हम जो अभी कर रहे हैं, उसे बिना रूके, बिना थके तब तक करते रहना है, जब तक नर का नारायण

हम देश में प्रवास के दौरान लोगों से कहते हैं कि जाओ चित्रकूट में देखकर आओ। चित्रकूट को देखकर भारत में कई संस्थान ऐसा काम करने के लिए खड़े होने लगे हैं। अब हम विदेशियों को भी कह सकते हैं कि हमारे विकास की कल्पना क्या है? क्योंकि दुनिया को भी इस एकात्म समग्र दृष्टि की जरूरत है। हमारे काम में एक गुप्त शक्ति भी है। जो सामने नहीं आती। वह हमारा आत्मविश्वास है।

बनने तक विकास नहीं हो जाय। चित्रकूट में माननीय नानाजी की तपस्या से परिवर्तन आया है। यहां जिससे जितनी हो सकी, सबने तपस्या की है। उसी सामूहिक तपस्या से हम जंगल को नंदन वन में परिवर्तित कर पाए हैं। हमारी नई पीढ़ी को भी इतना ही विचारवान बनाने की जरूरत है। चाहे जितनी भी कठिनाई आए, चाहे जितनी विपरीत परिस्थिति हो, लेकिन हमें अपनी बुद्धि और विवेक के साथ गन्तव्य तक चलते रहना है। तो फिर एक न एक दिन ऐसा आएगा जिसमें हमने जो सपना देखा था वह हर मानव साकार होता देख सकेगा।

भारतीय विकास की अवधारणा एकदम अलग है। विकास सब चाहते हैं। विकास ज़्या होना चाहिए ये तय करना पड़ता है। इसमें जीव-जंतु, पेड़-पौधे का विकास अलग तरह से होता है। सबका मानदंड एक जैसा नहीं होता। जैसे सर्कस में हाथी का साइकिल चलाना विकास नहीं है। वह जंगल में अच्छे से रह सके उसका वही विकास है। इसलिए जब हम भारत के विकास की बात करते हैं तो उसके विकास का कुछ अर्थ होता है। अमरीका जैसा भारत के विकास का अर्थ नहीं हो सकता। पश्चिम में धनवान और राजाओं के किस्से सुनाए जाते हैं। भारत में

लगोटी पहने व्यक्ति के किस्से सुनाए जाते हैं। भारत में राजा के किस्से सुनाए जाते हैं, लेकिन उस प्रजापालक राम के जिसने पिता का वचन निभाने के लिए चलकर आए राज्य को छोड़कर जंगल चला गया था। भारत में धनवान के किस्से भी सुनाए जाते हैं, लेकिन उस धनवान के जिसने अपने जीवन की कमाई हुई पूंजी को आजादी की लड़ाई के लिए महाराणा प्रताप को दे दिया था। हमारे यहां विकास तब माना गया है, जब सबका विकास एक साथ हो। धन बढ़ना केवल विकास नहीं है, बल्कि नैतिकता बढ़ना विकास है। हमारे यहां धन का महत्व दान से है और शक्ति का महत्व सज्जनों की रक्षा से है। हमारी विकास की अपनी कल्पना है। लेकिन उसका कहीं प्रयोग नहीं हुआ। क्योंकि उस पर प्रयोग करने को कोई तैयार नहीं हुआ। इसका एक कारण विश्वास की कमी का रहा है। विश्वास था तो साहस नहीं था। इसलिए विकास का ऐसा ढर्रा अपनाया गया जिसमें सारा कुछ सरकार नामक एजेंसी पर डाल दिया गया। सरकार का अपना कर्तव्य है। उसकी नीतियां परिणामकारी होती हैं। परन्तु उस सरकार को बनाने वाला तो समाज ही होता है। इसलिए विकास की ऐसी योजना बननी चाहिए, जिसमें समाज विकसित हो सके। समाज जागकर अपना विकास खुद कर लेता है, उसे केवल सहयोग की जरूरत पड़ती है। बाकी जगह क्या होता है पता नहीं, लेकिन अपने यहां तो ऐसा होता है कि द्रोपदी का चीरहरण होता रहता है। भगवान श्रीकृष्ण द्वारका में

होते हैं, उन्हें आभास होता है कि कुछ गड़बड़ हो रही है। वह चाहते तो भृकुटी तान देते तो सारे कौरव नष्ट हो जाते , लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया, बल्कि द्रोपदी को वस्त्र देकर इज्जत बचायी। वह सामने तब तक नहीं आए, जब तक पांडव धर्म के लिए शस्त्र उठाकर लड़ने को तैयार नहीं हुए। धर्म युद्ध में भी भगवान ने केवल रथ चलाया, लड़ना पांडवों को पड़ा। मतलब, जिसकी लड़ाई होती है, उसे खुद लड़नी पड़ती है। भगवान भी तब सहायक होते हैं, जब अपनी लड़ाई खुद लड़ी जाय। चित्रकूट में नानाजी ने भी वही किया। ग्राम समितियां बनाई। ग्रामीणों को योजनाओं का ज्ञान देना शुरू किया। विवादमुक्त, साक्षर गांव बनाने के साथ समाज को जगाने का काम किया। लोग कहते हैं कि हम समाज का काम करते हैं। वह समाज पर कोई उपकार नहीं कर रहे। हम ही समाज हैं,

हम समाज से अलग थोड़ी हैं। सामाजिक कार्य का आशय है कि हम अपना काम कर रहे हैं। माता संतान का लालन-पालन करती है तो वह कहती है कि मैंने अपना काम किया। पुत्र भी बड़ा होकर अपने माता-पिता की सेवा करता है तो वह भी कहता है कि मैं अपना काम कर रहा हूं। नानाजी कहा करते थे कि सार्वजनिक कार्यकर्ता अपना काम नहीं करता, बल्कि अपनों के लिए काम करता है। नानाजी राजनीति के सारे लाभ छोड़कर यहां रहने के लिए आए। भारत में पांच जगह पर काम किसलिए शुरू किया। उन्हें पता नहीं था कि वह जो काम कर रहे हैं, उसके लिए हम ग्रामोदय मेला लगाकर उनकी पुण्यतिथि मनाएंगे। इस आशा के साथ उन्होंने ये सब नहीं किया था। उन्होंने तो अपनो के लिए ये सब काम किया था। इसी अपनत्व के भरोसे पर समाज चलता है। सदियों से उपेक्षित दुर्बल समाज में इससे थोड़ी सी जान आ गई तो वह स्वावलंबी होने लगा। समाज जाग गया तो तीन-तीन पंचवर्षीय योजनाओं में जो काम नहीं हो सका, वह यहां तीन साल में खड़ा हो गया। हमारे विकास का यही रास्ता है। गांव का विकास भारत का विकास है। इस तरह की बात कहते सब हैं, लेकिन गांव के विकास में करना ज़्या है? यह समझ नहीं पाते। आज के गांव में दो बातें हैं। प्राचीन परज़्परा वाले गांव जहां की कला, संस्कृति, आत्मियता वाले संबंधों को निभाने की कला अभी गांवों में बची हुई है। कारण, पुराने जमाने के गांव स्वयंपूर्ण होते थे। देश के अच्छे विद्वान वहां होते थे, जिनकी चर्चा दुनिया में होती थी। शहरों की प्रयोगशाला यहां नहीं थी। हमारे यहां के किसानों ने कृषि यांत्रिकी तैयार की है। जिसमें आज भी कई चमत्कार हो सकते हैं। गौ का उपयोग जैसे हमारे देश ने किया, वैसा किसी ने नहीं किया। हमने गौ माता कहकर उससे संबंध जोड़ा। हम सृष्टि का उपभोग नहीं करते, बल्कि आवश्यकता अनुसार उसका उपयोग करते हैं। इससे प्रकृति का संतुलन बना रहता है। हमें विकास की इसी अवधारणा को लेकर आगे बढ़ते रहना है। हमें किसी भी स्थिति में पूरे आत्मविश्वास के साथ बिना रूके, बिना थके चलते रहना है।

(परमपूज्य सरसंघचालक डा. मोहनरावजी भागवतजी का चित्रकूट में आयोजित तीन दिवसीय ग्रामोदय मेला के समापन कर किया गया मार्गदर्शन)

विकास की महत्वपूर्ण कड़ी है धर्म

प्रत्येक देश की अपनी प्रकृति और संस्कृति होती है। बिना संस्कृति के विकास का कोई अर्थ नहीं है। इसलिए बाद में कहा गया सभी देशों को अपनी-अपनी संस्कृति के अनुसार अपने विकास का मॉडल चुनने का अधिकार है।

– डा. मोहनराव भागवतजी

दुनिया के शक्तिशाली देशों ने विकास का एक ही प्रतिमान होने की बात कही। 1951 से देश में इसी परिभाषा पर लगातार प्रयोग चले। इसके बाद 1998 से धीरे-धीरे परिवर्तन शुरू हुआ। 2008 तक सारी व्यवस्था ने यू-टर्न ले लिया। फिर पूरी दुनिया ने माना कि विकास का एक प्रतिमान सभी जगह लागू नहीं हो सकता। प्रत्येक देश की अपनी प्रकृति और संस्कृति होती है। बिना संस्कृति के विकास का कोई अर्थ नहीं है। इसलिए बाद में कहा गया सभी देशों को अपनी-अपनी संस्कृति के अनुसार अपने विकास का मॉडल चुनने का अधिकार है। लेकिन कभी-कभी लगता है कि विकास का विचार करने वाले लोगों को पता है कि हमें किस तरह का मॉडल बनाना है। विकास शब्द की कल्पना बदलती रहती है। विकास का सीधा संबंध प्रकृति से है, इसलिए विकास का भारतीय प्रतिमान पर विचार अत्यन्त सामायिक है। यद्यपि देर हो गई है, लेकिन इसके बाद भी हमको उस विचार को पूर्ण करने के लिए आगे बढ़ने की आवश्यकता है। अब प्रश्न आता है कि

भारत का विकास कैसे हो? उसकी संस्कृति ज़्या है? देश की संस्कृति एक-दो दिन में नहीं बदलती। भारत प्राचीनकाल से अखंड जीवन वाला देश है। भारत ने बहुत सारे उतार-चढ़ाव और परिस्थितियों को देखा है। भारत की कहानी एकदम अलग है। ना असुरक्षा का भाव है और ना स्वार्थ का। भारत में समृद्धि के लिए संघर्ष का रास्ता नहीं अपनाया जाता। जो सीमा तय की गई है, सभी उसी दायरे में रहते हैं। किसी दूसरे देश के व्यज़्ति के आने की संभावना नहीं है, लेकिन यदि भटकता हुआ आ भी गया तो उसे भी साथ ले लेते हैं। उसे कहा जाता है कि तुम भी नई विविधता लेकर हमारे यहां बस जाओ। हम पृथ्वी को गाय के समान मानते हैं। वह पृथ्वी जो कई धर्म को मानने वाले, कई भाषाओं को बोलने वालों को धारण करती है। पहली बार अनुभव किया गया कि बाहर से कोई सुख नहीं मिलता। भौतिक सुविधाओं से सुख नहीं मिलता। प्रकृति का दोहन करके सुख तलाशा जाता है।

एक कथा बहुत प्रचलित है। वैभव के शिखर पर पहुंचने के बाद

देव और असुर सोचने लगे कि समाधान अभी भी नहीं मिला। उन्हें मन की शांति नहीं मिल रही थी। तब वह अपने-अपने गुरुओं के पास गए। शुक्राचार्य और बृहस्पति ने उन्हें ब्रज़्हा के पास जाने की सलाह दी। ब्रज़्हाजी ने उन्हें आत्मन विद्या का ज्ञान दिया। वह खुश होकर चल दिए। उन्होंने प्रतिबिज़्व को आत्म ज्ञान मान लिया। लेकिन उनका यह भ्रम टूट गया। नदी पार करते समय चप्पू से पानी पर पड़ने वाले प्रतिबिज़्व के मिटने से उन्हें लगा कि ब्रज़्हाजी ने उन्हें सही ज्ञान नहीं दिया। वह वापस गए, कई तरह के प्रश्न किए गए तब उन्हें अहसास हुआ कि असली सुख मन को स्थिर करने से है। उसी से परमवैभव प्राप्त होता है। शरीर की आवश्यकता को पूरा करना हमारा धर्म है। इसके अलावा पुरुषार्थ करने की बात कही गई है। आवश्यकता की पूर्ति के लिए भागदौड़ करते रहना ठीक नहीं है। इच्छा को नियंत्रित करना चाहिए। इसी से मोक्ष की प्राप्ति होती है। सारी दुनिया इस बात को जानती है। इच्छा की पूर्ति कभी नहीं होती। हम परिवार की इच्छापूर्ति के लिए काम करते हैं तो समाज को समय नहीं दे पाते, समाज के लिए करते हैं तो परिवार को नहीं दे पाते। सबकी मर्यादा है। वहीं से व्यज़्तिवाद पैदा हुआ। उस पर समाज का तर्क आया कि व्यज़्ति समाज का एक पुर्जा है। उसकी अपनी कोई इच्छा नहीं होती। उसे समाजहित में ही चलना पड़ता। जब समाज विकास की दिशा में बढ़ता है तो सृष्टि का नाश होता है। इस समय विकास और पर्यावरणवादियों के बीच द्वंद चल रहा है। दुनिया में जैसे कोई विकास की योजना आती है, पर्यावरणवादी आंदोलन शुरू हो जाता है। अब पर्यावरणवादियों की सुनो तो विकास अवरूद्ध होता है और विकास करते हैं तो पर्यावरण को नुकसान होता है। इसमें किसी एक को चुनना ज़्या संभव है। दुनिया ने विकास को पकड़ा और बाकी सब छोड़ दिया। हमारे जीवन का उदेश्य उपभोग के लिए सामर्थवान बनने का हो गया। इसके बाद हमने सृष्टि को कुछ देने के बारे में सोचा। वहां से धर्म की

उत्पत्ति हुई। जो सुख हमें मिला है, उसे सबको देने का धर्म का भाव पैदा हुआ। बाद में धर्म को धार्मिकता से जोड़ दिया गया। धर्म का संबंध पूजा-पाठ से नहीं है। धर्म लोगों को आपस में जोड़ने का काम करता है। इसमें सारा जीवन निहित है। ज़्या हिन्दू धर्म की कोई किताब है? ज़्या हिन्दू धर्म की कोई आचार संहिता है? ऐसा कुछ भी नहीं है। धर्म का पर्याय है शरीर, मन, बुद्धि के बीच समन्वय बनाना। इसमें शरीर और मन के सुख में विभेद नहीं रह जाता। सबका सुख निहित है। धर्म का अनुशासन है, जिसे सबको मानना पड़ता है। पत्नी का पति के प्रति किया गया पहला व्यवहार धर्म है। माता-पिता की देखभाल धर्म है। धर्म में कर्तव्य पालन होता है। मनुष्य के धर्म के अनुशासन में रहने की बहुत पुरानी व्यवस्था है। धर्म तत्व भारत की सारी व्यवस्थाओं का सारे विचारों का आधार है। व्यज़्ति धर्म यानी कर्तव्य पालन के लिए अपना बलिदान देने में भी पीछे नहीं रहता। धर्म में व्यज़्ति, परिवार, समाज फिर राष्ट्र सबका विकास साथ होता है। इसमें किसी को दबाना नहीं पड़ता। इसलिए धर्म में खुद की वजाय दूसरे के विकास की चिंता रहती है। ज़्योंकि मनुष्य जानता है कि दूसरे के विकास में उसका विकास भी निहित है।

इस समय देश में सबका साथ, सबका विकास की बात कही जा रही है। वास्तव में वह धर्म का हिस्सा है। भारत के लोगों में आक्रमण का स्वभाव नहीं है, इसलिए यहां सबका साथ, सबका विकास की बात चल सकती है। लेकिन, यह हुआ है इसे कैसे मानेंगे? उसकी कसौटी है, सबका विकास करते समय सबसे अंतिम व्यज़्ति को विकास का लाभ हो यह भाव होना चाहिए। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन में उसी अन्त्योदय की बात कही गई है। महात्मा गांधीजी ने भी इसी कसौटी की बात कही है। यह प्रश्न मन में दुविधा उत्पन्न करता है। इसे करना चाहिए या नहीं करना चाहिए। गांधीजी और पंडितजी ने कहा कि आंख बंद करके यह काम करना चाहिए। दो अलग-अलग

समय पर दो अलग–अलग विचारधारा वाले लोगों द्वारा एक ही बात कहना संयोग नहीं है, बल्कि यह भारत है। भारतीय मानस का अवलंबन करके कोई भी यही कहेगा। भारत में विकास अन्तोदय की कसौटी है। विकास पर्यावरण का मित्र है। मित्र होना कठिन बात है ज़्योंकि उसमें मर्यादा आती हैं। हमें पर्यावरण रक्षा की भी मर्यादा जाननी पड़ेंगी। जड़ी बूटी के लिए वैद्य जंगल से वनस्पति लाते हैं, लेकिन भाव और नियम में फर्क है। वो जंगल से जितनी वनस्पति लाते थे, उतने पेड़ भी लगाते थे। मर्यादा पुरुषोत्तम राम को धर्म का प्रतिमान माना गया है। उस प्रतिमान पर ही नानाजी ने काम किया है। नानाजी ने ये सब धर्म से प्रेरित होकर किया है। धर्म की प्रेरणा से ही नानाजी ने चित्रकूट में एकात्म मानव दर्शन का जीवंत प्रतिमान खड़ा किया है। यह पाया गया कि मनुष्य का सुख केवल रोजी–रोटी मिलना नहीं है। हम अपना विकास ठेके पर नहीं देते। यह हमारी परज़्परा नहीं है। चित्रकूट में नानाजी ने यही किया। नागपुर में भी प्रकल्प

नानाजी ने ये सब धर्म से प्रेरित होकर किया है। धर्म की प्रेरणा से ही नानाजी ने चित्रकूट में एकात्म मानव दर्शन का जीवंत प्रतिमान खड़ा किया है। यह पाया गया कि मनुष्य का सुख केवल रोजी-रोटी मिलना नहीं है। हम अपना विकास ठेके पर नहीं देते। यह हमारी परम्परा नहीं है। चित्रकूट में नानाजी ने यही किया।

खड़ा किया। उन दिनों मैं नागपुर का प्रचारक था। बैठक में नानाजी के साथ बैठा। नानाजी ने योजना बताई और सबसे कहा कि इसे कैसे करना है यह आप लोग बताएं। फिर बस्ती में काम शुरू किया गया। नानाजी ने बस्ती के लोगों को तब तक आर्थिक सहायता नहीं दिलाई जब तक वह खुद से काम के लिए आगे नहीं आए। विकास परिश्रम से होना चाहिए। अभी कहा जाता है कि आप पांच साल में बटन दबा दीजिए। सब कुछ हम करेंगे। मनुष्य को निठल्ला नहीं बनाना चाहिए। शासन की योजनाओं का लाभ समाज तभी ले पाएगा जब वह सामर्थवान बनेगा। भारत धर्म संस्कृति का देश है। धर्म का प्रतिमान सबको आगे बढ़ाने का है। सबका विकास मतलब काम के साथ मोक्ष की तरफ बढ़ने की प्रवृति। इसमें व्यज़्ति, समूह और सृष्टि तीनों साथ-साथ विकसित होंगे। डा. भीमराव अज़्बेडकर ने कहा था कि धर्म देशकाल परिस्थिति के हिसाब से बदलता है। नानाजी ने पहला अवसर मिलते ही उसका उपयोग करके उसका एक जीवंत मॉडल चित्रकूट में खड़ा किया है। उसको देखकर देश में इस प्रकार के अनेक मॉडल खड़े हुए हैं। सरकार की नीति और दृष्टि में भी यह बातें दिखने लगी है। इसी आधार पर भारत का विकास होगा। विकास को समझने के लिए चित्रकूट जाकर प्रत्यक्ष देखना चाहिए।

(परमपूज्य सरसंघचालक डा. मोहनरावजी भागवतजी का संसद भवन के बालयोगी सभागार में 26 मार्च, 2017 को दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित नानाजी स्मृति व्याज़्यानमाला पर मार्गदर्शन हुआ। जिसका संपादित अंश-)

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से भारत बनेगा समृद्धशाली

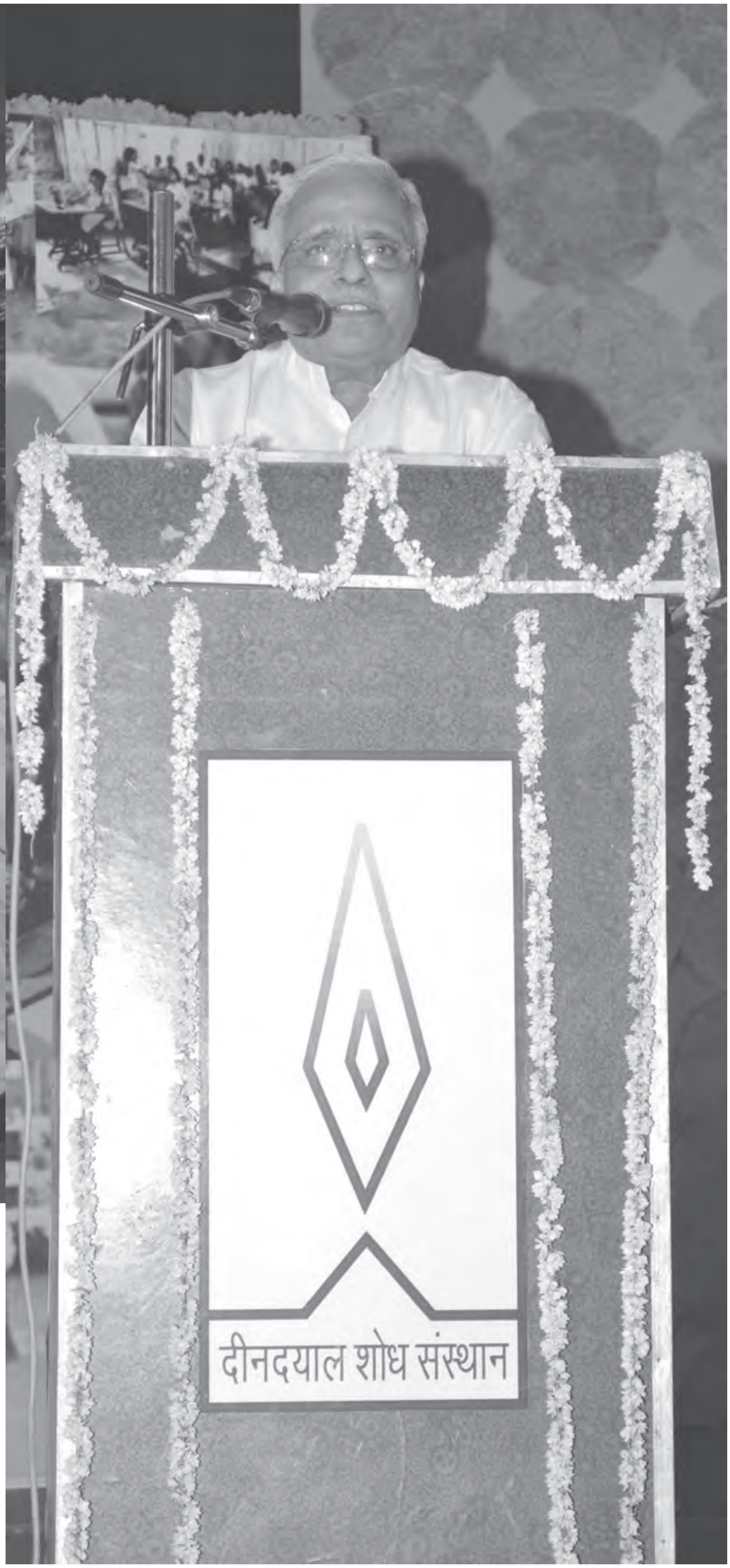

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक परमपूज्यनीय श्री गुरूजी ने राष्ट्रवाद के दो प्रकार बताए थे। एक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और दूसरा राजनैतिक राष्ट्रवाद। इन दोनों के अंतर को समझने की जरूरत है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में विश्व कल्याण की कल्पना है जबकि राजनैतिक राष्ट्रवाद में अपना प्रभुत्व स्थापित करने का विचार है। भारत की राष्ट्र की कल्पना कभी

नकारात्मक नहीं रही, सकारात्मक रही। इसलिए 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' के मूलमंत्र को अपनाया गया है।

पंडित दीनदयाल और नानाजी इन दोनों महापुरूषों का ये जन्म शताज़्दी वर्ष है। संयोग है कि एक ही समय में इन दोनों महापुरूषों ने इस पुण्यभूमि पर जन्म लिया और इनके सानिध्य में हम सबको रहने का कुछ अवसर प्राप्त हुआ। एक महापुरूष के बारे में कहा जा सकता है कि उन्होंने गहराई से अध्ययन, चिन्तन किया और विश्व के सामने एकात्म मानवदर्शन के रूप में अपने भारत के चिन्तन की प्रस्तुति दी और दूसरे महापुरूष ऐसे रहे जिन्होंने उस चिन्तन को समझकर, जमीन पर उतारने का प्रयास किया। स्वतंत्रता के सबके अन्त:करण में है। इसके साथ मजहब के आधार पर इस देश को दो टुकड़ों में बांटा गया। तब प्रश्न आता है कि ज़्या हम वास्तविक रूप से स्वतंत्र हुए हैं? 14 अगस्त तक जो अपने आपको भारत का नागरिक मानते थे, वह 15 अगस्त को भारत के नागरिक नहीं रहे। एक दिन में नागरिकता, एक दिन में इस देश से रिश्ता टूट सकता है, ज़्या यह संभव है? मैं मानता हूं कि ये इतना आसान नहीं है। विभाजन राजनैतिक दृष्टि से हुआ। जो राष्ट्र को राजनैतिक दृष्टि से देखते आए हैं उनकी इच्छा शायद थोड़ी मात्रा में पूरी हुई, परन्तु जो राष्ट्र को संस्कृति की दृष्टि से देखते हैं वे तो यही मानकर चलते हैं कि आज भी हम सब एक हैं। हमें

70 वर्ष पूरे हुए हैं। 71वां स्वतंत्रता दिवस हम मना रहे हैं। सत्तर साल पूर्व देश का अपना एक संविधान के आधार पर अपना राज्य शुरू हुआ। मन में प्रश्न आता है कि 15 अगस्त 1947 को जो हुआ ज़्या वह ठीक हुआ? ज़्या हमारे पूर्वजों की आकांक्षाओं के अनुरूप हुआ? गुलामी से मुज़्त हुआ भारत देखने का आनन्द तो है लेकिन एक वेदना भी हम अलग करने की ताकत किसी में नहीं है। लगता है कभी-कभी सांस्कृतिक बातों को लेकर चलने वालों पर राजनैतिक विचारधारा थोड़ा हावी हुई है। इस कारण देश का विभाजन हम सबको देखना पड़ा। कल्पना कीजिए कि जन्म हुआ तब मैं भारत का राष्ट्रीय नागरिक था। युवा होते-होते मैं पाकिस्तान का नागरिक बन गया और प्रौढ़ावस्था में

आते-आते मैं बांग्लादेश का राष्ट्रीय नागरिक बना। राष्ट्रीयता ज़्या इस तरह से बदलती जाती है। मेरा मानना है कि नागरिकता बदल सकती है, राष्ट्रीयता नहीं बदल सकती। कई महापुरूषों ने कहा कि राजा आएंगे, राजा जाएंगे। समाज निरंतन चलता रहता है। समाज में कहीं परिवर्तन नहीं आता समाज, समाज रहता है। वह चिरंतन है, वह स्थाई है। राज्य अस्थिर कल्पना है। कभी उलट-पुलट होते हैं, बदलते हैं, नष्ट होते हैं, फिर पैदा होते हैं, फिर नष्ट होते हैं। यह प्रक्रिया चलती रहती है। हम सब लोग मानते हैं कि लोग राष्ट्र-राज्य, इस कल्पना में अन्तर कर नहीं पाए और इसलिए राज्य बदलते ही राष्ट्रीयताएं बदलने लगी। इस पर विचार करना होगा। हजारों वर्षों से यहां का समृद्ध जीवन चलता आया है। हमने उतार-चढ़ाव जरूर देखे, लेकिन कई बातों में परिवर्तन नहीं हुआ। आज भी हम थोड़ा विचार करते हुए इन्टरनेट पर जाकर देख सकते हैं कि कल्चरल हिस्ट्री आफ पाकिस्तान एक वेबसाईट है। जो लिखता है कि पाकिस्तान तक्षशिला के प्रति गौरव का भाव व्यज़्त करता है। कल्चरल हिस्ट्री आफ पाकिस्तान, कल्चरल हिस्ट्री आफ भारत में कुछ अन्तर है ज़्या? ऐसी कई बातें हमको ध्यान में आएंगी। इसलिए हम कह सकते हैं कि केवल राज्यों में परिवर्तन हुआ है। दो राज्य अलग-अलग बन गए। इसे ही राजनैतिक राष्ट्रवाद कहते हैं, लेकिन सोचने का प्रश्न ये है कि ज़्या सांस्कृतिक दृष्टि से हम अलग हुए हैं। इसलिए कभी-कभी लगता है कि इन संकल्पनाओं को बहुत बड़ी मात्रा में स्पष्ट होने की आवश्यकता है। विश्व के कुछ चिन्तकों ने कहा कि राष्ट्र एक नकारात्मक कल्पना है। यह उनको कैसे लगा कि राष्ट्र कहने से प्रखरतावाद एवं अलगाववाद का भाव निर्माण होता है। हमारी सीमाएं मस्तिष्क पर कट्टरता का जन्म देती हैं। इस भूमि पर, इस सीमा में रहने वाले अपने आपको कट्टर मानते हैं। दूसरों के प्रति असहिष्णुता का भाव निर्माण होता है। उस भूमि में रहने वाले जो अल्पसंज़्यक माने जाते हैं उन पर अन्याय, अत्याचार करने का जाने-अनजाने में अधिकार प्राप्त होता है। स्वाभाविक रूप से राष्ट्र को लेकर साम्राज्यवादी, विस्तारवादी सोच विकसित होती है। इसलिए कुछ लोगों को लगा कि राष्ट्र की संकल्पना नकारात्मक है, युद्ध की तरफ ले जाने वाली है, संकुचित है, कट्टरता का भाव निर्माण करती है, असहिष्णुता का भाव निर्माण करती है।

पंडित दीनदयाल और नानाजी इन दोनों महापुरूषों का ये जन्म शताब्दी वर्ष है। संयोग है कि एक ही समय में इन दोनों महापुरूषों ने इस पुण्यभूमि पर जन्म लिया और इनके सानिध्य में हम सबको रहने का कुछ अवसर प्राप्त हुआ। एक महापुरूष के बारे में कहा जा सकता है कि उन्होंने गहराई से अध्ययन, चिन्तन किया और विश्व के सामने एकात्म मानवदर्शन के रूप में अपने भारत के चिन्तन की प्रस्तुति दी और दूसरे महापुरूष ऐसे रहे जिन्होंने उस चिन्तन को समझकर, जमीन पर उतारने का प्रयास किया।

इसके विपरीत भारतीय मनीषियों ने कहा कि यह अत्यन्त सकारात्मक है। हजारों वर्षों से अगर हम भारत के सन्दर्भ में देखते हैं तो भारत की राष्ट्र की कल्पना कभी नकारात्मक नहीं रही, सकारात्मक रही। हमारी संस्कृति कभी भी विस्तारवादी सोच की नहीं रही। पूरा इतिहास देखा जा सकता है, यहां से कभी कोई सेना लेकर दूसरों की भूमि पर आक्रमण करने नहीं गया। जो लड़ाईयां हुईं, वह आत्मरक्षा के लिए की गई। राष्ट्र में ऋषि-मुनि हमेशा सकारात्मक विचार, सांस्कृतिक सोच और जीवन-दृष्टि लेकर गए। हमारी राष्ट्र की संकल्पना जोड़ने वाली है। विश्व में जो अंतर पैदा हो रहा था, उसे खत्म करने के लिए भारत के लोगों ने 'वसुधैव कुटुज़्बकम' का नारा दिया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक परमपूज्यनीय श्रीगुरूजी ने कहा था कि राष्ट्रवाद दो प्रकार के होते हैं। एक है सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और दूसरा राजनैतिक राष्ट्रवाद। अब इसे भी समझने की आवश्यकता है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की कल्पना करते समय दुनिया के

सामने मानवता और मानवीयता का संदेश देने वाला विचार करते हैं। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद शास्त्र, जीवन-मूल्यों, जीवनशैली के आधार पर किया गया है। इसलिए हम 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' कहते हैं। जिसका भाव है कि विश्व का कल्याण हो। इसे ही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद कहा जाता है।

पूज्यनीय गुरूजी ने राजनैतिक राष्ट्रवाद की भी बात कही थी। राजनैतिक राष्ट्रवाद विस्तारवाद का संदेश देता है। साम्राज्य की विस्तार की कल्पना करता है। युवकों को निमंत्रण देकर आक्रामक बनाता है। इसकी सोच अपनी सीमा को बढ़ाने की होती है। दुनिया के छोटे देशों को अपने प्रभावों में लाने की कोशिश कराता है। इसलिए राष्ट्रवाद का विचार करते समय भारतीय लोग सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के समर्थक हुए। ज़्योंकि इसमें सकारात्मक है जबकि राजनैतिक राष्ट्रवाद में नकारात्मक है। इटली के मैजिनी ने कुछ सूत्र लिखे हैं। उसमें एक सूत्र कहता है कि समूह जन शज़्द का प्रयोग है। प्रत्येक समूह का अपने जीवन का लक्ष्य होता है। वह लक्ष्य मानवीयता का पोषण करने वाला होता है। पोषण करने की जो प्रवृति है वह उस समूह की राष्ट्रीयता मानी जाती है। मैजिनी ने अपनी कल्पनाओं को बहुत ही स्पष्ट किया है। लेकिन, दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि इटली में फासीवाद का जन्म हुआ। जिसमें नकारात्मक राष्ट्रवाद को स्वीकारते हुए पूरे विश्व के सामने समस्या पैदा कर दी। कभी-कभी लोग संघ को भी फासीवादी कहते हैं। वे ज़्यों कहते हैं, मुझे अभी तक पता नहीं है। कभी-कभी विचार आता है कि प्रमाणिकता से विचार करने वाले मैजिनी और हमारे ऋषि-मुनियों ने जो राष्ट्रवाद की कल्पना की उसमें ज़्या अन्तर है? वह एक ही भाव प्रकट कर रहा है। इसलिए जब भी सकारात्मक विचार कहीं होता है तो वह भारत के विचारों के साथ मेल खाता है। अज़्सर कहा जाता है कि राष्ट्रवाद ज़्या है? दरअसल राष्ट्रवाद एक सार तत्व और आध्यात्मिक है। विश्व कल्याण और मानव कल्याण की बात करने वाले हैं। यह कहा गया है कि समृद्ध और श्रेष्ठ परज़्पराओं को दुनिया में बांटना राष्ट्रवाद का आध्यात्मिक सार है। सकारात्मक वातावरण को स्थापित करने के लिए हम जियेंगे। इसलिए हम कहते हैं कि मृत्युंजय भारत। मृत्युंजय भारत ज़्या होता है? मृत्युंजय भारत का अर्थ है, दुनिया को सही दिशा देने वाला। इसका वर्णन कई तरह से किया गया है। अगर हम ईसाईयत और इस्लाम के सन्दर्भ में देखते हैं तो उनका मानना है कि सारे विश्व में अगर ईसाइयत स्थापित हो जाती है तो राष्ट्र कल्पना समाप्त हो जाएगी। इसके बाद राष्ट्र कल्पना नहीं रहेगी। ज़्योंकि सभी एक ही तत्व को मानने वाले हो जायेंगे। इस्लाम ने भी यही कहा है और ईसाई और इस्लाम ने इस राष्ट्र की कल्पना को नष्ट करने का प्रयास किया। परन्तु जो स्वाभाविक होता है वह कभी समाप्त नहीं होता। कई छोटे-छोटे इस्लामिक देश बनें। इसके साथ कज़्युनिज्म के द्वारा तीसरा प्रयत्न हुआ। कज़्युनिज्म ने कहा सारा विश्व एक है।

उनका मत था कि दुनिया में दो प्रकार के लोग हैं। एक शोषित हैं और एक शोषक है। आज हम देखते हैं कि ही कज़्युनिज्म बंट गया है। चीन,रूस और भारत में अलग-अलग कज़्युनिज्म है। ये टुकड़े-टुकड़े होते गए। यह होना ही था ज़्योंकि प्रकृति भिन्न थी, विचार भिन्न थे, जीवनशैली में भिन्नता थी। हम अनुभव करते हैं कि जिन्होंने राष्ट्रवाद की कल्पना को समाप्त करने की कोशिश की वह सब विफल

रहे। सबसे पहले 1947 में राष्ट्र निर्माण की बात भारत में कही गई। ये राष्ट्र निर्माण का विचार कैसे आया? विचार यहां से अंकुरित हुआ कि अभी तक यह राष्ट्र नहीं था। हम राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में लगे हैं। राष्ट्र निर्माण में जिनका योगदान रहा उनको हमने राष्ट्रपिता कहा और इसको संचालित करने वाले को हमने राष्ट्रपति कहा। उस समय देश का नेतृत्व करने वाला वर्ग पश्चिमी विचारों से प्रभावित था। इसलिए सारी कल्पनाएं भारत की मूल कल्पना से हटकर पैदा हुई। राष्ट्रवाद की कल्पना तब बनी उन लोगों के मन में

पश्चिमी जगत ने परिकल्पना रखी थी। वही बात उनके मन में बैठी और इसलिए राजनैतिक राष्ट्रवाद को स्वीकार कर लिया गया। धर्म के आधार पर पाकिस्तान की मांग को नहीं रोका गया। ज़्योंकि उस समय राष्ट्र की परिकल्पना अलग बन गई थी। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की जगह राजनैतिक राष्ट्रवाद आ गया था। यदि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद मन में होता तो इस देश के विभाजन को स्वीकार नहीं किया जाता। परन्तु दुर्भाग्य रहा कि उस समय के अपने नेतृत्व ने इसको गलत ढंग से लिया और भारत सांस्कृतिक दृष्टि से एक है, इस बात पर ध्यान नहीं दिया गया।

इसलिए भाषाओं के आधार पर प्रान्तों की रचना की गई। उस समय राज्यों की रचना के लिए परमपूज्यनीय श्री गुरूजी ने कहा था कि यह प्रशासनिक सुविधाओं के आधार पर करना चाहिए, ना कि भाषाओं के आधार पर। लेकिन, गुरुजी के मन्तव्य से अलग भाषाओं को इकाई माना गया। सभी राज्यों की रचना भाषाओं के आधार पर की गई। फैडरेशन आफ स्टेट्स ज़्या है? कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और राजस्थान की सीमाओं से लेकर उत्तर-पूर्व के पहाड़ियों तक फैला देश सांस्कृतिक दृष्टि से ज़्या एक नहीं है, परन्तु राजनैतिक दृष्टि से इसका विभाजन किया गया। जिसके परिणाम आज हम भुगत रहे है।। आज भी भाषाओं के आधार पर दो राज्य आपस में संघर्ष करने के लिए खड़े होते हैं। आवश्यकता है किसी भी राज्य में रहने वाले आपस में सांस्कृतिक एकता को अपने जीवन मूल्यों, जीवन शैली को समझकर छोटी-मोटी सुविधाएं मांग सकते है। लेकिन आपस में संघर्ष का कारण राजनैतिक दृष्टि से उनका किया गया बंटवारा है। इसी संघर्ष से राज्यों में क्षेत्रीय दल खड़े हो गए हैं। क्षेत्रीय दल अपने राज्य की मांग के लिए दबाव बनाते हैं। इससे क्षेत्रवाद तेजी से बढ़ा है। भाषाई बंटवारे के कारण अपनी छोड़कर दूसरों की भाषा के प्रति अश्रेष्ठता का भाव बढ़ रहा है। इधर कुछ वर्षों का इतिहास बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण रहा है। राज्यों को जिस आधार पर विभाजित किया गया, वह फैसला देश की एकात्मता के सामने चुनौती बन गया है। लोग खालिस्तान मांगने लगे हैं। अब द्रविडस्तान की मांग भी उठ रही है। वनवासी अपना अलग राज्य चाहने लगे हैं। उत्तर- पूर्व क्षेत्र में ग्रेटर नागालैण्ड की मांग उठ रही है। इस प्रकार की राजनैतिक सोच तेजी से विकसित होती जा रही है। अध्ययन करने पर ध्यान आता है कि इसके पीछे विदेशी शज़्तियां विभेदकारी विचारों को जन्म देने के लिए काम कर रही हैं। हमें इसे समझने की जरूरत है। अभी यूएनओ ने ट्राईबल डे (आदिवासी दिवस) मनाने का प्रस्ताव पारित किया है। इसे भारत में प्रचारित करने का लगातार प्रयास हो रहा है। भारत के मूल निवासी जनजाति, गरीब, दलित है। बाकी सब बाहर से आए हैं। इस तरह का दुष्प्रचार करके संघर्ष का

वातावरण बनाया जा रहा है। यह काम वो लोग कर रहे हैं, जो भारत को समृद्धशाली होता नहीं देखना चाहते। इस षडयंत्र के पीछे ऐसी ताकतें काम कर रही हैं, जो सकारात्मक सोच लेकर चल रहे भारत को राजनैतिक भूमिका में लाकर दुर्बल करना चाहते हैं। हम जब भारतीय संस्कृति और भारतीय राष्ट्रीयता की बात कहते हैं, तो इसका वैकल्पिक शज़्द हिन्दू संस्कृति और हिन्दू राष्ट्रीयता है। ये धर्म का विषय नहीं है। इस्लामिक राष्ट्र, इस्लामिक विषय यह मजहब हो सकता है, लेकिन हिन्दू राष्ट्र और हिन्दू संस्कृति धर्म नहीं हो सकता। ज़्योंकि हिन्दू कोई धर्म नहीं है। लेकिन इन्हें कौन समझाए। हिन्दू को धर्म से ज़्यों जोड़ा जाता है, ज़्या हिन्दू की कोई पद्धति है। हिन्दू का कौन सा भगवान है। हिन्दू का कौन सा एक ग्रंथ है। सज़्प्रदाय, धर्म वह होते हैं जिनका ग्रंथ होता है, जिनकी पद्धति होती है, जिनके पूजा के स्थल एक होते हैं। हिन्दू समाज तो विविधता से भरा हुआ है। इसलिए हम कहते हैं कि इस देश में रहने वाला चाहे इस्लाम को मानने वाला हो या इसाई हो वह इसी देश का है। उन्हें ये मानना चाहिए कि वे इसी देश की संतान हैं। हमारे पूर्वज अलग-अलग नही हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी देखें कि हम कौन हैं। जिस तरह के गलत प्रचार चल रहे हैं, उसमें भारत माता की जय कहना भी कठिन है। सारे देश को जोड़ने का एक ही मंत्र है भारत माता की पूजा। सारा समाज ये मानें कि भारत माता ही हमारी देवता है। इसलिए इसे एक रखने की आवश्यकता है। यह दुर्भाग्य है कि हम अपने-पराए को नहीं पहचान सके, इसलिए आक्रांताओं को भी अपना मान लिए। जो भारत में आक्रमण करने आया है, उसने यहां की स्थापित बातों को मिटाना चाहा। मुगल सम्राट आक्रमण के लिए आए उन्होंने अपना विजय प्रतीक कुतुब मीनार बनाया। दिल्ली में कनॉट प्लेस है। कितने लोग जानते हैं कनाट कौन है? बच्चे यदि पूछ लिए तो हम ज़्या बताएंगे। ताजमहल भारत का गौरव है। नार्थ एवेन्यू और साउथ एवेन्यू ज़्या है, अंग्रेजों का रखा नाम है। मजेदार बात ये है कि ये सब हमारी समझ में नहीं आता। हमें सोचना होगा कि देश की अस्मिता, राष्ट्रीयता में हम एक है यह भाव कैसे जागृत होगा। अयोध्या का संघर्ष केवल मस्जिद हटाना नहीं था। राममंदिर का निर्माण भी ध्येय नहीं है। देश में कई जगह राम के मंदिर हैं। मंदिर की बात हम इसलिए करते हैं कि ये हमारी अस्मिता से जुड़ा मसला है। वह हमारा अपना है। पराया नहीं है किसी आक्रमणकारी ने नहीं बनाया। राम मन्दिर इस देश की करोड़ों जनता के हृदय की राष्ट्रीयता का प्रतीक है। इसका विवेक, इसका विचार स्थापित करना पड़ेगा। इसलिए इसका विरोध करने वाले राजनैतिक दृष्टि से सोचते हैं। उनके मन और दिमाग में राजनैतिक राष्ट्रवाद है। वह वोट के आधार पर विचार करते हैं। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को मानते वाले किसी को अच्छा लगे या गलत जो उचित है उसी को रखने का प्रयास करते हैं। हमें इन बातों को समझने की आवश्यकता है। हमने अंग्रेजी को अपनी भाषा मान लिया। ज़्योंकि हमें अपना पराया समझ में नहीं आता। हम किसी भी भाषा के विरोधी नहीं है। हम विविध प्रकार की भाषाएं सीखें। परन्तु हम अगर एक विचार करें कि अगर भारत को समझना है तो ज़्या भारत को विदेशी भाषाओं के माध्यम से समझ सकेंगे। अपने प्राचीन गौरव का एक विश्वास मन में जगाते हुए उस

राष्ट्रभाव को अगर पुष्ट करना है तो यहां की भाषाओं में लिखे हुए ग्रन्थों को समझना ही पड़ेगा। इसलिए हिन्दी, संस्कृत का आग्रह साज़्प्रदायिक कैसे हो जाता है। यह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बलवान करने वाली बात है कि यहां का अध्ययन यहां की भाषाओं में होना चाहिए। अंग्रेजी हमें सीखनी चाहिए, ज़्योंकि हमें दूसरे का विचार भी समझना चाहिए। इजरायल भी भारत के साथ स्वतंत्र हुआ था। दुनिया की कई जगहों से लोग अपनी सज़्पदा छोड़कर इजरायल गए थे। इजरायल में रेगिस्तान है, पानी की कमी है, जमीन की कमी है। शत्रुओं से घिरा देश होने के बाद भी दो-दो हजार, ढाई-ढाई हजार वर्षों से विदेशी जमीन पर रहे और वहां की भाषा और सज़्यता को अपनाए हुए लोग जैसे ही इजरायल अस्तित्व में आया सभी अपनी संपदा छोड़ कर इजरायल पहुंचे और सभी ज्यूस ने पहला निर्णय यह लिया कि अपना कारोबार-व्यवसाय हिज़्रु भाषा में करेंगे। आज

50-60 साल में उन्होंने अपनी हिज़्रु भाषा को समृद्ध स्थान दिलाया है। अभी एक परिचित मित्र इजरायल गए। उन्होंने बताया कि बहुत कठिनाई होती है, ज़्योंकि वह अंग्रेजी में बोलते हैं और जवाब हिज़्रु में आता है। तब उन्होंने ठाना कि संवाद के लिए हिज़्रु सीखना पड़ेगा। उन्होंने ज़्लास ली, ज़्योंकि उसके बगैर वह रह नहीं सकते थे। यह असहिष्णुता नहीं है। ये राष्ट्रीय अस्मिता का प्रश्न है। इसको ही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद कहते हैं।

भारत का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद दृष्टिकोण का संदेश देने वाला है। संस्कृति ज़्या है? इसको भी समझने की आवश्यकता है। जब हम राष्ट्रवाद की बात करते हैं तो इसका संबंध संस्कृति से आता है। भारतीय और विदेशी संस्कृति में अन्तर है। भारतीय संस्कृति व्यज़्ति को स्थिर करती है। भारत की संस्कृति दुनिया के साथ चलने के लिए लचीला होने की सीख देती है। भारतीय संस्कृति बहुत कम विस्तारवादी है, बहुत कम साम्राज्यवादी है। पश्चिमी संस्कृति अस्थिर है। वह आक्रामक बनाती है। दूसरों के बारे में असहिष्णु, विस्तारवादी बनाती है। दुनिया का इतिहास देखने पर पता चलता है कि पश्चिमी संस्कृति राजनैतिक राष्ट्रवाद की तरफ ले जाती है। जबकि भारतीय संस्कृति सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की ओर ले जाती है। आज पूरी दुनिया में अस्थिरता का कारण ज़्या है? जगह-जगह हिंसा,साज़्प्रदायिक तनाव, जाति का छोटे-छोटे समूह में विभाजन। भारत के बाहर भी संकीर्ण सोच विकसित हुई है। प्रश्न ये है कि ज़्या सारी दुनिया धर्म रहित होनी चाहिए। सारा विश्व राष्ट्र रहित होने का नया विचार चला है। हमें समझना चाहिए कि धर्महीनता मनुष्य को पशुता की तरफ ले जाती है। इसलिए यह अस्वाभाविक है। इसके मूल में जाने पर पता चलता है कि इसका परिणाम यह होगा कि जो सामर्थ्य, सज़्पन्न, शज़्तिशाली होगा उसकी बात चलेगी। ज़्योंकि धर्म, राष्ट्र, सीमा नहीं होने से जो शक्तिशाली है, उसका वर्चस्व है। यह दुनिया में अपना वर्चस्व स्थापित करने का राक्षसी विचार है।

इसलिए पंडित दीनदयालजी ने कहा कि सांस्कृतिक राष्ट्रीय एकात्मता का आग्रह रखना चाहिए। राजनैतिक राष्ट्रवाद से हटकर हम सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बलवान करें और राष्ट्र की एकात्मता बनी रहे इसका आग्रह करें। दीनदयालजी ने चिति शज़्द का प्रयोग किया है। भारत की चिति ज़्या है? भारत का मानस ज़्या है? भारत का मानस

यही है जो मैजिनी, यहां के ऋषि-मुनियों ने कहा था। दीनदयाल जी ने कहा कि हम विश्व के कल्याण की कामना करने वाले राष्ट्र के हैं। श्रेष्ठ भाव का पोषण करना ही पड़ेगा। हमने देखा कि अनुकूल बातें होती गई तो भारत का उत्थान हुआ। जब-जब इस चिति के प्रतिकूल वातावरण बनता गया तब-तब भारत का पतन हुआ है। इसलिए चिति का प्रतिकूलता, अनुकूलता का परिणाम भारत के उत्थान और पतन के साथ जुड़ा हुआ है। इसलिए चिति को जागृत रखने का भाव बनाए रखना है। इस चिति को समझकर, अपनी आत्मा को समझकर, अपनी इस भूमिका को समझकर जो समाज खड़ा होता है उसके लिए विराट शज़्द का प्रयोग किया गया, इसलिए चिति और विराट को समझना होगा। हम अनुभव कर सकते हैं कि कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक चारों दिशाओं में अपना समाज है। उस समाज की कई प्रकार की मान्यताएं हैं। वेशभूषा, खानपान, रहन-सहन, भाषा एक नहीं है। एकरूपता है तो जीवन मूल्यों को लेकर। भारत सांस्कृतिक दृष्टि से एक राष्ट्र है। इसी को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद कहते हैं। हम कहते हैं कि कभी अफगानिस्तान के गंधार से गांधारी आई थी। हम कहते हैं कि लंका में राम गए थे। वह लंका में युद्ध के लिए गए थे। यदि वह लंका को जीतने जाते तो अपना राज्य स्थापित करके आते। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। कारण, लंका भी इसी भारत का हिस्सा है। राजनैतिक दृष्टि से पाकिस्तान, बांग्लादेश अलग हैं। लेकिन, सांस्कृतिक दृष्टि से पाकिस्तान के कल्चरल में हिस्ट्री आफ पाकिस्तान लिखनी पड़ी है। यह हमें गौरान्वित करता है।

आज भी तीर्थक्षेत्र का जब कोई नाम लेता है तो ननकाना साहिब का नाम आएगा। उनमें कराची के आस-पास रहने वाली हिंगलाज माता का नाम आएगा। बांग्लादेश के ढाकेश्वरी देवी का नाम आएगा। वहां के लोगों को अजमेर शरीफ दरगाह अपना लगता है। ज़्या यह खत्म हो सकता है। इस सांस्कृतिक बातों के आधार पर ही अखण्ड भारत की बात की जाती है। अखण्ड भारत की बात सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर की जाती है। इस चिति को समझकर, उसके मूलभाव को समझकर विराट शज़्द को समझने की जरूरत है। इसके लिए हमें राजनैतिक राष्ट्रवाद की उपेक्षा करते हुए चलना पड़ेगा। कई बार मैं सोचता हूं कि भारत में इतने देवी-देवता होने के बाद भी भारत माता

की जय कहां से आ गया। फिर हम देखते हैं कि 1857 के पहले शायद ये नारा नहीं था। देश के अन्दर जब स्वतंत्रता आन्दोलन शुरू हुआ, उस आन्दोलन में राजनैतिक राष्ट्रवाद को समाप्त करते हुए भारत को खड़ा करने के लिए ऐसा किया गया। उस समय स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि चार सौ साल तक सारे देवी-देवताओं को कपड़े में बांधकर रख दो। हमारा एक ही देवता है और वह भारत माता है, इसी की पूजा करो। यहां से भारत माता जी जय का उदय हुआ। भारत माता की जय का यह भाव जितना पुष्ट होता जाएगा उतना सांस्कृतिक राष्ट्रवाद जागृत होगा। बंकिमचन्द्र चटर्जी ने जब वन्दे मातरम लिखा। आनंन्द मठ में जब वन्देमातरम आया। किस मातृभूमि को वन्दना करने की बात कही गई।

भारतभूमि की, यहां की संस्कृति की, यहां के मूल्यों की। इसलिए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बलवान करने के लिए सही दृष्टिकोण विकसित करना होगा। कभी कभी लगता है कि लोग भारत माता की जय का विरोध ज़्यों करते हैं? यह विरोध वही लोग करते हैं जो इस भूमि को मां नहीं मानते। विरोध वही करते हैं जिन्होंने इस भूमि को भोगभूमि माना लिया है। विरोध वही करते हैं जिनके मन में आक्रमकता है। ऐसी सोच रखने वाले ही भारत माता की जय का विरोध करते हैं। इसलिए मैं फिर कहना चाहूंगा कि हम परमवैभव को प्राप्त होने की बात करते हैं तो आज की आवश्यकता है कि हर पीढ़ी में जन्म लिए हुए बालक में श्रेष्ठ जीवन और परमवैभव की आकांक्षा का बीजारोपण करते रहना पड़ेगा। हमें समझना होगा कि गुरूगोविन्द सिंह जी ने अपने स्वयं के लिए कुछ नहीं किया। इसलिए दीनदयालजी के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का संकेत ज़्या है? यही संकेत है कि हमें इस भाव को सशज़्त करना पड़ेगा और इस भाव को जागृत रखने का संकल्प लेकर चलने वाली पीढ़ी खड़ी करनी होगी।

(राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह माननीय सुरेश जोशी (भय्याजी) द्वारा अजमेर, जयपुर, कोलकता में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित अलग-अलग कार्यक्रम में मार्गदर्शन किया गया। इन्दौर में 14 अगस्त, 2017 को भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद विषय पर आयोजित गोष्ठी में भय्याजी का मार्गदर्शन प्रस्तुत किया जा रहा है।)

कला में अध्यात्म और धर्म का भाव

सिविलाइजेशन, संस्कृति, सज़्यता में ज़्या तालमेल है, इसको लेकर बहुत सारे लोगों में भ्रम हो जाता है। वास्तव में हमारी कला सज़्यता के साथ-साथ संस्कृति को लेकर चलती है। सज़्यता ज़्या है? इसके केन्द्र में विज्ञान, अर्थ और बाजार है। विज्ञान नए-नए आविष्कार करता है, व्यापारी उसके अनुसार सामान लेकर बाजार में आता है। नए सामान की बाजार में खूब खरीदी होती है। समाज के उपयोग से सज़्यता आगे बढ़ती है। संस्कृति के केन्द्र में अध्यात्म होता है। भारतीय संस्कृति अध्यात्म को लेकर चलती है। सज़्यता उत्पादन को बढ़ाती है। अविष्कार को बढ़ावा देती है। लेकिन संस्कृति हमें उसके उपयोग का तरीका बताती है। मतलब, किसी वस्तु को किस तरह से करना चाहिए यह हमें संस्कृति से मिलता है। सिविलाइजेशन आधारभूमि नहीं है। कला इस संस्कृति के अध्यात्मिक भाव को लेकर चलती है। कला भाव को प्रगट करती है। इसमें भाव संस्कृति तय करती है। अब प्रश्न उठता है कि कला कहां से आई। असल में कला की उत्पति आनंद से हुई है। आनंद भौतिक नहीं है। मनुष्य जब धीरे-धीरे एकाकार होता जाता है तब आनंद का रस बढ़ता जाता है। जैसे कलाकार जब अपनी साधना को जितना आयाम देता जाता है, वह आनंद में डूबता जाता है। कला का संबंध भावनाओं, संवेदनाओं से है। वास्तव में कला अभिव्यज़्ति का एक रूप भी है। कला में एक और गुण होता है अहम का भाव खत्म करने का। श्रेष्ठ कलाकार तब बनता है जब अंदर का अहम भाव समाप्त हो जाता है और कला का भाव पैदा होने लगता है। भौतिक उन्नति के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति के लिए कला बहुत जरूरी है। समाज में आनंद की प्रणाली विकसित होनी चाहिए। कला में नाट्य का बहुत महत्व है। ज़्योंकि उसकी भाषा मधुर होती है। नाट्य सब दृष्टि से परिवर्तन का अच्छा साधन बन जाता

है। नाट्य लोकमन, लोकमत को ध्यान में रखता है। लोकधर्म को ध्यान में रखकर लोकसिद्ध को प्राप्त करना ही नाट्य का उदेश्य होता है। मतलब, समाज की दशा को देखकर कला आगे बढ़ती है। इसमें कलाकार की कल्पनाशीलता बहुत व्यापक और अदभुत होती है। कलाकार जो भूमिका मिलती है, उसमें एकाकार करता है। इससे उसके अंदर का मैं समाप्त हो जाता है। वह उस भूमिका में आ जाता है और वही करता है जो भूमिका में होता है। कला आध्यत्मिक साधना है। कहा जाता है कि छत्तीस तत्वों में एक तत्व कला है। शिव के पास भी कला थी। उनकी कला में आनंद था। मेरे कहने का आशय ये है कि जीवन में काम हमेशा रहेगा, लेकिन उसे आनंद में बदलना ही कला है। कला वैदिक काल से है। देश का सारा साहित्य काव्य में आया है। हमें बारहवीं शताज़्दी से लेकर अठारहवीं शताज़्दी तक का कालखंड देखना चाहिए। भज़्तिकाल के सभी संतों के साहित्य में कला थी। इसलिए भारत में जब भी कोई समस्या आई कला एकदम से सामने आई और उसका समाधान दिया। छोटे–छोटे नाटक, छोटी–छोटी कविताएं, छोटे–छोटे प्रसंग अपने देश में हजारों साल से चले आ रहे हैं। कलाकार एकाकार होकर जब तक अपनी कल्पना को लोगों के मन में नहीं उतार देता है खुद को सफल नहीं मानता। भारतीय और पाश्चात कला के दृष्टिकोण में अंतर है। पाश्चात कला में लोग बाहर बैठकर अनुमान लगाते हैं, जबकि भारतीय कला में भावनाओं को देखकर निर्णय लिया जाता है। जैसे कोई विपरीत परिस्थिति आती है, कला अपना मार्ग बदल देती है। तात्पर्य ये है कि कला विशेष प्रकार का रूप लेकर चलती है। कला विशेष प्रकार के युग में विशेष प्रकार का भाव लेकर चलती है। कला भारतीय मन में अध्यात्म लेकर चलती है। पाश्चात जगत की कला अध्यात्म से बहुत दूर रहती है। अध्यात्म दिखाई नहीं देता, बल्कि वह शज़्द और साहित्य में होता है। कला केवल भाव भी नहीं है, बल्कि धर्म की आत्मा है। कला की आत्मा अध्यात्म है। ज्ञान और आनंद को लेकर चलते हुए सारी सृष्टि का जो लोकमंगल देखे और उसी में रत रहे वही कला है, वही कला का दर्शन है।

(राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह–सरकार्यवाह माननीय कृष्ण गोपालजी ने 6 जून,2017 को तीन मूर्ति सभागार में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कलाओं में भारतीय दर्शन विषय पर व्याज़्यानमाला में मार्गदर्शन किया।)

नानाजी के सम्मान में डाक टिकट जारी

नानाजी की पहल से मोदीजी प्रेरित

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के भारत के नवनिर्माण की अवधारणा के पीछे उदेश्य गांवों को शहर के समकक्ष बनाना है। इसके लिए केन्द्र सरकार उस दिशा में तेजी से काम कर रही है, जिससे 2022 तक न्यू इंडिया का सपना साकार किया जा सके। राष्ट्रऋषि नानाजी के ग्रामीण जीवन में बदलाव लाने की शुरू की गई पहल को श्री मोदी प्रेरक मानते हैं। उन्होंने कहा कि नानाजी ने गांव में जाकर खुद प्रयोग किए। अपने जीवनकाल में उन्होंने ग्राम विकास का संकल्प लेकर उसमें अपने आप को झोंक दिया। नानाजी अपने संकल्प को साकार करने के लिए जीवनभर जुटे रहे। उन्होंने नानाजी जन्म शताज़्दी कार्यक्रम में सज़्पूर्ण हिंदुस्तान से ग्रामोदय का सपना साकार करने का संकल्प लेने का आह्वान किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिल्ली स्थित आईएआरआई पूसा में नानाजी देशमुख के जन्म शताज़्दी समारोह का उद्घाटन किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री द्वारा नानाजी देशमुख के सज़्मान में डाक टिकट जारी किया गया। दीनदयाल शोध संस्थान और कृषि मंत्रालय द्वारा

नानाजी जन्म शताज़्दी समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया था। जिसमें मुज़्यअतिथि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी थे। उन्होंने कहा कि प्रत्येक ग्रामवासी यदि जीवन में बदलाव लाने का संकल्प लेकर चले तो 2022 में आजादी के 75 साल पूरे होने पर हम ग्रामोदय के सपने को साकार कर सकते हैं। श्री मोदी ने कहा कि नानाजी को देश ज्यादा जानता नहीं था। लेकिन आपातकाल के समय जब जयप्रकाश जी ने देश में पनप रहे भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन किया, तब जयप्रकाशजी पर बहुत बड़ा हमला हुआ और उस समय उनके बगल में नानाजी देशमुख खड़े थे। नानाजी ने अपने हाथों पर वो मृत्यु स्वरूप प्रहार को झेल लिया। उनके हाथ की हड्डिया टूट गई लेकिन जयप्रकाशजी को चोट से उन्होंने बचा लिया और वो एक ऐसी घटना थी जिससे देश का ध्यान नानाजी की तरफ गया। नानाजी जीवनभर देश के लिए जिए। उन्होंने दीनदयाल शोध संस्थान बनाकर देश के लिए जीना सीखो, देश के लिए कुछ करके रहो के मंत्र के साथ युवा दंपतियों को निमंत्रित किया। सैकड़ों की तादाद में ऐसे युवा दंपति आगे आए और उनको उन्होंने ग्राम विकास के काम में लगाया। जब मुरारजी भाई प्रधानमंत्री थे। देश में जनता पार्टी का शासन था। नानाजी को मंत्रिपरिषद के लिए आमंत्रित किया गया। तब नानाजी ने विनम्रता पूर्वक मंत्रिपरिषद में शामिल होने से इनकार किया और 60 साल की उम्र में स्वयं को राजनीति से अलग कर लिया। करीब साढ़े तीन दशक तक उन्होंने चित्रकूट, गोंडा को केन्द्र में रखकर ग्रामीण विकास का काम किया।

मुझे खुशी है कि नानाजी के जन्मशती के अवसर पर भारत सरकार इन महापुरूषों के सपनों के आधार पर महात्मा गांधी द्वारा दिखाए गए रास्ते पर ग्रामीण विकास की दिशा में आगे बढ़ने का काम कर रही है। गांव कैसे आत्मनिर्भर बने, हमारे गांव गरीबी से कैसे मुज़्त हों, गांव बीमारी से कैसे मुज़्त हों, गांव से जातिवाद का जहर कैसे खत्म किया जाय और एक समृद्ध गांव का निर्माण करने की दिशा में तेजी से काम किया जा रहा है। भारत सरकार गांव के कल्याण के लिए संकल्पित है और गांव के विकास को जन भागीदारी से आगे बढ़ाने की दिशा में अनेक कदम उठा रही है। यहां पर देश के ग्रामीण जीवन पर परिवर्तन के लिए, ग्रामीण जीवन के लिए योगदान देने को लेकर,

ग्रामीण कृषि जीवन का ग्रामीण अर्थ व्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव पर लगातार चिंतन किया गया है। मैं सभी को विश्वास दिलाता हूं कि इस मसले पर जो विचार मंथन किया गया है और जो बिंदु छांटे गए हैं, भारत सरकार उस पर गंभीरता से विचार करेगी। मैं, जानता हूं कि यहां देश के हर कोने से लोग आए हैं। अलग-अलग इलाके की अलग-अलग प्रकृति होती है, अलग समस्या होती है। बाहर से थोपी गई चीज से ग्रामीणजनों का जीवन संघर्षमय हो जाता है। इसलिए हमारा प्रयास है कि गांव की अपनी शज़्ति, उसके अपने सामर्थ के अनुसार काम किया जाय। हमें यह समझना होगा कि विकास और अच्छे काम की योजना से

काम नहीं चलेगा। बल्कि इसके लिए समयसीमा तय की जानी चाहिए कि संबंधित योजना समय पर पूरी हो। इसके लिए ग्रामीण क्षेत्र में शत-प्रतिशत लाभार्थी तक योजना का लाभ पहुंच रहा है या नहीं इसकी चिंता भी की जानी चाहिए। मुझे विश्वास है कि यदि निर्धारित समयसीमा में हम काम करेंगे तो 70 साल में ग्रामीण विकास की जो गति रही है, 2022 में जब हम आजादी के 75वीं सालगिरह मनाएंगे तब हमारी विकास की गति इतनी तेज होगी कि 70 साल से जो सपने संजोय कर ग्रामीण बैठा है, उसकी जिदंगी में बदलाव लाया जा सकता है। आज गांव का नागरिक भी शहर की तरह सुविधा चाहता है। मैं भी मानता हूं कि जो सुविधा शहर को उपलज़्ध है वह गांव में भी उपलज़्ध होनी चाहिए। शहर की तरह गांव में भी बिजली जगमगानी चाहिए। अगर शहर का बच्चा आधुनिक कज़्प्यूटर के द्वारा टेज़्नोलॉजी की शिक्षा प्राप्त कर रहा है तो गांव के बच्चे को भी उसी टेज़्नोलॉजी द्वारा प्रशिक्षित होने का अवसर मिलना चाहिए। महात्मा गांधीजी ने जो सपना देखा था, पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी ने जो चिंतन किया था, नानाजी और जयप्रकाशजी ने उन विचारों को लेकर जिया था इन्हीं आदर्श धारा को लेते हुए हम लोगों का भी यह प्रयास है कि हम ग्रामीण जीवन में बदलाव लाने के लिए महत्वपूर्ण दिशा में आगे बढ़े।

देश में संसाधनों की कमी नहीं है। जरूरत आखिरी छोर तक उसे पहुंचाने की है। कमी सुशासन की है। जिन राज्यों में निर्धारित समय पर काम पूरा किया जा रहा है, वहां बदलाव दिखने लगा है। डिजिटल डेशबोर्ड व्यवस्था शुरू की गई है, इसमें पूरी व्यवस्था की आसानी से निगरानी हो सकेगी। मेरा मानना है कि भारत सरकार के विजन, राज्य सरकार की योजनाएं और स्थानीय इकाईयां सभी विकास के एकसूत्र में जुड़ जाएंगी को इच्छित परिणाम आने लगेंगे। इसलिए भारत सरकार द्वारा जनप्रतिनिधियों को जोड़ने का काम किया जा रहा है। अब ग्रामीण जीवन में चीजें थोपी नहीं जाती हैं। इसलिए विकास कार्य में गति लाने की दिशा में बहुत बड़ी सफलता मिली है। लोकतंत्र की सफलता तब होती है जब जनभागीदारी से देश चले। जनभागीदारी से गांव की विकास यात्रा चले, जनभागीदारी से नगर की विकास यात्रा चले और इसलिए जनता के साथ सरकार का संवाद अनिवार्य होता है।

जीवन में संवाद होना चाहिए। यह कार्य ऊपर से नीचे होना चाहिए। इससे योजनाओं के क्रियांवयन में सहायता मिलती है। इसलिए मोबाइल एप से गांव का व्यक्ति अपनी बात ऊपर तक पहुंचा सकता है। इससे काम में लापरवाही करने वाले दबाव में आ जाते हैं। भारत में कृषि और पशुपालन का ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है। इसलिए पशुपालन, खेती, हथकरघा, हस्तकला से जुड़े लोगों के लिए हम अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में काम कर रहे हैं। हम 2022 में भारत की आजादी के 75 साल में देश के किसानों की आय दोगुना करने का संकल्प ले करके चल रहे हैं। एक तरफ किसान की लागत कम करना है। दूसरी तरफ उसके उत्पादन को बढ़ाना है। इन दोनों चीजों के लिए हमें टेज़्नोलॉजी की मदद लेनी होगी। हमें आधुनिकता की तरफ जाना होगा। पशुपालन में पशु की संज़्या भले कम हो, लेकिन दूध का उत्पादन ज्यादा हो यह प्रयास किया जा रहा है। प्रति पशु दूध का उत्पादन जितना तेजी से बढ़ेगा, ग्रामीण अर्थ जीवन उसी गति से आगे बढ़ेगा। दुनिया में शहद की बहुत मांग बढ़ रही है। हम गांवों में मधुमज़्खी पालन को बढ़ावा दें, किसान पशुपालन के साथ जुड़ जाए, तो बड़ा परिवर्तन आएगा। इस चीजों के लिए भारत दुनिया का बहुत बड़ा बाजार है। इसमें पांच से दस साल मेहनत करने की जरूरत है, इसके बाद परिणाम आना शुरू हो जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता अभियान बहुत प्रभावी तरीके से चला है। ग्रामीणों ने गंदगी के बीच जीवन नहीं बिताने का संकल्प लेकर काम किया और उससे ऐसी जागरूकता आई है कि देश के हर छोटे से छोटे गांव भी सफाई में अव्वल हो गए हैं। इसके साथ गांवों में शौचालय बनाने का काम तेज हुआ है। जो लोग इससे

पहले परहेज करके चलते थे, उन्होंने इसका नाम इज्जतघर रख लिया है। मैं उन गांवों को ह्रदय से बधाई देता हूं, जिन्होंने घर की इज्जत के लिए एक बहुत बड़ा कदम उठाया है। उन गांव वासियों को नमन करता हूं कि जिन्होंने इस

महत्वपूर्ण काम को किया है। स्वच्छता आज गांव का स्वभाव बन रहा है। गांव भी इस जिज़्मेदारी को लेने लगा है। आजादी के 70 साल बाद भी देश के 18 हजार गांव ऐसे हैं, जहां के लोग 18वीं शताज़्दी में जीते हैं। उन्होंने बिजली देखी ही नहीं है। हमने बीड़ा उठाया कि एक हजार दिन में 18 हजार गांव में बिजली पहुंचाएंगे और मुझे खुशी है कि

राज्य सरकारों ने भी उसमें हाथ बंटाया भारत सरकार ने भी उसमें तेजी लाई और आज बहुत तेजी से 18 हजार गांव के उस लक्ष्य को पूरा करने की दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं। अब हमारा सपना है गांव हो या शहर 24 घंटे बिजली मिलनी चाहिए। नानाजी की जन्मशती के दिन देशभर के ग्रामीण जीवन के लोग आए हैं। भारत सरकार के सभी संबंधित विभाग ग्रामीण जीवन में बदलाव लाने का संकल्प लेकर काम कर रहे हैं। गांव के लोग भी ये संकल्प लेकर चले कि वह गांव को देंगे और गांव देश को देगा तो 2022 तक देश की तस्वीर बदल जाएगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा ग्रामीणों की सेवा और सशक्तिकरण के लिए नागरिक केन्द्रित मोबाइल एप ग्राम संवाद का भी शुभारज़्भ किया गया। जिसमें नागरिक विभिन्न ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के बारे में ग्राम पंचायत स्तर पर एकल विंडो पर जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इस एप में ग्रामीण विकास मंत्रालय के सात कार्यक्रमों को शामिल किया गया है। प्रधानमंत्री द्वारा 20 ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान भवनों (आरएसईटीआई) तथा आईएआरआई में प्लान्ट फिनोमिज़्स सुविधा का डिजिटल पद्धति से उद्घाटन भी किया गया। इसमें फिनोमिज़्स केन्द्र का नाम श्रद्धेय नानाजी के नाम से किया गया है। इसके अलावा ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान भवनों में दस नानाजी तथा दस जेपी के नाम पर रखा गया।

पूसा संस्थान में ग्रामीण भारत को चित्रित करती प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने उस प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्होंने प्रदर्शनी में स्वयंसेवी संस्थान के लोगों से बातचीत भी की। ग्रामीण जनजीवन, वहां उत्पादित होनी वाली वस्तुओं, वनक्षेत्र में पाई जाने वाली वस्तुओं का ग्रामीण विकास में कैसे उपयोग हो सकता है, इसका बहुत संजीदा तरीके से प्रदर्शन किया गया था। पशुपालन की पद्धति, किस तरह के पशुपालन से पशुओं की संज़्या बढ़ाई जा सकती है और उसे आमदनी का जरिया भी बनाया जा सकता है, इसके कई उदाहरण प्रदर्शित किए गए थे। श्री मोदी ने सभी लोगों से कहा कि वह समय निकालकर एकबार प्रदर्शनी जरूर देखें। उन्होंने कहा कि आप कितने ही व्यस्त ज़्यों न हो, जाने की कितनी ही जल्दी ज़्यों न हो, इस प्रदर्शनी की हर चीज को बारीकी से देखिए। आप यह जानने का प्रयास करिए कि यहां जो प्रदर्शित किया गया है, उसमें ज़्या आपके गांव में लागू हो सकता है। हर चीज को देखिए और अच्छी चीजों को अपने गांव लेकर जाइए।

Deendayal
y Centena
ions

विवेकानंद ने दिया था भारत में औद्योगिक विकास का मंत्र

स्वामी विवेकानंद का शिकागो भाषण, जिसमें दुनियाभर में भारत का मस्तक ऊंचा हुआ था। 11 सितम्बर, 2017 को उसके 125 वर्ष पूर्ण हुए। वह पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं नानाजी देशमुख जन्मशताब्दी वर्ष था। इस वैचारिक संगम वाले दिन को दीनदयाल शोध संस्थान और संस्कृत मंत्रालय द्वारा विज्ञान भवन में युवा भारत, नया भारत विषय पर सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदीजी ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

जब हमारे चारों तरफ नकारात्मक वातावरण हो। उस समय जब बोलने की बारी आती है, तब हम कई बार सोचते हैं कि ज़्या बोलें, हमें अपनी बात रखने में भय लगता है। कई बार सोचते हैं कि कहीं कुछ गलत अर्थ न निकल जाय। ऐसे दबाव में इस महापुरूष में वो कौन सी ताकत थी कि कभी किसी ने अनुभव नहीं किया। भीतर की ज्वाला, भीतर की उमंग, भीतर का आत्मविश्वास इस धरती की ताकत को भली भांति जानने वाला इंसान विश्व को सामर्थ्य देने, सही दिशा देने, समस्याओं के समाधान का रास्ता दिखाने का सफल प्रयास करता है। विश्व को पता तक नहीं था लेडीज एडं जेन्टलमैन के सिवाय भी कुछ और सज़्बोधन हो सकता है। जिस समय ब्रदर एडं सिस्टर ऑफ अमरीका यह दो शज़्द निकले पूरे सभागार में तालियां गूंज उठी। उस दो शज़्द में उसने भारत की ताकत का परिचय करा दिया था। वह 11 सितज़्बर का दिन था। जिस व्यज़्ति ने मां भारती की पदयात्रा करने के बाद मां भारती को अपने में संजोया था। उत्तर से दक्षिण पूर्व और पश्चिम तक की हर भाषा को हर बोली को आत्मसात किया था। भारत मां को जिसने अपने भीतर पाया था। ऐसा महापुरूष पल दो पल में पूरे विश्व को अपना बना लेता है। पूरे विश्व को अपने अंदर समाहित कर लेता है। हजारों साल की विकसित हुई भिन्न-भिन्न मानव संस्कृति को वह अपने में समेट करके विश्व को अपनत्व की पहचान देकर विश्व को जीत लेता है। हमारे लिए 11 सितज़्बर विश्व विजयी दिवस था। उस विश्व विजयी दिवस से 21वीं सदी का प्रारंभ हुआ। मानव के विनाश का मार्ग, संहार का मार्ग वाले अमरीका की धरती पर प्रेम और अपनत्व का संदेश दिया जाता है। उसी अमरीका की धरती पर उस संदेश को भुला देने का परिणाम था कि मानव के संहार के रास्ते का विकृत रूप विश्व को हिला दिया था। तब भारत से निकली हुई आवाज को इतिहास में जगह मिल पायी। इसी से विवेकानंद जी को अलग रूप से समझने की आवश्यकता मुझे लगती है। विवेकानंद जी को आप बारीकी से देखेंगे तो पाएंगे कि वह जहां गए वहां भारत को बेहतर तरीके से प्रस्तुत किया। भारत की महान परज़्पराओं, महान चिंतन को रखते हुए वह कभी थकते नहीं थे। विश्व में जहां गए, जहां भी बात करने का मौका मिला वहां बड़े विश्वास के साथ, बड़े गौरव के साथ भारत का महिमामंडन, भारत की महान परंपराओं के

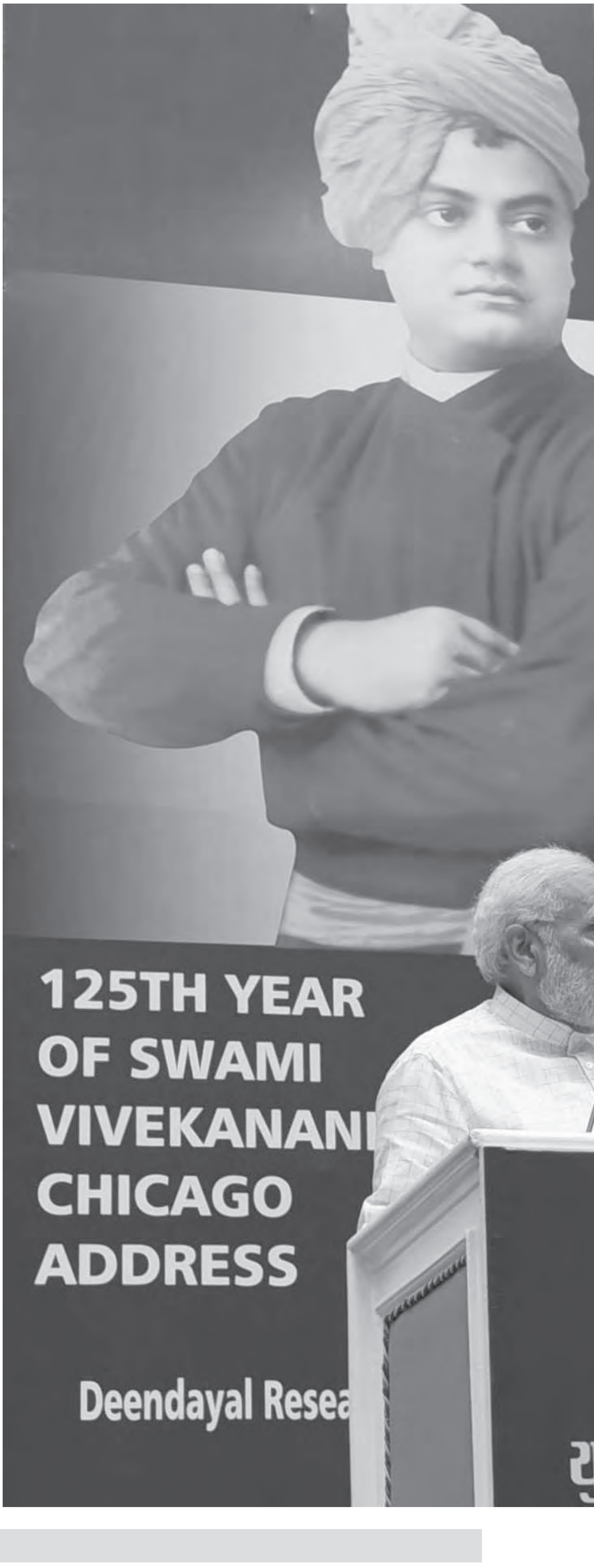

महान चिंतन को व्यज़्त करने में वो कभी थकते नहीं थे। विवेकानंद का दूसरा रूप भारत में दिखा। वह जब भारत के अंदर बात रखते थे तो देश की बुराईयों को लगातार कोसते थे। भारतीय लोगों की दुर्बलताओं पर सीधा प्रहार करते थे। वह उस समय जिस भाषा का प्रयोग करते थे उस भाषा का प्रयोग हम अगर आज करें तो लोगों को आश्चर्य होगा कि हम ज़्या बोल रहे हैं। वो समाज के हर बुराईयों के खिलाफ आवाज उठाते थे। उस समय के समाज की कल्पना कीजिए जब पूजा पद्धति को बहुत माना जाता था। ऐसे समय में 30 साल का नौजवान खड़ा होकर कह दे कि पूजा-पाठ करने और मंदिर में बैठे रहने से कोई भगवान मिलने वाला नहीं है। जन सेवा को प्रभु सेवा मानों, जनता जनार्दन गरीबों की सेवा करो, तब जाकर प्रभु प्राप्त होगा। उनके अंदर कितनी बड़ी ताकत थी। वह संत परंपरा से थे, लेकिन जीवन में वह कभी गुरू खोजने नहीं निकले। यह हमारे सीखने और समझने का विषय है। वह सत्य की तलाश में थे। महात्मा गांधी भी जीवनभर सत्य की तलाश से जुटे रहे। उनके अंदर वो कौन सा लौहतत्व होगा, वह कौन सी ऊर्जा होगी जिसमें यह सामर्थ्य पैदा हुआ। इसलिए वर्तमान समाज में जो बुराइयां हैं, ज़्या उसके खिलाफ हम नहीं लड़ेंगे। ज़्या उसे हम स्वीकार कर लेंगे। अमरीका की धरती पर विवेकानंद जी के ब्रदर और सिस्टर सज़्बोधन पर हम खुश हो उठते हैं, लेकिन मैं नौजवानों से विशेष रूप से कहना चाहूंगा ज़्या हम नारी का सज़्मान करते हैं? हम लड़कियों को आदर भाव से देखते हैं? यदि यह भाव हमारे मन में नहीं है तो हमें ताली बजाने का हक नहीं है। हमें 50 बार सोचना है। विवेकानंद जी कहते थे जनसेवा प्रभु सेवा। अब देखिए एक इंसान 30 साल की उम्र में पूरे विश्व में ऐसा जय-जयकार करके आया है। उस गुलामी के कालखंड में दो व्यज़्तित्व ने भारत में एक नई चेतना, नई ऊर्जा प्रकट की थी। रविंद्रनाथ टैगोर को जब नॉबेल प्राइज मिला और जब स्वामी विवेकानंद जी का शिकागो में सज़्बोधन हुआ। दोनों बंगाल की संतान थे। कितना गर्व होता है जब हम दुनिया को बताते हैं कि हमारे रविंद्रनाथ टैगोर ने भारत, श्रीलंका और बांग्लादेश का राष्ट्रगीत बनाया था। दुनिया में भारत सबसे युवा देश है। 800 मिलियन लोग इस देश में उस उम्र के हैं जो उम्र विवेकानंदजी की शिकागो में भाषण देने के दौरान थी। जिस देश की 65 प्रतिशत जनसंज़्या युवा हो उसके लिए

विवेकानंद से बड़ी प्रेरणा ज़्या हो सकती है। वह केवल उपदेश देने वाले नहीं रहे। उन्होंने आइडिया को आइडियालिज्म में परिवर्तित किया। आज से करीब 120 साल पहले इस महापुरूष ने रामकृष्ण मिशन को जन्म दिया। उन्होंने संस्था की नींव कैसे मजबूत बनाई होगी, जो आज भी उतनी ही ताकत से खड़ी है।

मेरा सौभाग्य रहा है कि उस महान परंपरा में कुछ पल आचमन लेने का अवसर मिला। जब विवेकानंद जी के भाषण की शताज़्दी थी, उस दिन मुझे शिकागो जाने का सौभाग्य मिला था। उस सभागार में जाने का अवसर मिला था और उस शताज़्दी समारोह में मुझे शामिल होने का सौभाग्य मिला था।

मैं उस विश्वभाव को महसूस करता हूं। ज़्या कभी दुनिया में किसी ने सोचा है कि किसी भाषण की वर्षगांठ भी मनाई जाती है। हम इसे इसलिए मनाते हैं, ज़्योंकि सवा सौ साल के बाद भी उस समय कहे गए शज़्द आज भी जीवित हैं। वह हमें जागृत करने का सामर्थ्य रखते हैं। सभागार में वंदे मातरम् सुनकर भारत के प्रति भज़्ति का भाव जागता है। मैं पूरे हिंदुस्तान से पूछता हूं ज़्या हमें वंदे मातरम् कहने का हक है? भारत में वंदे मातरम् कहने का पहला हक सफाई करने वालों को है, ज़्योंकि हम भारत मां पर जो कूड़ा डालते हैं, वह उसे साफ करते हैं। गंगा के प्रति हमारे मन में बहुत श्रद्धा है, लेकिन उसे साफ रखने में ज़्या हम सहयोग करते हैं। यदि विवेकानंदजी होते तो ज़्या वह ये सब सहन कर लेते। हम सफाई भले न करें, लेकिन गंदगी करने का हक हमें नहीं है। मुझे याद है एक बार मैंने बोला था कि पहले शौचालय फिर देवालय। उस समय बहुत खराब प्रतिक्रिया हुई थी। लेकिन आज मुझे खुशी है कि देश में ऐसी बेटियां हैं जो शौचालय नहीं, तो शादी नहीं करेंगी ऐसा तय कर लिया। हम समयानुकुल परिवर्तनकारी लोग हैं। हमारे अंदर की शज़्ति हमारी बुराईयों के खिलाफ लड़ाई लड़ने का नेतृत्व करती है। स्वामी विवेकानंद जी का जब हम स्मरण करते हैं तब शज़्दों का भंडार नहीं था। वो एक तपस्वी की वाणी थी। वरना हिन्दुस्तान की पहचान सांप-सपेरों तथा जादू-टोना वाले देश की थी। एकादशी को ज़्या खाना है और पूर्णिमा को ज़्या नहीं खाना है, हमारे देश की यही पहचान थी। विवेकानंद ने दुनिया के सामने कह दिया था ज़्या खाना है, ज़्या नहीं खाना यह मेरे देश की संस्कृति परंपरा नहीं है, वो तो हमारी व्यवस्थाओं का हिस्सा है। हमारी सांस्कृतिक व्यवस्था अलग है।

सदियों की तपस्या से निकली हुई चीजों ने इस देश के हर व्यक्ति ने इसके अंदर कुछ- कुछ जोड़ा ही है। स्वामी विवेकानंद जी की सफलता का मूल आधार था उनके भीतर का आत्म सज़्मान और आत्म गौरव का भाव। जब मैं मेक इन इंडिया कहता हूं तो इसका विरोध भी होता है। लेकिन जिन्हें यह बात पता है कि स्वामी विवेकानंद जी और जमशेदजी टाटा के बीच ज़्या संवाद हुआ,जिन्हें दोनों के बीच का पत्र व्यवहार पता है वह इसका विरोध नहीं करते। कारण, उस समय 30 साल के नौजवान ने टाटा से कहा था कि वे भारत में उद्योग लगाएं। टाटा ने लिखा है कि स्वामी विवेकानंद की वह बातें मेरे लिए प्रेरणादायक रही हैं। उसी कारण मैं भारत के अंदर उद्योगों को बनाने के लिए गया। आप यह जानकर हैरान हो जाएंगे कि भारत में पहली कृषि क्रांति स्वामी विवेदानंदजी के विचारों से उपजी थी। डा. सेन जिन्हें कृषि का परिवर्तनकाल लाने का मुखिया माना जाता है, उन्होंने जो पहली कृषि संस्थान बनाई वह विवेकानंद के नाम पर रखी गई। मतलब, हिन्दुस्तान में कृषि को आधुनिक बनाना चाहिए, वैज्ञानिक रिसर्च से बनाना चाहिए इस सोच की बातें विवेकानंद जी उस उम्र में करते थे। हमारे देश में कौशल विकास नया विषय नहीं है। लेकिन पहले ये विषय बिखरा पड़ा था। हमने आकर इसे एक जगह लाया। अलग मंत्रालय बनाया। मेरा मानना है कि देश के नौजवान को काम पैदा करने वाला बनना चाहिए। देश के नौजवान को मांगने वाला नहीं देने वाला बनना चाहिए। इसलिए स्वामी विवेकानंद को याद किया जाता है, ज़्योंकि उन्होंने तब इनोवेशन की बात की थी। हमें अपने अंदर के फेल होने के भय को बाहर निकालना होगा। दुनिया में ऐसा कोई इंसान नहीं है, जो फेल हुए बिना कुछ हासिल कर पाया हो। नदी के किनारे खड़ा व्यज़्ति डूबता नहीं है, लेकिन कुछ सीख भी नहीं पाता। सीखता वही है जो पानी में छलांग लगाता है। वह डूबता भी है और तैरना भी सीखता है। किनारे खड़े होकर लहरें गिनकर जीवन काटने वाला सफल नहीं होता, सफल वो होता है जो लहरों को पारकर आगे बढ़ता है। भारत सरकार स्टार्ट अप इंडिया और स्टैंड अप इंडिया का अभियान चला रही है। मैं चाहता हूं कि देश का नौजवान नया इनोवेशन करे। नए प्रोडज़्ट

तैयार करे और लोगों के बीच लेकर जाय। देश में बहुत बड़ा बाजार है। वह देश के बुद्धिमान नौजवान का इंतजार कर रहा है। कभी विवेकानंद जी को किसी ने पढ़ा है। उनकी विदेश नीति ज़्या थी। स्वामी विवेकानंद जी ने उस समय One Asia कहा था। आज 125 साल के बाद दुनिया में वह सामने नजर आ रहा है। 125 साल पहले जिस महापुरूष ने ये दर्शन किया था। उन्होंने कहा था कि जब संकट से घिरा होगा, तब One Asia ही रास्ता दिखाने का काम करेगा।

सन 2022 भारत की आजादी के 75 साल हो जाएंगे। ज़्या इसके लिए हम कोई संकल्प ले सकते हैं। बदलाव आने में देरी नहीं लगती। देश के 125 करोड़ लोग एक कदम चलेंगे तो हम 125 करोड़ कदम आगे होंगे। स्वामी विवेकानंद कूपमंडूप पर एक कथा सुनाया करते थे। वह कुंए के मेढक की बात करते थे। हमारे भीतर इतना सामर्थ्य होना चाहिए कि बाहर की चीजों से हमें कोई परेशान नहीं हो। मैं दुनिया में जहां जाता हूं, महसूस करता हूं कि विश्व का भारत के प्रति नजरिया बदल चुका है। यह सब राजनीतिक शज़्ति से नहीं हुआ, बल्कि जनशज़्ति से संभव हो पाया है। हमें अपने अंदर की बुराइओं के खिलाफ लड़ना है। आधुनिक भारत का जो सपना देखा गया है, उसे पूरा करने का प्रण लेना होगा। एक बार मैं एक महापुरूष से मिला। उन्होंने बहुत अच्छी बात कही। उन्होंने कहा कि भारत में लोग हजार साल पहले ज़्या था कि बात करते हैं जबकि विश्व आज आप कहां पर हो, उस पर मूल्यांकन करता है। यह सही है कि हम भाग्यवान हैं कि हमारे पास एक महान विरासत है। लेकिन हमारा दुर्भाग्य है कि हम उसी के गौरवगान से आगे बढ़ने को तैयार नहीं हैं। गौरवगान आगे बढ़ने की प्रेरणा के लिए होना चाहिए, गौरवगान पीछे हट करके रहने के लिए नहीं होना चाहिए। ■

Original Exposition of Integra

New Delhi. While the nation celebrates the Birth Centenary of Pandit Deendayal Upadhyay this year, the Deendayal Research Institute organised a unique event on 22, 23, 24 & 25 April 2017. It was on these dates in 1965, Panditji had delivered his Ekatm Manavdarshan lectures in Bombay. These lectures, delivered in Hindi then, encapsulated the philosophy of Integral Humanism that he propounded during his lifetime.

For the first time, Panditji's philosophy was taken to the hitherto leftist bastion of India International Centre in Lutyens' Delhi. The so-called intelligentsia that has ruled the country and more so, its mindset, and for whom IIC has been the hub of intellectual discourse, was unaware of the persona and the philosophy of Pandit Deendayal Upadhyay. In fact, the powers that be during the last seventy years, never allowed this philosophy to come to the centre-stage on Indian polity or become a part of the national or international discourse. The result was that narratives used during the evolution and exposition of this philosophy could not became a part of the intellectual discourse or debates.

Thus, for the present generation many of the narratives and contexts used in those lectures and his vast treasure of writings remained an enigma. Though these represented the real India - its values, ethics, culture, lifestyle, etc.

This gap of over half a century has been unusual and wide. It needed something

al Humanism by Deendayalji

contemporary to connect with the present generation. Hence, these lectures were tried to be recreated in English, unfortunately, the language of the present-day 'intelligentsia'. They now have an appetite to know and learn more and more about Pandit Deendayal Upadhyay and his philosophy that guides the central and over a dozen state governments. During these four days, same very lectures were recited by eminent personalities- senior journalists Ms. Bhavdeep Kang and Ms. Prarthna Gehilote on 22 & 23 April respectively, Minister for Women & Child Development, Madhya Pradesh, Smt. Archna Chitnis on 24 and a Professor in Delhi University Ms. Manu Kataria on 25 April.

Opening remarks were made by union ministers Sh. Ravi Shankar Prasad, Dr. Mahesh Sharma, Sh. MJ Akbar and a Professor of Urban Affairs, University of Bangkok, Dr. Bharat Dahiya. Union Ministers Sh. Rajiv Pratap Rudy, Sh. PP Chowdhury and Sh. Arjun Meghwal also graced the occasion on different days. Prominent ideologues Sh. KN Govindacharya, Dr. Mahesh Chandra Sharma, Dr. Bajrang Lal Gupt, Sh. Alok Kumar chaired the program on different days. BJP Organising Secretary Sh. Ramlal gave the concluding remarks. Senior Pracharak of RSS Shri Madan Das Devi was present through all the four days. Sangh ideologue Sh. J. Nandkumar, a large number of present and former bureaucrats also participated in the discussions.

सबको मिले 'पौष्टिक

थाली'

शिलांग। सबको पौष्टिक का आहार कैसे उपलज़्ध हो ? इसको लेकर चिंतन प्रारंभ हो गया है। देश परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। रहन-सहन, बोल-चाल के साथ खान-पान में भी व्यापक बदलाव आया है। खान-पान में परिवर्तन का असर उत्पादन, स्वास्थ्य और पर्यावरण पर पड़ा है। अधिकांश लोग उस खाद्य सामग्री की तरफ आकर्षित हो रहे हैं, जो स्वाद तो देता है, लेकिन स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं है। इस बदलाव पूर्ण प्रक्रिया में उस पद्धति पर काम करने की जरूरत महसूस की गई,जो भारत के विशाल पारज़्परिक ज्ञान और परज़्परागत खाद्य सामग्री को अपनाकर स्वस्थ मन और स्वस्थ शरीर की अवधारणा को पुनः ला सके। इसके लिए 'पौष्टिक थाली' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें कई विशेषज्ञों, पर्यावरणविद्, राज्य सरकार के मंत्रियों, स्वयंसेवी संगठनों के बीच व्यापक चर्चा के निचोड़ में सभी का मत यह था कि परंपरागत भोजन पर पारंपरिक और स्थानीय भोजन की श्रेष्ठता को स्वीकार करना चाहिए। उस खाद्य पदार्थों को अपनाना चाहिए, जो कृषि को उन्नतिशील बनाते हैं, बाजार में सहजता से उपलज़्धता हो सकती है उससे स्वास्थ्य भी पुष्ट होता है।

नानाजी जन्म शताज़्दी पर आईसीएआर रिसर्च कॉज़्प्लेज़्स, बारापानी, शिलांग में दीनदयाल शोध संस्थान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, महिला और बाल विकास मंत्रालय, मप्र के संयुज़्त तत्वधान में 23-24 जून 2017 को पोषण संवेदनशील कृषि पर दो दिन की संगोष्ठी का आयोजन किया गया। श्रद्धेय नानाजी द्वारा चित्रकूट में ग्राम विकास का जो काम आरंभ किया गया, उसमें स्वावलंबन के साथ स्वास्थ्य के प्रति भी लोगों को संजीदा करने का काम किया गया। नानाजी की तरफ से गांव के लोगों को स्थानीय कृषि उत्पादकता, वनोपज, बागवानी, गौपालन के प्रति सजग बनाया गया। नानाजी का मत था कि आर्थिक रूप से समृद्धशाली होने के साथ निरोगी होना भी आवश्यक है। जिसके लिए उन्होंने गांव के लोगों को घर में सज़्जी उगाने, दूध के लिए गाय पालने और पौष्टिक अनाज उत्पादित करने के लिए प्रेरित किया। नानाजी के उसी कार्य को देश में आगे बढ़ाने की दृष्टि से यह संगोष्ठी रखी गई थी। संगोष्ठी में मेघालय एवं असम के तत्कालीन राज्यपाल माननीय वनवारीलाल पुरोहित का

कहना था कि हमारे दैनिक आहार में मोटे अनाज यानी बाजरा का बहुत अधिक महत्व है। वह शरीर को कई तरह की बीमारियों से लड़ने की शक़्ति देता है। नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल माननीय पी.बी.आचार्य ने कहा कि भारत को कृषि प्रधान देश कहने के पीछे अवधारणा यही थी कि भारतीय खेत पालक माने जाते थे। उनसे उत्पादित अनाज से पूरा देश परिवार की तरह पलता था। मप्र सरकार में महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमतीअर्चना चिटणीस ने बताया कि उनके राज्य के 313 गांव कुपोषण की चपेट में थे, उन्हें उससे बाहर निकालने के लिए पौष्टिक भोजन पर खास जोर दिया गया है। इसके लिए गांवों में कई तरह के कार्यक्रम शुरू किए गए हैं और उसके सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। पर्यावरणविद डॉ. वंदना शिवा का मत था कि जलवायु अनुरूप खेती को बढ़ावा देकर किसानों की समस्या हल की जा सकती है। इससे किसानों द्वारा अपने यहां की अनुकूलता के हिसाब से उत्पादन किया जाएगा जिससे उनकी और लोगों की पौष्टिक खाद्य सामग्री की समस्या हल की जा सकती है। उनका मानना था कि देश में कृषि उत्पादन में रसायनिक खाद्य का प्रयोग बहुत तेजी से बढ़ा है। इससे बहुत सारे किसान पिछड़ गए हैं। परज़्परागत खेती का चलन समाज के लिए हितकर साबित होगा।

दो दिन की संगोष्ठी में छह तकनीकी सत्र हुए। इन सत्रों में भारत के उज़्र, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम में पोषण का दर्जा पर बात की गई। आयुर्वेद, आधुनिक चिकित्सा और पोषण दृष्टिकोण से भारत में वर्तमान पोषण संबंधी स्थिति को समझा गया। पोषण सुरक्षा को लेकर लोगों के बीच जाने की बात की गई। खेती केवल पेट को भरने के लिए नहीं है, यह मन, शरीर और आत्मा की पोषण है। भोजन को सभी रूप में पोषण प्रदान करना चाहिए। हर भारतीय के लिए पौष्टिक थाली बनाना और उसे सुनिश्चित करना संगोष्ठी का विषय था। इसमें कृषि, परिवार कल्याण, स्वास्थ्य मंत्रालय,

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय और अपोलो अस्पताल भी इसमें सहयोगी बनने पर सहमत हुए हैं। संगोष्ठी में आहार सुनिश्चित करने को लेकर विस्तार से चर्चा हुई। जिसमें स्थानीय स्तर पर पैदा होने वाले मोटे अनाज, दालों, सब्ज़ियां, मसाले, दूध, तेल, फलों की उपयोगिता को समझा गया। कहा गया कि सामाजिक कार्यकर्ताओं को क्षेत्र में लोगों को खाने में पौष्टिक पदार्थ को लेकर जो नई धारणा बनी है, उसे दूर करने का काम करना चाहिए। इसके अलावा आहार पद्धति को बदलने के बारे में बताने के साथ किसानों के बीच जाकर फसल पद्धति को बदलने के लिए भी प्रेरित करने की जरूरत है। संगोष्ठी में क्षेत्रवार समन्वय बनाकर गट चर्चा भी की गई। ये समूह लज़्बे विचार-विमर्श के बाद एक निष्कर्ष लेकर उठे।

संगोष्ठी में पोषण विशेषज्ञ, पर्यावरणविद, आयुर्वेद चिकित्सकों की तरफ से प्रत्येक क्षेत्र में कितने पोषण की आवश्यक है इसके बारे में बताया गया। इसके साथ यह भी बताया गया कि स्थानीय भोजन से कितनी पौष्टिकता प्राप्त की जा सकती है। कृषि वैज्ञानिकों द्वारा आवश्यक पोषक तत्वों और सामग्री की आपूर्ति कैसे सुनिश्चित की जा सकती है, इस पर विस्तार से जानकारी दी गई। दो दिन चली संगोष्ठी के अंतिम दिन चर्चा में आए सभी मुद्दों का निष्कर्ष पत्र तैयार किया गया। संगोष्ठी में देशभर के सौ से अधिक वैज्ञानिक शामिल हुए। पूर्वोज़र राज्यों ने उपलज़्ध जैव-विविध खाद्य स्रोतों की प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। जिसमें पारंपरिक और स्वदेशी पौधों, जड़ी बूटियों, फसलों और पशु खाद्य पोषक तत्वों की बहुतायत थी। संगोष्ठी में राज्यपाल माननीय तथागत राय, दीनदयाल शोध संस्थान के महासचिव श्री अतुल जैन, आईसीएआर निदेशक डा. एस. वी. नागचन, डा. के. एम. बुजर बरुआ, डा. मनोज नेसरी, डा. नीरा व्यास, डा. अनीता जताना, डा. रश्मी शर्मा, डा. गजानन डांगे, श्री उमेंद्र दज़, श्री गोविंद विजय, श्री चिज़र मल जाट, श्री कांत सिंह निर्वाण, श्री बसंत पंडित, डा. नीरज शर्मा, डा. पी.के. गोस्वामी, डा.सुपर्णा घोष, डा. लीना गुप्ता, डा. के. भास्करचार्य, डा. अनुपम मिश्रा, डा. एस.के. राउत, डा. ए. पटनायक, डा. यू.एन. सिंह, डा. ए.के. झा, डा. अनूप दास, डा. अर्नव सेन, डा. भट्टाचार्य, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रीशन, हैदराबाद के डा. टी. लोंगवा उपस्थित थे।

संगोष्ठी के निष्कर्ष

- परज़्परागत और स्थानीय भोजन पोषण के संदर्भ में कहीं ज्यादा श्रेष्ठ माने गए।
- गेहूं और चावल जैसे उत्पाद में आवश्यक बदलाव की बात कही गई।
- स्थानीय साग-सज़्जी, फल, अपने खेत में उत्पादित तिलहन फसल से निकाले गए तेल को सर्वोत्तम पोषक माना गया।
- पारंपरिक और स्थानीय भोजन को प्रकृति और परिस्थिति के हिसाब से ज्यादा स्वादिष्ट और अधिक पौष्टिक माना गया।
- परंपरागत और स्थानीय भोजन को पर्यावरण के अनुकूल भी बताया गया।
- परंपरागत और स्थानीय फसलों को भारतीय मौसम, मिट्टी के अनुरूप बताते हुए कहा गया कि इससे पैदावार पर असर नहीं पड़ेगा।
- विदेशी बीज न यहां के जलवायु को स्वीकारती है और न मिट्टी उसे स्वीकार करती है।
- पारंपरिक फसल को अन्य बीजों की तुलना में बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है।
- फसल उत्पादन के लिए रसायनिक खाद् का उपयोग अनाज और मिट्टी दोनों के लिए हानिकारक है।
- स्थानीय फसल में पशुधन के लिए अधिक चारा उत्पादित होता है। जो पशुपालन के लिए लाभदायक है।
- राज्यों और केन्द्र सरकार से गेंहू, धान की तरह अन्य अनाजों के लिए भी लागत से अधिक का समर्थन मूल्य देने का प्रस्ताव देना।
- भारत सरकार को अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों की वजाय स्थानीय स्तर पर पौष्टिकता का मानक तय कराने का सुझाव देना।

राष्ट्र केवल सीमा से नहीं बनता

भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर व्यारव्यानमाला

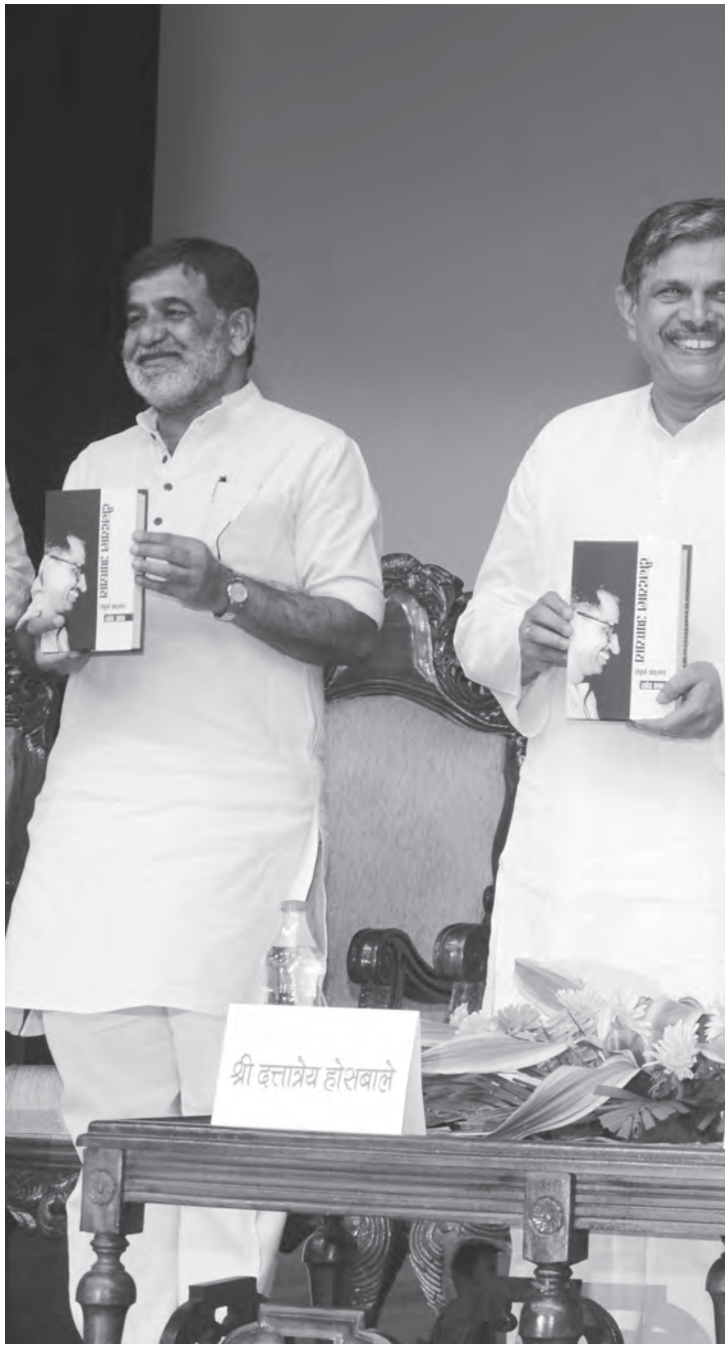

जज़्मू-कश्मीर। भारत ऐसा देश है, जहां रहन-सहन, बोलचाल अलग-अलग है, लेकिन लोगों की सोच एक होती है। इसके पीछे वजह ये है कि कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हर भारतीय एक जैसा चिंतन करता है। यह बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह-सरकार्यवाह माननीय दत्तात्रेय होसबाले ने वर्तमान संदर्भ में भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर आयोजित व्याज़्यानमाला में कही।

उन्होंने कहा कि कोई राष्ट्र केवल सीमाओं से नहीं बनता। उसके लिए लोगों की सोच होना जरूरी है। अन्यथा राष्ट्र एकजुट नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि भारत के लिए भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ही वास्तविकता है। वह बोले कि पिछले कुछ समय से राष्ट्रीयता शज़्द विवादित विचारों के रूप मे उभरा है। एकता, एकात्मता, स्वभाव, गुण, धर्म, चिंता को लेकर भी समस्याएं उभरी हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया में ऐसा कोई राष्ट्र नहीं है जिसमें इतना भ्रम हो। ऐसे में राष्ट्रीयता का आधारभूत तत्व किसे माना जाय। राष्ट्र धर्म के नाम पर नहीं बनता। यदि ऐसा होता तो दुनिया में कई मुस्लिम राष्ट्र बन गए होते। ऐसा होता तो ईसाई धर्म और अन्य धर्म के भी राष्ट्र बने होते। राष्ट्र मानव के विकास के लिए महत्वपूर्ण है और वह तीन तत्वों से बनता है। इसमें भूमि, जन और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद शामिल है। इसीलिए जब 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण किया तो दक्षिण भारत के लोग भी चीन को सबक सिखाने के लिए एकजुट

होकर सामने आए। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के चलते ही दो राष्ट्र में बंटा जर्मनी एकजुट हो गया, वहीं जबरन कई राष्ट्रों को मिलाकर बना सोवियत संघ टूट गया। इस अवसर पर जज़्मू-कश्मीर के उपमुज़्यमंत्री श्री निर्मल सिंह ने कहा कि राष्ट्रवाद की परिभाषा को समझने के लिए इस पर व्यापक बहस होनी चाहिए। जिससे लोगों को पता चल सके कि सही राष्ट्रवाद ज़्या है? उन्होंने कहा कि पूजा पद्धति पर राष्ट्र निर्माण नहीं हो सकता। भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ही वास्तविकता है और यह ही भारत को मजबूती दिए हुए है। एकात्म मानव दर्शन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान के अध्यक्ष डा. महेशचंद्र शर्मा ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय पर लिखे अपने अनुभवों को साझा किया। इस अवसर पर श्री दत्ताजी ने दीनदयाल सज़्पूर्ण वांग्मय का विमोचन किया। पंडितजी के जीवन पर बना वृत्तचित्र दिखाया गया।

रामायण

दिल्ली के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में रामायण विषय पर प्रदर्शनी लगाई गई। जिसमें शास्त्रीय, लोक संगीत के माध्यम से समकालीन संदर्भों में रामायण को प्रस्तुत का प्रदर्शन किया गया। इसके अलावा पांडुलिपियों, मूर्तियों, लघु चित्रकला, लकड़ी, कांस्य, पत्थर, टेराकोटा कला, शिल्प, वस्त्र, ऑडियो विजुअल और मल्टीमीडिया प्रस्तुतियों सहित पेंटिंग के माध्यम से रामायण प्रसंग को दर्शाया गया था। इस प्रदर्शनी को दार्शनिक अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए विशेष रूप से डिजाइन की गी थी। प्रदर्शनी का मुज़्य आकर्षण काशी नरेश, बनारस और मूल रामलीला के संग्रह से प्रदर्शित दुनिया में रामनगर रामलीला का प्रदर्शन है, जिसे यहां प्रस्तुत किया था। पूरे आयोजन में देशभर में संग्रह रामायण के दुर्लभ प्रसंगों को रखा गया था। रामायण पर आधारित कार्यशाला भी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में केन्द्रीय मंत्री सुश्री उमा भारती भी आई और उन्होंने आयोजन स्तल पर काफी देर बिताया।

भारत गीतमाला

दिल्ली में दीनदयाल शोध संस्थान एवं संस्कृति मंत्रालय द्वारा इंदिरा गांधी इन्डोर स्टेडियम में भारत गीतमाला का आयोजन किया गया। इसमें दस अलग-अलग भाषाओं के कलाकारों द्वारा अपनी कला का प्रदर्शन किया गया। सिंधी, बांग्ला, असमिया, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, कन्नड़, भोजपुरी, हिंदी के कलाकारों ने अपनी अदभुत प्रस्तुति दी। इस आयोजन में ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे पूरा भारत एक जगह एकत्र हो गया है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं श्रद्धेय नानाजी देशमुख के जन्म शताज़्दी वर्ष पर हुए इस आयोजन में दिल्ली के गणमान्य लोग शामिल हुए। जिसमें भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह, केन्द्रीय संस्कृति राज्यमंत्री डा. महेश शर्मा प्रमुख थे।

शरदोत्सव

चित्रकूट में तीन दिन का शरदोत्सव का आयोजन हर वर्ष की भांति हुआ। राष्ट्रऋषि नानाजी के जन्मदिन पर शरद पूर्मिणा को होने वाले इस आयोजन का यह 12वां वर्ष रहा है। इस आयोजन में ग्रामीण अंचल के लोग बड़े उत्साह से शामिल होते हैं। आयोजन पारज़्परिक नृत्य एवं गायन केन्द्रित द्वारा समारोह हुआ। इसमें मुज़्बई के सुप्रसिद्ध भजन गायक सुमित नागर एवं नानू गुर्जर की जोड़ी तथा मुज़्बई के प्रसिद्ध पार्श्वगायक अभिजीत भट्टाचार्य ने भज़्तिगीत प्रस्तुत किए। राजस्थान गीत, नर्मदा परिक्रमा पर नृत्य नाटिका की प्रस्तुति दी गई।

प्रतिभाशाली युवाओं को विदेश में शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति

वर्ष 2018 के लिए 15 मार्च तक आवेदन आमंत्रित

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

विदेश में स्नातकोत्तर एवं पी-एच.डी. उपाधि के लिए

छात्रवृत्ति योजना

विदेशों में स्थित विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में स्नातकोत्तर/पी-एच.डी. शोध उपाधि कार्यक्रम में प्रवेश करने वाले मध्यप्रदेश के विद्यार्थियों जिन्होंने उच्च शिक्षा विभाग के तहत काउसलिंग के उपरान्त प्रवेश प्राप्त किये हों एवं उच्च शिक्षा विभाग के तहत संचालित विश्वविद्यालयों एवं संबद्धता प्राप्त महाविद्यालयों में प्रवेशित हों, के लिये राज्य सहायता छात्रवृत्ति दी जाती है।

योजना के अन्तर्गत विदेश में उच्च शिक्षा के लिए अधिकतम 40 हजार अमेरिकी डॉलर प्रतिवर्ष (दो वर्ष) की छात्रवृत्ति दी जाती है।

पात्रता

- मध्यप्रदेश का मूल निवासी
- परिवार की वार्षिक आय अधिकतम 5 लाख रुपये।
- अर्हता परीक्षा (यू.जी.पी.जी.) में 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त हों।

इस सम्बंध में विस्तृत जानकारी एवं आवेदन पत्र उच्च शिक्षा विभाग की वेबसाइट **www.highereducation.mp.gov.in** से नि:शुल्क प्राप्त किया जा सकता है।

अपात्र/अपूर्ण/त्रुटिपूर्ण आवेदनों पर विचार नहीं किया जायेगा।

आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 15 मार्च, 2018

सभी वर्गों को शिक्षा के समान अवसर देती मध्यप्रदेश सरकार

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी
आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2018

सांस्कृतिक संध्या

ग्रामोदय मेला में शाम ढलते ही रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू हो जाता था. उस दौरान देश के प्रसिद्ध लोक कलाकारों द्वारा पारम्परिक लोककला का मंचन होता था.

ग्रामोदय मेला में शाम ढलते ही रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू हो जाता था। ये कार्यक्रम हर शाम तीन दिन तक लगातार चले। उस दौरान इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रसिद्ध लोक कलाकारों द्वारा पारम्परिक लोककला का मंचन किया गया। पार्श्व गायिका श्रीमती मालिनी अवस्थी और पार्श्व गायक श्री मोहित चौहान के सुमधुर गीतों ने लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

दीनदयाल शोध संस्थान
Deendayal Research Institute
दीनदयाल परिसर, चित्रकूट
GAIL (India) Limited
ONGC

भारत गीतम

ाला, दिल्ली

शरदोत्सव

ा चित्रकूट

गोंडा में वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप जयंती पर हुए समरसता भोज में मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथजी भी शामिल हुए।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित रामायण प्रदर्शनी में भित्ति चित्र बनाती एक कलाकार।

चित्रकूट में श्रद्धेय नानाजी की पुण्यतिथि पर आयोजित पंचायत प्रतिनिधियों के सम्मेलन में स्थानीय कलाकारों द्वारा सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई। उसी आयोजन में नृत्य का दृश्य।

आमतौर पर देश के राष्ट्रपति विशेष वाहन से चलते हैं, लेकिन चित्रकूट प्रवास के दौरान माननीय रामनाथ कोविंदजी ई-रिक्शा से चलना पसंद किये। उनका मत था कि इससे ग्रामीण परिवेश को नजदीक से देखने का मौका मिलता है।

दिल्ली में राष्ट्रऋषि नानाजी के जन्म शताब्दी कार्यक्रम में दिव्यांग कलाकार द्वारा नाक से बजाई जा रही बांसुरी की धुन सुन कर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कदम ठिठक गए।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित रामायण प्रदर्शनी में भगवान राम के अलग-अलग भाषाओं में अंकित नाम को निहारती केन्द्रीय मंत्री उमा भारती।

मध्यप्रदेश शासन
भोपाल

दिनांक : 1 मार्च, 2018

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

संदेश

प्यारे बच्चों,

आपकी बोर्ड परीक्षाएं 01 मार्च से प्रारंभ हो रही हैं। मुझे विश्वास है कि आप पूरी लगन एवं मेहनत के साथ परीक्षा की तैयारी में जुटे होंगे। परीक्षा के दौरान चिंतित होना स्वाभाविक है परन्तु पूरे आत्मविश्वास, लगन, एकाग्रता एवं समय प्रबंधन के साथ तैयारी की जाये तो सफलता आपके कदम चूमेगी। मान. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा दिनांक 16 फरवरी 2018 को 'परीक्षा पर चर्चा' के दौरान आपको समझाइश दी गई है कि सभी विद्यार्थी परीक्षा को उत्सव के रूप में लें। अत: परीक्षा में सफलता–असफलता का विचार किए बिना सकारात्मक रहें तथा योग व ध्यान को अपनी दिनचर्या बनाएं।

मैं पालकों से भी अपील करता हूँ कि वे बच्चों की क्षमताओं पर विश्वास रखें तथा अपनी अपेक्षाओं का बोझ बच्चों पर न डालें। उन्हें सतत् रूप से प्रोत्साहित करें व तनावमुक्त रखें। हर बच्चे की अपनी नैसर्गिक प्रतिभा होती है, उसी अनुरूप उन्हें आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करें।

परीक्षाओं में सम्मिलित हो रहे परीक्षार्थी आवश्यकता होने पर माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा संचालित हेल्पलाइन सेवा के दूरभाष नम्बरों 0755-2570248, 2570258 एवं टोल फ्री नम्बर 18002330175 का उपयोग कर परीक्षा के बारे में किसी भी प्रकार के तनाव अथवा समस्या के बारे में विशेषज्ञों से अपनी बात कहकर समाधान कर सकते हैं।

अंत में मैं सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद देता हूँ कि वे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

(शिवराज सिंह चौहान)

अभिकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2018
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

महिला किसान ने बदला खेती का ढर्रा

महिला किसान ने सब्जी उत्पादन की आधुनिक तकनीक को सीखा और अपने एक एकड़ के खेत में मूली, पालक, मेथी, लालभाजी, टमाटर, फूलगोभी, मटर, पत्तागोभी, आलू, प्याज, लहसुन, भिन्डी, मिर्च की खेती शुरू की।

मझगवां। सतना जिला के मझगवां विकासखंड मुख़्यालय से लगभग 22 किलोमीटर दूर ग्राम पड़री की महिला किसान गुड्डन कुशवाहा जिले की स्वावलंबी महिला कृषक बन गई है। परंपरागत खेती धान, गेंहू की जगह उन्होंने सज़्जी की खेती को अपनाकर उत्पादन में मिसाल कायम किया है। उन्होंने अलाभकर खेती को लाभकर खेती में बदल कर क्षेत्र में अन्य महिला कृषकों के लिए स्वावलज़्बी महिला कृषक बन गई है।

चार- पांच वर्ष पूर्व गुड्डन एक एकड़ जमीन में धान एवं गेंहू की खेती किया करती थीं। जिससे उनके सात सदस्यों वाले परिवार का भरण पोषण ठीक से नहीं हो पाता था। खेती अच्छी नहीं होने के कारण परिवार चलाने में संकट के साथ बच्चों की शिक्षा भी ठीक से नहीं हो पा रही थी। इसी दौरान उनकी मुलाकात समाज शिल्पी दंपज़ि परिवार अक्षय तिवारी एवं विजय लक्ष्मी से हुई । समाज शिल्पी दंपज़ि परिवार ने उन्हें कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां के वैज्ञानिको से मिलवाया। केंद्र के वैज्ञानिकों ने ट्यूबवेल लगाने के लिए राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत 40 हजार की राशि उपलज़्ध कराई। गुड्डन द्वारा सज़्जी की खेती की इच्छा को देखते हुए उन्हें सज़्जी उत्पादन का प्रशिक्षण दिया गया। गुड्डन को कम समय में बाजार में अधिक दाम पर बिकने वाली सज़्जी की खेती करने की समझाइश दी गई। उन्हें यह भी बताया गया कि कम पानी में तैयार होने वाली फसल किस तरह से ली जा सकती है। महिला किसान ने सज़्जी उत्पादन की आधुनिक तकनीक को सीखा और अपने एक एकड़ के खेत में मूली, पालक, मेथी, लालभाजी, टमाटर, फूलगोभी, मटर, पज़ागोभी, आलू, प्याज, लहसुन, भिन्डी, मिर्च की खेती शुरू की। खेत की मेढ़ पर अमरुद, आंवला, पपीता के पौधों का रोपण भी किया। आधुनिक तकनीक अपनाने से सज़्जी की अच्छी पैदावार हुई। इससे उनकी आमदनी बढ़ने लगी। आज वह महिला कृषक ने पज़्का मकान बनवा लिया है। बच्चों के स्कूल का खर्च उठा रही है और सात सदस्यों वाले परिवार का भरण-पोषण अच्छे से हो रहा है। मझगवां के ही राजेन्द्र कुमार कुशवाहा ने भी कुछ इसी तरह का प्रयोग किया। वह ढाई एकड़ जमीन में धान, उर्द, गेंहू एवं चना की खेती करते थे। उससे उनका परिवार बड़ी मुश्किल से चलता था। वह मझगवां कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों के सज़्पर्क में आए। वैज्ञानिकों से तकनीकी परामर्श लिया। कृषि विज्ञान केंद्र पर आयोजित सज़्जी एवं मसाला की खेती पर प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। वैज्ञानिकों ने अनाज, दलहन एवं तिलहनी फसलों के साथ सज़्जी एवं मसाला की खेती करने की सलाह दी। इसके बाद डेढ़ एकड़ खेत में सज़्जी पैदा करने की योजना बनाई। योजना अनुरूप उन्होंने खरीफ में धान, उर्द, मूंग, फूल गोभी, मूली, बैगन, हरीमिर्च, धनिया पज़ी, एवं पालक की खेती की। उसके बाद रबी मौसम में गेंहू, चना, सरसों आलू, प्याज, लहसुन, फूल गोभी, बंद गोभी एवं मिर्च की खेती की गई। गर्मी के मौसम में आधा एकड़ खेत में लौकी, खीरा, ककड़ी, प्याज एवं मूली की खेती कराई गई। वैज्ञानिकों के परामर्श के अनुरूप भैस पालन के साथ साथ मैंने जैविक खाद बनाना प्रारज़्भ किया। इस खेती पद्धति को अपनाने से किसान राजेन्द्र की आमदनी भी बढ़ गई है। इस समय क्षेत्र के 78 किसान खेती पद्धति में बदलाव करके अपनी आमदनी बढ़ा चुके हैं।

कारीगरों की समस्या क

ा हो निदान

नागपुर। पारंपारिक जीवन में ज़्या जरूरी है? रोटी, कपड़ा, मकान यह तो कैदियों को भी मिलता है, लेकिन मनुष्य की और भी जरूरतें है। मनुष्य की जरूरतें भावना, मन, ह्रदय होती है। इसलिए कला और कारीगर के जीवन में अलग-अलग भूमिकाएं होती है। इसमें विकास निरंतर होना चाहिए। उसका लाभ सबको मिलना चाहिए, लेकिन यह विषमता बढ़ती जा रही हैं। यह बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकार्यवाह माननीय सुरेश सोनी ने डॉ वसंतराव देशपांडे सभागृह में आयोजित कारीगर पंचायत में कही।

उन्होंने कहा कि इच्छा इंसान को प्रेरित करती है। सबके विकास के लिए इच्छाओं को नियंत्रित करना होगा। इसके साथ उपभोग को भी संयमित करना होगा। कला भारत के अतीत में कला बसती है।यह आने वाली पीढ़ी को पता होना चाहिए। परंतु आधुनिक विज्ञान की वजह से ऐसा नहीं हो रहा है। कारीगरों की परेशानी को समझना पड़ेगा। उनके संवर्धन के लिए ज़्या उपाय करना चाहिए यह जानना होगा। उन्हें कच्चा माल कैसे मिले, उनके सामान की बिक्री हो इस दिशा में सोचने की जरूरत है। कारीगरों के लिए कला बाजार होने चाहिए। हर कला के अंदर संदेश होना चाहिए।

समाज का स्वभाव कुछ इस तरह है कि पहले लोग समझाने से समझ जाते थे, लेकिन अभी भुगतने से समझते है। निरंतर विकास के दो चरण होते है। एक परज़्परा है और दूसरा आधुनिकता है। विकृति पर प्रकृति की और प्रकृति पर सं संस्कृति की विजय निश्चित है। केन्द्रीय सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी ने इस अवसर पर कहा कि लघु व्यवसायों और पारंपरिक कारीगरों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। लोगों को जल, जंगल, जमीन और जानवर के आधार पर आजीविका पर ध्यान देना होगा। श्रद्धेय नानाजी ने विधि रूप के विकास विकसित करके इसे दिखाया है।

लोग रोजगार की खोज में शहरों से दौड़ रहे हैं। शहर में उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। महात्मा गांधी ने गांवों को समृद्ध करने की सलाह दी थी। लेकिन हमने इसे नजरअंदाज कर दिया है। उन्होंने अपने व्यावसायिक स्तर पर कारीगरों और विपणन के पारंपरिक ज्ञान से अच्छे साहित्य को विकसित करने की आवश्यकता व्यज़्त की। उनका कहना था कि कारीगरों की एक नई

पीढ़ी खेती और परज़्परागत व्यवसाय करने को तैयार नहीं है। सरकार हो या अनुसंधान संस्थान सबका ध्यान कॉर्पोरेट क्षेत्र में अधिक है। कारीगरों के जीवन में गुणात्मक सुधार के लिए कोई ध्यान नहीं दिया गया है। कम गुणवज़ा वाले सामान गांवों में पहुंचने लगे हैं, इसलिए साप्ताहिक बाजार अस्थिर हो गया है।

दीनदयाल शोध संस्थान के उपाध्यक्ष श्री प्रभाकरराव मुंडले ने कहा कि जो शिक्षित है वह अशिक्षित से अच्छा है, प्रज्ञा से अच्छा ज्ञान है। लेकिन आज सभी क्षेत्र में सक्रियता की जरूरत होती है। व्यक्ति में क्षमता, समता, सृजनशीलता होनी चाहिए। इस क्षेत्र में सिर्फ कुशलता ही पर्याप्त नही है।

भारत की आत्मा गांव में बसती है। कृषक और कारीगर सामर्थ्य और सज़्मान का प्रतीक है। देश में कृषि के बाद कारीगर क्षेत्र ही रोजगार उपलज़्ध कराने वाला सबसे बड़ा क्षेत्र है। कारीगर समाज को उनके सामर्थ्य के प्रति जागृत कराने का महत्वपूर्ण कार्य कारीगर पंचायत 1984 से कर रहा है। आधुनिकता के दौर में कारीगरी बाजार, कारीगर नीति, कारीगरी शिक्षा, आधुनिक शहर और कारीगर इन विषयों पर सीधे कारीगरों से निरंतर संवाद करने का प्रयास हो रहा है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के जन्म शताज़्दी वर्ष में अंत्योदय का विचार जनमानस तक पहुंचाने का प्रयास है। आधुनिकीकरण के कारण कारीगरों के सामने बहुत ही विकट और अस्थिरता पैदा हो गई है। जो समुदाय समानता के पक्ष में और गुलामी के विरूद्ध खड़ा था, आज वही समाज अपनी आ जीविका का साधन, क्षमता, पात्रता, कार्य कुशलता, तकनीक और सृजनशीलता को इस आधुनिकता के समय में खो रहा है। अब समय आ गया है कि हम अपने प्रगति का पुनरावलोकन करें और इस आधुनिक युग से तालमेल रखते हुए नए मार्ग का निर्माण करें। इसी विचार से निरंतर विकास में पारंज़्परिक कारीगरों की भूमिका विषय पर सज़्मेलन का आयोजन किया गया। यह आयोजन दीनदयाल शोध संस्थान, राष्ट्रीय कारीगर पंचायत, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा किया गया था। आयोजन स्थल पर कारीगरों द्वारा निर्मित सामग्री की प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। जिसमें बांस,धातु, चमड़ा तथा हस्तशिल्प के सामना रखे गए थे।

महाराजा विक्रमादित्य फैलोशिप

वर्ष 2018-19

महाराजा विक्रमादित्य फैलोशिप अंतर्गत नीचे उल्लिखित विषयों पर शोधकार्य के लिये भारतीय नागरिकों से प्रस्ताव आमंत्रित हैं :

महाराजा विक्रमादित्य सीनियर फैलोशिप राशि रु. 1,80,000 (एक)

- विक्रमादित्य कालीन न्याय प्रणाली।

महाराजा विक्रमादित्य जूनियर फैलोशिप राशि रु. 1,20,000 (तीन)

- विक्रमादित्य और लोक प्रशासन।
- विक्रमादित्य की शासन पद्धति।
- विक्रमादित्य संबंधी प्राचीन अप्रकाशित पांडुलिपि की सानुवाद या मूल प्रस्तुति।

पात्रता

सीनियर फैलोशिप (न्यूनतम आयु 35 वर्ष, 1 अप्रैल 2018 की स्थिति में)
दर्शन, इतिहास, सामाजिक विज्ञान, मानविकी विद्याओं, साहित्य अथवा कलाओं में से किसी एक विषय में पीएच.डी. अथवा इतिहास, शिक्षा, संस्कृति, दर्शन या भारतीय साहित्य में अपने योगदान के द्वारा प्रतिष्ठित विद्वान अथवा विश्वविद्यालयीन/महाविद्यालयीन प्राध्यापक अथवा राष्ट्रीय/राज्य स्तरीय ख्याति प्राप्त विद्वान या ऐसे लेखक, सम्पादक, पत्रकार जिनकी दो से अधिक पुस्तकें प्रकाशित व चर्चित हो चुकी हैं, फैलोशिप के लिये आवेदन कर सकेंगे।

जूनियर फैलोशिप (अधिकतम आयु 50 वर्ष, 1 अप्रैल 2018 की स्थिति में)
दर्शन, इतिहास, सामाजिक विज्ञान, मानविकी विद्याओं, साहित्य अथवा कलाओं में से किसी एक विषय में न्यूनतम स्नातकोत्तर उपाधि एवं लेखन कार्य का अनुभव आवश्यक है। पीएच.डी. उपाधिधारी भी आवेदन कर सकते हैं।

अंतिम तिथि **31 मार्च, 2018** तक आवेदन-पत्र निदेशक, महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, 1, उदयन मार्ग, उज्जैन-456010, दूरभाष/फैक्स-0734-2521499, ईमेल vikramadityashodhpeeth@gmail.com को आवश्यक रूप से भिजवाना होगा।

चयन समिति की अनुशंसा के आधार पर फैलोशिप प्रदान करने का निर्णय अंतिम और सर्वमान्य होगा। फैलोशिप के दौरान किये गये शोध कार्य का प्रकाशन और प्रदर्शन का सर्वाधिकार महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ का होगा।

Website : www.mvspujjain.org

आवेदन-पत्र प्रारूप

1. नाम 2. स्थायी पता 3. जन्मतिथि 4. जन्म स्थान 5. पासपोर्ट आकार के दो छायाचित्र 6. भारत में निवास की अवधि 7. रोजगार की स्थिति 8. शोध के लिए प्रस्तावित प्रोजेक्ट 9. फैलोशिप की अवधि में किये जाने वाले कार्य का शीर्षक एवं विवरण 10. सम्बन्धित क्षेत्र में योगदान एवं अनुभव 11. ऐसे दो सम्मानित विद्वानों के संदर्भ (नाम एवं पता) जिन्हें नामांकित व्यक्ति की योग्यता/कार्य की जानकारी हो।

स्वराज संस्थान संचालनालय

रवीन्द्र भवन परिसर, भोपाल-462002, फोन/फैक्स : 0755-2660563, 2660407/2660361

E-mail : swarajbhavan@gmail.com

स्वावलंबन का काम देख राष्ट्रपति अभिभूत

सियाराम कुटीर वह जगह है, जहां रहकर नानाजी ने वनांचल के विकास की नींव डाली थी। वहां श्रद्धेय नानाजी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करने के बाद वह आरोग्यधाम परिसर पहुंचे। आरोग्यधाम नानाजी की देखरेख में बना चित्रकूट में वह स्थान है, जहां प्रकृति को सजीव रखा गया है।

चित्रकूट। राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख के ग्राम विकास का मॉडल देखने राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद चित्रकूट पहुंचे। राष्ट्रपति स्वर्गीय श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के बाद कोविंद दूसरे ऐसे राष्ट्रपति थे, जिन्हें ग्राम स्वावलंबन का काम चित्रकूट तक खींच लाया। इस अवसर पर श्रद्धेय नानाजी की प्रतिमा का अनावरण हुआ। राष्ट्रपति कोविंद

द्वारा चित्रकूट के वनांचल में चल रहे स्वावलंबन के काम को जाना गया। राम के आदर्शों को चित्रित करने वाले स्थल रामदर्शन भी राष्ट्रपति गए और राम के आदर्शपूर्ण जीवन के प्रदर्शित करते चित्र में सभी पहलुओं को समझा।

राष्ट्रपति माननीय रामनाथ कोविंद चित्रकूट में महामहीम के रूतबे से एकदम भिन्न थे। वह हैलीपैड से ई–रिज़्शा से सियाराम कुटी पहुंचे। सियाराम कुटीर वह जगह है, जहां रहकर नानाजी ने वनांचल के विकास की नींव डाली थी। वहां श्रद्धेय नानाजी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करने के बाद वह आरोग्यधाम परिसर पहुंचे। आरोग्यधाम नानाजी की देखरेख में बना चित्रकूट में वह स्थान है, जहां प्रकृति को सजीव रखा गया है। वहां

जे.आर.डी. टाटा के नाम से आरोग्यधाम की स्थापना की गई है। वहां प्राकृतिक चिकित्साविधि से लोगों का उपचार होता है। उन ग्रामीणजनों का जो इलाज का खर्च नहीं उठा सकते। यहीं पर रसशाला है, जहां आयुर्वेद पद्धति की औषधि का निर्माण किया जाता है। इसी परिसर में गौ–शाला है, जिसे नानाजी द्वारा देशी नस्ल की गाय के संरक्षण के लिए शुरू किया गया था। वहां आज भी कई देशी नस्ल की गाय हैं। राष्ट्रपति श्री कोविंद द्वारा वहां राष्ट्रऋषि नानाजी की प्रतिमा का अनावरण किया गया। इसके बाद वहां पर दीनदयाल शोध संस्थान के चल रहे कार्यों की लगाई गई प्रदर्शनी को देखने वह पहुंचे। प्रदर्शनी में कृषि क्षेत्र में संस्थान द्वारा किसानों को उन्नतिशील बनाने के लिए

राष्ट्रपति श्री कोविंद द्वारा वहां राष्ट्रऋषि नानाजी की प्रतिमा का अनावरण किया गया। इसके बाद वहां पर दीनदयाल शोध संस्थान के चल रहे कार्यों की लगाई गई प्रदर्शनी को देखने वह पहुंचे।

किए गए कार्यों को प्रदर्शित किया गया था। मिट्टी परीक्षण, बीज उपचार, नए किस्म के बीज तैयार करने की विधि तथा जैविक खाद निर्माण से संबंधित जानकारी, किसानों की आत्मनिर्भरता, फसलों की जैवविविधता, मीठा जल मोती संवर्धन, अलाभकर जोत को लाभकर जोत बनाने की समेकित खेती पद्धति, वैकल्पिक उद्यमिता और स्थानीय संसाधनों को परिष्करण से रोजगार के अवसर, संस्कारित शिक्षा, सामाजिक जीवन में परस्पर पूरकता एवं सह जीवन का भाव, आजीवन स्वास्थ्य संवर्धन एवं व्यवस्थित जीवन सुविधाओं के बारे में राष्ट्रपति को बताया गया। राष्ट्रपति श्री कोविंद वहां से सीधे रामदर्शन पहुंचे। रामदर्शन नानाजी द्वारा बनवाया गया वह स्थल है, जहां भगवान राम के आदर्श स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। राम के आदर्श को दर्शाने वाले चित्र यह सीख देते हैं कि समाज जीवन में व्यज़्ति की समाज के प्रति ज़्या जिज़्मेदारी होती है। श्री कोविंद वहां लगभग आधा घंटे रूके। उन्होंने हर चित्र के भाव को बहुत संजीदगी से समझा। श्री कोविंद वहां से सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय परिसर गए जहां नन्ही दुनिया के बच्चों से मिले, उनसे बातचीत किए। उसके बाद गुरुकुल संकुल एवं उद्यमिता विद्यापीठ के उत्पादन सह प्रशिक्षण गतिविधियों को भी उन्होंने देखा। वहां से वह दीनदयाल परिसर में जाकर पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी की प्रतिमा के समक्ष पुष्पांजलि अर्पित किए। श्री कोविंद चित्रकूट में चल रहे स्वावलंबन के कार्य से काफी अभिभूत थे। वह हर बात को समझना चाहते थे। दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यकर्ताओं से हर बात बेझिझक समझ रहे थे। राष्ट्रपति माननीय रामनाथ कोविंद के इस प्रवास में उप्र के राज्यपाल श्री रामनाइक, गुजरात के राज्यपाल श्री ओ.पी. कोहली, केन्द्रीय कानून मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद, मप्र के मुज़्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान सहित कई राजनेता पहुंचे हुए थे।

पुणे। समाज में नारी के निर्णय प्रक्रिया में साझीदारी का दावा किया जाता है, लेकिन ज़्या देश के सभी हिस्सों में, समाज के सभी वर्गों में नारी को निर्णय प्रक्रिया में शामिल किया जाता है। यह ऐसा ज्वलंत प्रश्न है, जिसका सार्थक जवाब नहीं मिल पाया है। समाज में नारी की स्थिति और संभावनाओं को लेकर निर्णय प्रक्रिया में उनकी साझेदारी को लेकर संगोष्ठी कराई गई। इसमें देश के आठ राज्यों से नारी सशज़्तिकरण के क्षेत्र में काम करने वाले 52 संगठनों की 145 महिला प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

दीनदयाल शोध संस्थान दिल्ली, रामभाऊ ज़्हाळगी प्रबोधिनी मुंबई और दृष्टी स्त्री अध्ययन प्रबोधन केंद्र पुणे के संयुज़्त तत्वधान में 26-27 अज़्टूबर 2017 को आयोजित इस संगोष्ठी के उद्‌घाटन सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख तथा ज़्हाळगी प्रबोधिनी के अध्यक्ष प्रोफेसर अनिरुद्ध देशपांडे ने स्पष्टतौर पर कहा कि नारी निर्णय प्रक्रिया के केन्द्र में रहे यह समाज में अभी तक मानसिकता नहीं बन पाई है। महिलाओं को निर्णय प्रक्रिया से दूर रखने के पीछे चाहे जो कारण हो, लेकिन एक कारण जो स्पष्टतौर पर नजर आता है, वह पुरूष प्रधानता की मन:स्थिति में बदलाव नहीं आना है। उनका मत था कि प्रकृति के भेद के अलावा स्त्री-पुरूष में किसी तरह का अन्य भेद नहीं होना चाहिए। जिस तरह समाज और परिवार को चलाने में पुरूष भूमिका निभाता है, उसी तरह का काम महिला भी करती है। उन्होंने समाज में व्याप्त इस

नारी को मिले निर्णायक भूमिका

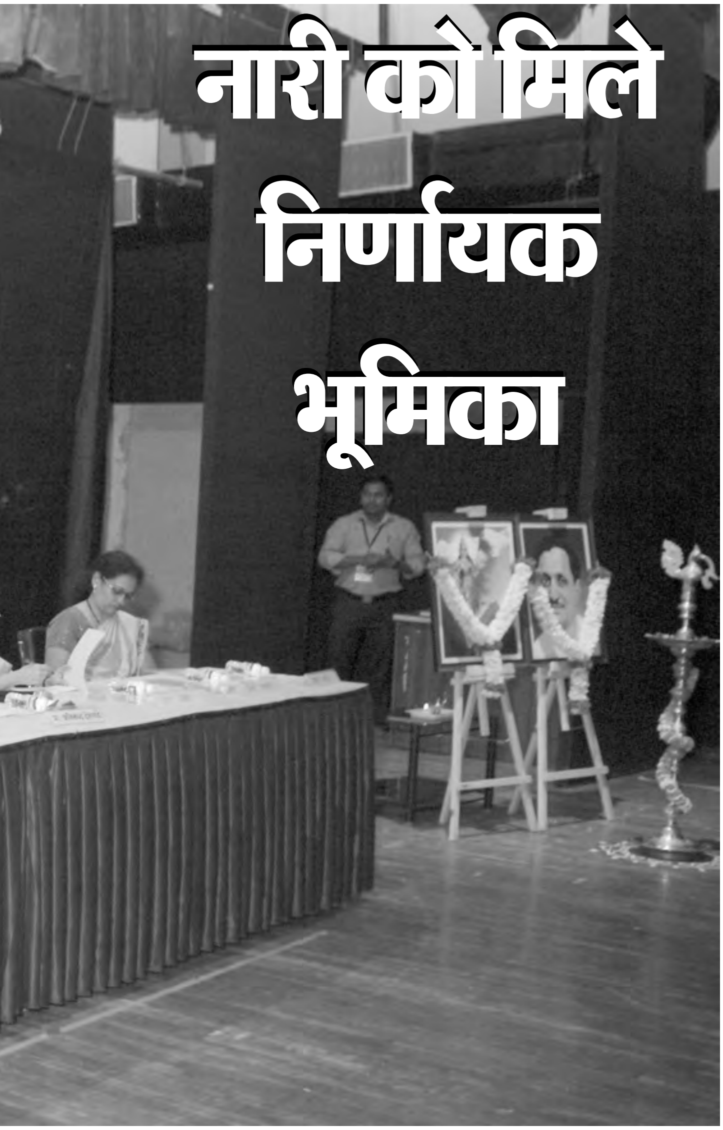

मानसिकता को चुनौती बताते हुए इसमें बदलाव लाने की आवश्कता बताई। भारतीय नारी शज़्ति की संस्थापिका निर्मला आप्टेजी ने कहा कि महिला अधिकार पर विश्व स्तर पर आंदोलन हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत में नारी के प्रति सोच बदली है, लेकिन इसमें अभी व्यापकता की कमी है। जिस कारण नारी को न्याय नहीं मिल रहा है। भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विनय सहस्त्रबुद्धे ने कहा कि नारी को निर्णय प्रक्रिया के केन्द्र में लाने का मतलब पुरूष के अधिकार में कटौती नहीं है। हमें इस सोच में परिवर्तन लाना होगा, तभी हम नारी को समानता में ला सकते हैं। उनका कहना है कि दोनों को सामान अवसर मिले इस दृष्टि से इसे देखने की आवश्यकता है। आज की शिक्षा व्यवस्था में भी महिलाओं को कमजोर दिखाने की कोशिश की जाती है। इसमें सुधार की जरूरत है। महिला को वस्तु के रूप में देखने का दृष्टिकोण बदलने की आवश्यकता है। हमें नारी को समानता के रूप में देखने की आवश्यकता है। वास्तव में यह सुधार इसलिए नहीं हो पा रहा ज़्योंकि हम चीज को पुरूष मानसिकता से देखा जाता है। मध्यप्रदेश की महिला और बाल विकास मंत्री श्रीमती अर्चना चिटणीस ने कहा कि हमारी संस्कृति में नारी-पुरुष को अलग-अलग मानने की परंपरा नहीं है। हमारी विकास की संकल्पना उपभोग पर नहीं बल्कि उपयोग पर है। असली नेतृत्व तो श्रेय देने में है और महिला ये काम हर जगह करती है। महिला समन्वय की राष्ट्रीय संयोजिका गीता गुंडे ने कहा की नारी-पुरुष समानता के लिए केवल पुरुषों की मानसिकता बदलने से कुछ नहीं होगा। महिलाओं का स्थान ज़्या हो? यह तय करने के लिए महिलाओं की मानसिकता में भी परिवर्तन की आवश्यकता है। नारी को पुरुषों जैसा बंधनमुक्त जीवन मिले यह पश्चिमी सज़्यता यहां उचित नहीं है। केवल नारी-पुरुष समानता से महिला को निर्णय प्रक्रिया में स्थान नहीं मिलेगा। उसके लिए दीनदयालजी के एकात्म भाव की आवश्यकता है। समाज के विभिन्न क्षेत्र में आज महिलाओं की कितनी सहभागिता है इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है और इसमें वृद्धि होने के लिए नियोजन पूर्ण प्रयास करने की जरूरत है। संगोष्ठी में आठ राज्यों के 52 संगठनों की 145 प्रतिभागी महिलाओं ने हिस्सा लिया। जिसमें भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष विजया रहाटकर, महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष पूर्णिमा आडवाणी, रागिणी चंद्रात्रे, जाई वैद्य , मोनिका अरोरा, डा. वसुधा कामत, ज्योति चौथाईवाले, डा. दिव्या गुप्ता, रश्मि शुज़्ला, निरुपमा देशपांडे, डा.नाहिद शेख, शताज़्दी पाण्डे, डा.नीलम गोर्हे प्रमुख रहीं।

संसाधन के संयमित उपयोग से होगी प्रगति

नई दिल्ली। पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी के एकात्म मानववाद में जो परिकल्पना की गई थी, भारत का विकास उसी अवधारणा पर हो सकता है। दीनदयालजी की अवधारणा अनूठी थी। उनका मत एकदम ठीक था कि मनुष्य की प्रगति का अर्थ मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की एक साथ प्रगति से होता है। यह एहसास होना चाहिए कि आर्थिक प्रणाली का उद्देश्य असाधारण उपयोग नहीं बल्कि उपलज़्ध संसाधनों का अच्छी तरह से नियंत्रित उपयोग होना चाहिए। प्रकृति के शोषण पर भरोसा करने के बजाय, हमें प्रकृति को बनाए रखने की आवश्यकता है। उन्होंने सभी के लिए रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य के संरक्षण के साथ संयमित खपत के जरिए पूंजी निर्माण के महत्व पर जोर दिया था। हम उसी रास्ते पर चलकर देश का सर्वागींण विकास कर सकते हैं। विज्ञान भवन में 23-24 सितंबर, 2017 तक दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा रिसर्च एंड इंफॉर्मेशन सस्टेनेबल डेवेलपमेंट विषय पर आयोजित संगोष्ठी में विभिन्न वज़्ताओं ने कही।

इस अवसर पर केन्द्रीय वित्तमंत्री श्री अरूण जेटली ने कहा कि भारत ने निरंतर विकास लक्ष्य (एसडीजी) के पूर्ण स्वामित्व का भी आश्वासन दिया है। ऐसा भारत ने वैश्विक प्रतिवद्धताओं को सज़्मानित करने के लिए नहीं बल्कि अपने नागरिकों के कल्याण और कल्याण को सुनिश्चित करने के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किया है। भारत की आकांक्षाओं और कार्यों की उच्च्च मात्रा दूसरों से बेमिसाल है और भारत प्रतिमान के अपने रास्ते पर स्थिर है, वैचारिक और संचालन स्तर पर दोनों ही परिवर्तन करता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय 20वीं सदी के सबसे बड़े विचारकों में से थे। उन्होंने प्राचीन भारतीय दर्शन और अध्यात्मिकता में निहित मनुष्य और प्रकृति के एकीकृत अस्तित्व की धारणा की महिमा की थी। उन्होंने इस दर्शन को अभिन्न मानवतावाद कहा था। पुरातन ज्ञान के हिसाब से हर व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक कल्याण आवश्यक घटक हैं। उन्होंने रेखांकित किया कि भारतीय संस्कृति संघर्ष, विरोधाभास की बजाय परस्पर निर्भरता, सहयोग और संयम की नींव पर है। वह दृढ़ दृष्टि थी की विविधताओं के बावजूद भारत एकसूत्र वाला राष्ट्र रहा है। उन्होंने सुझाव दिया कि मनुष्य केवल समाज में एकीकृत नहीं है, वह दुनिया या प्रकृति का अभिन्न अंग है। भारतीय परंपरा में मां की पूजा की जाती है। प्रकृति प्रदूषित करना पाप समझा जाता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के मुताबिक, देश की अर्थ व्यवस्था की मुज़्य अवधारणा मनुष्य का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। हमें एक ऐसी प्रणाली की जरूरत है जिसमें मनुष्य की अपनी बेजोड़ पहल और सामाजिक मूल्यों के कारण विकास को नई दिशा दी जा सके। उन्होंने व्यज़्ति, शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के अभिन्न अंग को अभिव्यज़्ति माना था। मनुष्य की प्रगति का अर्थ है मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की एक साथ प्रगति। यह एहसास होना चाहिए कि हमारी आर्थिक प्रणाली का उद्देश्य असाधारण उपयोग नहीं करना चाहिए, लेकिन

उपलज़्ध संसाधनों का अच्छी तरह से नियंत्रित उपयोग होना चाहिए। प्रकृति के शोषण पर भरोसा करने के वजाय, हमें प्रकृति को बनाए रखने की आवश्यकता है। उन्होंने सभी के लिए रोजगार की सुरक्षा, शिक्षा और स्वास्थ्य के संरक्षण और संयमी खपत के जरिए पूंजी निर्माण के महत्व पर जोर दिया था। उन्होंने विकेंद्रीकृत अर्थ व्यवस्था, जीवन के सांस्कृतिक और अन्य मूल्यों की सुरक्षा का समर्थन किया था। उन्होंने अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने, समाज की प्रकृति की रक्षा और पोषण के लिए मानवतावाद के आदर्शों के आधार पर एक सैद्धांतिक दृष्टिकोण का जोरदार समर्थन किया था।

आज देश में उसी अवधारणा को लेकर काम किया जा रहा है। विश्व स्तर पर सतत विकास लक्ष्यों की शुरूआत और वर्तमान समय के नए उत्साह को ध्यान में रखते हुए प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की दृष्टि में नया भारत तैयार करने के उद्देश्य से प्रगति, समृद्धि और स्थिरता पर काम किया जा रहा है। भारत स्थिरता के प्रभावशाली मानकों के आधार पर विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने की कोशिश कर रहा है। साथ ही अपने लोगों को उदार लोकतांत्रिक अधिकारों के साथ मिलकर और गहरी और व्यापक जातिवाद पर काबू पाने और अन्य सामाजिक बुराइयों को एकीकृत मानवतावाद के आदर्शों को ध्यान में रखते हुए इसे जोर देने की जरूरत है कि सभी एसडीजी में एकता है। इसलिए, एक विशेष एसडीजी का क्रियान्वयन अलगाव में नहीं हो सकता। एसडीजी को एक एकीकृत तरीके से हासिल किया जाता है। जिसमें सभी एसडीजी के एक साथ क्रियान्वयन के लिए प्रयास किए जाते हैं। एक एसडीजी के सफल क्रियांवयन ने अन्य एसडीजी के कार्यान्वयन को मजबूत किया है। पूरे कार्यान्वयन तंत्र को सहयोग की भावना के साथ काम करना चाहिए। ऐसा करने में एसडीजी सामग्री समृद्धि, इम्टिी और स्थिरता के पूर्ण अनुभव के लिए एक-दूसरे को और समृद्ध बनाएगा। सतत आर्थिक विकास: एसडीजी 8 और एसडीजी 12 को कार्यान्वित करना एसडीजी 8 और उसके संबंधित लक्ष्य उत्पादन के सभी स्तरों पर उत्पादकता, रचनात्मकता और नवीनता को कम करके उच्च आर्थिक विकास को प्राप्त करने के लिए एक व्यापक नुस्खे हैं। लेकिन साथ ही संसाधन दक्षता की देखभाल के साथ समावेशी माध्यम

लाभदायक और सुरक्षित रोजगार और बड़े और छोटे, औपचारिक और अनौपचारिक और पुरुष और महिला के बीच असमानताओं को तोड़ना भी है। एसडीजी 12 और उसके लक्ष्य जो उत्पादन में कचरे को कम करते हैं अपने मूल में बेकार उपभोग के विनियमन हैं। एसडीजी 12 में वकालत के रूप में स्थाई खपत और उत्पादन का टेंप्लेट, स्थाई संसाधन और प्राकृतिक संसाधनों के कुशल उपयोग

अंतरराष्ट्रीय समझौतों की कठोरता के साथ कार्यान्वयन का सुझाव देने के अलावा अक्षम जीवाश्म ईंधन सब्सिडी को तर्कसंगत बनाना। इससे नीति निर्माताओं को आर्थिक समृद्धि के प्रतिमान के प्रति एक विश्वसनीय रोडमैप तैयार करने में सक्षम होना बेहद मुश्किल होता है। जो कि पर्यावरण की दृष्टि से स्थाई और अंतर-पीढ़ीगत न्यायसंगत है। एसडीजी 12 एक करीबी सन्निकटन है और विषय पर दिशा तैयार करने में एक सराहनीय प्रयास है। इसलिए, एसडीजी 8 और 12 दोनों के एक साथ मिलकर कई मेरिट देख सकते हैं। मानव एवं प्रकृति के बीच सामंजस्य के लिए बहुआयामी टिकाऊ विकास के विचार के लिए महत्वपूर्ण है। प्राकृतिक आवास के संरक्षण, प्रदूषण का मुकाबला करने, कृषि-जलवायु परिस्थितियों में परिवर्तन का सामना करने के लिए कार्यों का संगम, एकीकरण और संगम है। एकीकरण के उनके दृष्टिकोण में एसडीजी ने 17 लक्ष्यों के विकास के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय आयामों को मजबूती से जोड़ा है। आर्थिक नीति बनाने के लिए सामाजिक रूप से संवेदनशील होना चाहिए। ज़्योंकि अच्छी तरह से विकसित और न्यायसंगत समाज आर्थिक विकास, समृद्धि और समस्त विकास के लिए सबसे अधिक ठोस पारिस्थितिक तंत्र प्रदान करता है। अर्थव्यवस्था और समाज एक ऐसे वातावरण में कामयाब हो सकता है जो कम से कम क्षतिग्रस्त और स्थाई रूप से शोषण किया जाता है। मानव एवं प्रकृति के बीच का आंतरिक संबंध का दर्शन पुराना है। यह समय का परीक्षण किया हुआ और अनंत है। मानव अस्तित्व प्रकृति से तैयार किए गए संसाधनों के बिना अमान्य है और आसपास के लोगों की कल्पना के बिना मानव चेतना शून्य है। एसडीजी को पाठ्यफ्रम सुधार के एजेंडे के रूप में देखा जाता है। यह बहुस्तरीय दृष्टिकोण और सभी स्तरों पर स्थिरता प्रथाओं को अपनाने पर जोर देता है। संगोष्ठी में दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्रजीत सिंह, संस्थान के महासचिव श्री अतुल जैन, केन्द्रीय मंत्री डा. हर्षवर्धन, केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, श्री के.एन.गोविंदाचार्य, डा. महेश चंद्र शर्मा, भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव राममाधव, स्वदेशी जागरण मंच के अश्विनी महाजन, इंदिरागांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्यक्ष श्री रामबहादुर राय ने भी अपने विचार रखे। ■

को कवर करता है। खाद्य अपव्यय और भोजन घाटे में कमी, रसायन और कचरे के पर्यावरण के अनुकूल प्रबंधन, रोकथाम, कटौती, रीसाइज़्लिंग और पुन: उपयोग के माध्यम से अपशिष्ट चीजों की कमी, सख़्त रिपोर्टिंग और निगरानी के माध्यम से स्थिरता अनुपालन का प्रोत्साहन, स्थिरता उन्मुख सार्वजनिक खरीदी को अपनाने, जागरूकता, वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमता, दीर्घकालिक पर्यटन और इन क्षेत्रों में

एकात्म मानवदर्शन की कथा रूप में प्रस्तुति

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन चरित्र को कथा के रूप में प्रस्तुत किया गया। यह प्रयोग सबसे पहले दीनदयाल शोध संस्थान दिल्ली में हुआ, इसके बाद इस तरह के कथा का आयोजन भोपाल, इंदौर और मुज़्बई में किया गया। यह अपनी तरह का अनूठा प्रयोग था। इस मौजूदा परिवेश में पंडित दीनदयाल के विचारों की प्रासंगिकता बहुत बढ़ गई है। 20वीं सदी में उन्होंने जिस तरह के भारत की परिकल्पना की थी। भारत के विकसित राष्ट्र बनाने के लिए उन्होंने जो मूलमंत्र दिए थे, उसे हर कोई जानना और समझना चाहता है। उनकी उसी अवधारणा को सहजता से सामने रखने के लिए कथा का स्वरूप बनाया गया। जिसमें व्यास यानी पंडितजी के विचारों को कथा के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दिल्ली प्रान्त के सहसंचालक आलोक कुमारजी द्वारा प्रस्तुति दी गई।

दीनदयाल उपाध्याय के जन्मशताज़्दी वर्ष में उनके जीवन और कार्य को प्रेरित करती कथा में पंडितजी के कठिनाईयों भरे बचपन का चित्रण किया गया। छोटी आयु में पिताजी और माताजी का साथ छूटने के बाद वह अपने मामाजी के साथ रहे। उनके मामाजी भी जल्दी साथ छोड़

दिए। उनके देहावसान के बाद पंडितजी ने न केवल संघर्ष के साथ पढ़ाई पूरी की, बल्कि मेधावी छात्रों में भी रहे। उनके जीवन की बाल्यावस्था से युवावस्था तक बार-बार ऐसा होता रहा मगर इन परिस्थितियों में भी वे शिक्षा में निरंतर अव्वल रहे। सभी विपरीत परिस्थितियों में उन्होंने अपने सेवाभाव को कायम रखा। महाविद्यालयीन जीवन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के भाऊराव देवरसजी के राष्ट्रीय विचार से प्रेरित होकर वह संघ से जुड़ गए। संघ प्रचारक के नाते अपनी मातृभूमि की सेवा के लिए वह निकल पड़े। प्रचारक जीवन में अपने शांत, संयमित तथा चिंतनशील स्वभाव के कारण उन्हें सभी लोग पसंद करते थे। दीनदयालजी के समाज चिंतन अर्थात एकात्म मानवदर्शनको सामने लाया गया। पंडितजी हमेशा मानवजाति के निर्माण से लेकर निरंतर अविष्कार को लेकर चिंतन करने वाले व्यक्ति थे। वह कहा करते थे कि सदैव से मानव सुख और आनंद की खोज करता रहा है। मानव के लिए केवल अन्न, वस्त्र आवश्यक नहीं है। मानव शरीर, मन, बुद्धि वाला है तो स्वाभाविक इसका समन्वय रखकर व्यवहार करने की अपेक्षा है। उनका मानना था कि अभिव्यक्ति जितनी विस्तारित क्षेत्र में जाती है, वह बदलती रहती है और अधिक व्यापक होती है। इसलिए शरीर की आवश्यकताएं पूर्ण करना जितना आवश्यक है उतना ही मन और बुद्धि का विकास करना भी जरूरी है। इन सब में समन्वय बनाकर हम सब चले तो सुख और शांति अनुभव लेना आसान होगा। अर्थात व्यक्ति, समाज और प्रकृति की मर्यादा में विचार करें तो सब उचित पद्धति से होगा। विविधता को एकता में पिरोने वाले विलक्षण व्यक्ति के रूप में दीनदयाल उपाध्याय की पहचान थी। वे अपने लिए नहीं जिए, बल्कि भारतमाता के लिए अपना पूरा जीवन न्यौछावर कर दिया। दीनदयालजी का जीवन दिवाली की आतिशबाजी की तरह नहीं था, जो सबको दिखती हैं, पटाखों की तरह भी नहीं था जो सबको जोर से सुनाई देता हैं। किसी देवालय के कोने में जल रही शांत अगरबत्ती की तरह था जो कण-कण जलते हुए सुगन्धित कर देती है। जिस तरह महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण ने दोनों सेनाओं के बीच में खड़े होकर गीता कह दी गई थी ऐसे ही राष्ट्र को जगाने के लिए पंडितजी ने जनसंघ के निर्माण और प्रक्रिया के बीच के चिंतन में से 1964 में एकात्म मानव दर्शन ने जन्म लिया था। इस कथा का आयोजन दीनदयाल शोध संस्थान में 9-10-11 फरवरी 2016 को नई दिल्ली में हुआ। 16-17-18 दिसम्बर 2016 को समन्वय भवन भोपाल में हुआ। 26-27-28 जून 2017 को रवीन्द्र नाट्यगृह इंदौर में और 24-25 सितम्बर 2017 को तेरापंथ भवन सभागृह मुम्बई में हुआ।

नानाजी ने दिखाई

चित्रकूट। ग्रामोदय मेला, चित्रकूट में अनुकरणीय आयोजन था। ग्रामीण भारतीयता, भारतीय संस्कृति, सदियों पुरानी परज़्परा, सामाजिक व्यवस्था, खेती की पुरातन पद्धति–नवीनतम् प्रयोग सहित सज़्पूर्ण भारत जैसे धरा पर एक जगह मौजूद था। स्वाधीनता के बाद जिस भारत की परिकल्पना की गई थी, यदि उस दिशा में काम हुआ होता तो ग्रामीण भारत कुछ इसी तरह का होता। अपनी बोली, अपना पहनावा, अपना खान–पान, अपना रहन–सहन लेकिन, संस्कृति सबकी एक जैसी। दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय प्रांगण में 24 से 27 फरवरी तक लगाया गया ग्रामोदय मेला ग्रामवासियों को नई जानकारियों से तथा देश के योजनाकारों को ग्रामीणों की अपनी पहल और पुरुषार्थ से किए गए काम से परिचित कराने के उदेश्य से लगाया गया था। दीनदयाल शोध संस्थान का यह प्रयास काफी हद तक सार्थक भी रहा। मेले में लगी प्रदर्शनी के जरिए ग्रामीणजनों को कई महत्वपूर्ण जानकारियां हासिल हुई। दिल्ली से आए योजनाकारों को भी ग्रामीण जरुरत और उनकी कार्यपद्धति को जानने का

जीने की राह

मौका मिला।

ग्रामोदय मेला का आकार इस तरह से तैयार किया गया था, जिसमें आधुनिक और पुरातन भारत का स्वरूप सामने आ सके। विशाल प्रांगण में तीन बड़े-बड़े पंडाल बनाए गए थे। उन पंडालों में केन्द्र और राज्य सरकार के विभिन्न विभागों की योजनाओं की प्रदर्शनी थी। पंडाल में ग्रामीणों के स्टाल भी थे। विशाल पंडाल के बाहर लगभग सौ स्टाल लघु-कुटीर उद्योग से जुड़े कारीगरों के सामान के थे। पचास स्टाल महिला स्वसहायता समूहों द्वारा निर्मित की गई सामग्री के थे। उन पंडालों से थोड़ा हटकर विशाल मंच बनाया गया था। जिसमें दिन में अलग-अलग आयोजन होते थे और रात में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ करता था। चार दिन के इस आयोजन में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र दिल्ली के 250 कलाकारों द्वारा नृत्य और गीत के कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। दूसरी तरफ राममनोहर लोहिया सभागार में विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का कार्यक्रम चला। उप्र और मप्र के कई हिस्सों से प्रदर्शनी देखने हजारों लोग आए, वहीं इस दौरान दो राज्यपाल, केन्द्र और राज्य सरकार के मंत्रियों का भी चित्रकूट आगमन हुआ।

ग्रामोदय मेला का उद्घाटन तत्कालीन बिहार के राज्यपाल माननीय रामनाथ कोविंदजी द्वारा किया गया। उद्घाटन में दीनदयाल शोध संस्थान के संरक्षक माननीय मदनदासजी, दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष माननीय वीरेन्द्रजीत सिंह जी, केन्द्रीय सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्री श्री थावरचंद्र गहलोत, केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री सुदर्शन भगतजी खासतौर पर शामिल हुए। उदघाटन समारोह में श्री कोविंद ने कहा कि एकात्म मानवदर्शन के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी के चिंतन में हमेशा ही ग्रामों का उत्थान रहा है। चित्रकूट में श्रद्धेय नानाजी देशमुख ने दीनदयालजी के सपने को धरातल पर उतारा और उसी का नतीजा है कि इस वनांचल के गांव विकास के मार्ग पर तेजी से आगे बढ़े हैं। राज्यपाल ने कहा कि भारत गांव में बसता है, हर व्यक्ति के जीवन में एक प्रश्न रहता है कि उन्होंने अपने जीवन में ज़्या किया? राष्ट्रऋषि नानाजी ने समाज को एक दिशा दी कि एक व्यक्ति अपने जीवन में ज़्या नहीं कर सकता। श्रद्धेय नानाजी ने समाज के लिए सिर्फ जीते जी ही नहीं किया, बल्कि अपना देहदान करके शरीर को भी समाज के लिए दे दिया। उन्होंने कहा कि भारत माता से यदि माता शज़्द हटा दिया जाये तो भारत केवल एक भूखण्ड मात्र रह जाएगा। दीनदयाल शोध संस्थान पंडितजी के सपनों का भारत तैयार कर रहा है। संस्थान की समाज शिल्पी दंपति योजना जैसे अनेक अनुकरणीय प्रयासों से भारत सरकार भी अपनी योजनाओं में मार्गदर्शन ले रही है। श्री थावरचन्द्र गहलोत ने कहा कि राष्ट्रऋषि नानाजी ने पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी के एकात्म मानवदर्शन को वसुधैव कुटुज़्बकम के आधार पर साकार रुप दिया है। आयोजन में केन्द्रीय जलसंसाधन मंत्री

सुश्री उमा भारती भी शामिल हुईं। उन्होंने कहा कि मनुष्य को तन और मन से सदैव स्वस्थ रहना चाहिए, जो आज के परिवेश में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि ग्रामोदय मेला ही भारत का भविष्य है और हर विभाग को इस मेले से सीख लेते हुए मेले को गुरू बनाना चाहिए। नानाजी ने जो सपना देखा था वह अब व्यापक रूप ले चुका है। नानाजी भले ही शरीर से हमारे बीच न हों पर इस क्षेत्र के लोगों के मन में नानाजी सदैव बने रहेंगे। नानाजी जब जीवित थे, तब एक आत्मा थे अब वे सर्वव्यापी हो गए हैं। मैं नानाजी की बहुत लाड़ली थी। वे मुझमें हमेशा जीवित रहेंगे। सुश्री उमा भारती ने बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ का संदेश देते हुए कहा कि जितना खर्च आप बेटी की शादी में करते हैं, उतना खर्च आप बेटी की पढ़ाई में कर दीजिए। आपको शादी में ज्यादा खर्चा नहीं करना पड़ेगा। बेटी खुद आत्मनिर्भर हो जाएगी। ग्रामोदय मेले के समापन के दिन केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर और भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विनय सहज़्बुद्धे भी शामिल हुए। इस अवसर पर श्री तोमर ने कहा दीनदयाल शोध संस्थान की योजना से नानाजी की कर्मभूमि में यह विशाल मेला भली भाँति सज़्पन्न हुआ है। आजादी के बाद समग्र विकास की बातें होती रही हैं। सरकारों द्वारा प्रयास भी होते रहे, लेकिन महात्मा गाँधी, विनोवा भावे के समग्र ग्राम विकास के चिंतन को जनता के पहल एवं पुरुषार्थ के आधार पर साकार रूप नानाजी ने दिया। देश के कर्मठ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी नानाजी के बताये मार्ग के आधार पर देश को विकास की मुज़्यधारा में जोड़ने के व्यवहारिक प्रयास में सतत् लगे हुये हैं।

ग्रामोदय मेले में भारत के कई हिस्सों से सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देने आए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र दिल्ली के 250 लोक कलाकारों ने बारी-बारी से सांस्कृतिक प्रस्तुति देकर लोगों का मन मोहा। चित्रकूट में लोक

कलाकारों की टोली निकली। रामघाट से जानकीकुंड तक निकली शोभायात्रा को देखने सड़क किनारे लोगों की भीड़ जमा थी। हिमाचल प्रदेश के कलाकारों ने महाभारत युद्ध पर आधारित लोकनृत्य ठोडा की प्रस्तुति दी। मप्र के सागर जिले की महिला कलाकारों ने लोकरंग बधाई नृत्य और चित्रकूट के कलाकारों ने राई कोलाई का प्रस्तुतिकरण दिया। छत्तीसगढ़ के कलाकारों ने रामनामी, पंडवानी, नाचा और पंथी गायन की प्रस्तुतियां देकर कार्यक्रम को जीवंत कर दिया। उतराखंड के कलाकारों ने हिलजामा की प्रस्तुति देकर सबका मन मोह लिया। केरल के कलाकारों ने पुलीकली टाइगर और कुमाठी की प्रस्तुति दी। प्रज़्यात लोकगायिका श्रीमती मालिनी अवस्थी के भोजपुरी गीत को खूब सराहना मिली। पार्श्वगायक मोहित चौहान ने भी सुमधुर गीतों की प्रस्तुति दी।

ग्रामोदय मेला में तीन दिवसीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसमें उप्र, मप्र के 17 विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। निबंध में 186 तथा चित्रकला में 97 विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। विद्यार्थियों के बौद्धिक क्षमता के हिसाब से समूहों में प्रतियोगिता कराई गई। निबंध प्रतियोगिता में समाज से जुड़े विषयों का चयन किया गया था। जल प्रबंधन आज की आवश्यकता, प्लास्टिक पॉलीथिन का दुष्प्रभाव, पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्तित्व एवं कृतित्व जैसे विषयों पर छात्रों ने अच्छे निबंध लिखे। इसके अलावा चित्रकूट के प्राकृतिक दृश्य, ग्रामीण परिवेश के किसी मेले का दृश्य, चित्रकूट का दर्शनीय स्थल, ऐतिहासिक अथवा पौराणिक गाथा, पंडित दीनदयाल उपाध्याय अथवा राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख का आलेख चित्र बनाने को दिया गया। इसमें विद्यार्थियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन सामने आया।

चित्रकूट के दीनदयाल परिसर में समग्र ग्राम विकास की चुनौतियां एवं समाधान, आजीवन स्वास्थ में आयुर्वेद-योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, युगानुकूल सामाजिक पुर्नरचना जैसे विषयों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। ग्रामोदय मेला के तीसरे दिन हरियाणा के राज्यपाल माननीय कप्तान सिंह सोलंकी, केन्द्रीय सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उपक्रम राज्यमंत्री गिरिराज सिंह, मप्र की महिला बाल विकास मंत्री

श्रीमती अर्चना चिटनिस, हरियाणा के ग्रामीण विकास मंत्री ओमप्रकाश धनखड़ शामिल हुए। राष्ट्रीय संगोष्ठी में हरियाणा के राज्यपाल श्री सोलंकी ने अपने विचार व्यज़्त करते हुए कहा कि हम सबलोग बहुत सौभाग्यशाली हैं, जो नानाजी द्वारा स्थापित इस संस्थान में इस विशाल ग्रामोदय मेले में शामिल होने का अवसर मिली। देश 1947 में आजाद तो हो गया, लेकिन ग्रामीण विकास की परिकल्पना को साकार रूप नानाजी ने दिया। आजादी के बाद महात्मा गांधी ग्रामीण विकास के कुछ ठोस आधार प्रस्तुत करते इससे पहले ही उन्होंने भौतिक शरीर छोड़ दिया। राष्ट्रऋषि नानाजी ने ग्रामोदय प्रकल्प की स्थापना कर दीनदयालजी के विचारों को प्रकल्प के माध्यम से साकार रुप देने का जो काम किया उसी की एक कड़ी चित्रकूट है। दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से नानाजी ने देश के चार अलग-अलग स्थानों पर मॉडल रुप में प्रकल्प खड़े किए। गोण्डा, बलरामपुर(उप्र) बीड़, नागपुर(महाराष्ट्र) चित्रकूट (उप्र-मप्र)। नानाजी के इस क्रियात्मक मॉडल से ही भारत उदय हो सकता है इसे आज हमारे कर्मयोगी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी भी मानने लगे हैं।

ग्रामोदय मेले में लकड़ी से बना घरेलु उपयोग के सामान की दुकान सबको आकर्षित की थी। उज़्रप्रदेश के सहारनपुर से आए इकराम ने बताया कि पहले दिन से ही दुकान पर ग्राहकों की भीड़ लगनी शुरू हो गई थी। उनकी दुकान में लकड़ी के बर्तन, रसोई के सामान, दीवार घड़ी, कलम और खिलौने सहित अन्य उपयोगी और सजावटी सामनों की खूब ब्रिकी हुई। दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित ग्रामोदय मेला में कृषि प्रदर्शनी में जैविक खेती की विस्तृत जानकारी किसानों को दी गई। किसानों को बताया गया कि कैसे जैविक खेती करके उपज को बढ़ाया जा सकता है। केन्द्र तथा राज्य सरकार के विभिन्न विभागों की प्रदर्शनी में भी भारी भीड़ रही। केन्द्रीय सड़क परिवहन, राजमार्ग व जहाजरानी मंत्रालय, कौशल विकास मंत्रालय, केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय, केन्द्रीय कृषि मंत्रालय के अलावा मप्र सरकार के लगभग सभी मंत्रालय से संबंधित

योजनाओं की प्रदर्शनी लगाई गई थी। ग्रामोदय मेले में कई स्व-सहायता समूहों ने अपनी प्रदर्शनी लगाई थी। ग्रामोदय मेले में बांस से बने आभूषण महिलाओं के बीच आकर्षण का केन्द्र रहा।

अनुपमा पांडे सतना से बांस के आभूषण लेकर ग्रामोदय मेले में आई थीं। उनके स्टॉल पर बांस से निर्मित फर्नीचर और सजावटी सामग्री भी उपलब्ध थे, लेकिन सबसे अधिक मांग बांस से बने गले के हार, कान की बाली, झुमके, अंगूठी और कंगन के थे। मेले में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विवि भोपाल ने पत्रकारिता और संचार जैसे सामयिक विषयों पर केन्द्रित पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया था। पुस्तक प्रदर्शनी में मीडिया मैनेजमेंट, मीडिया लॉ एंड एथिक्स, रिपोर्टिंग, कम्युनिकेशन रिसर्च, टेलीविजन प्रोडक्शन, भारतीय जनजातीय समाज, मीडिया क्रांति संबंधित पुस्तकें लोगों को आकर्षित कर रही थीं। युवा उद्यमियों को सपने देखने और उन सपनों को साकार करने के लिए राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (एनएसआईसी) बड़े मददगार के रूप में सामने आया है। मेले में एनएसआईसी की योजनाओं से संबंधित जानकारी युवा उद्यमियों को दी गई। समापन के दिन यानी 27 फरवरी को परमपूज्य सरसंघचालक डा. मोहनराव भागवतजी की मौजूदगी में ग्राम विकास को लेकर खुला विचार-विमर्श चला। चित्रकूट अंचल के ग्रामवासियों द्वारा केन्द्र और राज्य सरकार के मंत्रियों से जहां विकास के अपने अनुभव साझा किए गए, वहीं सरकार के प्रमुख लोगों से सवाल करके विकास के किए जा रहे कामों का ब्यौरा भी लिया गया। दरअसल, 27 फरवरी को श्रद्धेय नानाजी की पुण्यतिथि भी थी, जिसमें समाज की सहभागिता से भंडारे का आयोजन किया गया। इसमें बारह हजार परिवारों द्वारा सौ कुंटल से अधिक अनाज का अंशदान किया गया था।

108 केन्द्रों पर एक साथ चिकित्सा शिविर

स्वास्थ्य संवर्धन का अनुपम प्रयोग

चित्रकूट। दीनदयाल शोध संस्थान के 108 ग्राम स्वावलंबन केन्द्रों में स्वास्थ्य शिविर लगाकर लोगों का उपचार किया गया। गांव में आमतौर पर स्वच्छता के अभाव से होने वाली बीमारियों के बारे में भी लोगों को बताया गया। एक दिवसीय शिविर में महाराष्ट्र मेडिकल कॉलेज के अध्ययनरत चिकित्सक, सतना, कर्वी तथा चित्रकूट के अस्पतालों के चिकित्सकों ने भी सहभागिता निभाई। शिविर में लगभग 16 हजार ग्रामीणों के स्वास्थ्य की जांच की गई और उन्हें औषधी उपलज़्ध कराई गई।

शिविर के बाद विवेकानन्द सभागार दीनदयाल परिसर में विचार-विमर्श रखा गया। जिसमें उप्र के स्वास्थ्य मंत्री आशुतोष टंडन भी शामिल हुए। स्वास्थ्य शिविर से लौटे चिकित्सक छात्रों ने अपने अनुभव सुनाए। महाराष्ट्र मेडिकल कालेज, रीवा, जबलपुर से चिकित्सा छात्रों का मत था कि गांव में कुछ जगहों पर स्वच्छता है, तो कुछ स्थानों पर अभी स्वच्छता को लेकर जागरूकता बढ़ रही है। महाराष्ट्र मेडिकल की छात्रा सुश्री ज्योति ने अपने अनुभव में बताया कि मानवता और विनम्रता को लेकर चलने का जो पाठ उन्होंने पढ़ा था चित्रकूट के गांवों में वह देखने को मिल रहा है। ज्योति ने कहा कि गांव से चिकित्सा की शुरूआत उनके लिए अच्छा है।. यहां आकर उन्होंने ग्रामीण जीवन को बहुत करीब से समझा। उप्र स्वास्थ्य व चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री आशुतोष टंडन ने कहा कि हर जगह स्वच्छता, अशिक्षा की समस्या को मिटाने का काम किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि उप्र के मुज़्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर प्रत्येक विधायक एक-एक विद्यालय को गोद लेकर हर स्तर पर उसकी चिन्ता कर रहा है। बेसिक, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा और तकनीकी शिक्षा के लिए हर स्तर पर सरकार प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि जीवन के लिए अब सिर्फ रोटी, कपड़ा और मकान की अवधारणा नहीं रह गई है। उसमें शिक्षित होना अब अनिवार्य हो गया है। इस अवसर पर विश्व आयुर्वेद परिषद के अध्यक्ष डा. बी.एन. गुप्ता ने कहा कि चिकित्सा क्षेत्र के बढ़ते आयामों और विविध स्वास्थ्य संगठनों के माध्यम से सेवा कार्य को आगे बढ़ाने का चलन बढ़ा है। इससे जो संस्कार और वातावरण बन रहा है वह निश्चित तौर पर भारत को परम वैभव की तरफ ले जाने वाला है। रामायणी कुटी के महंत रामहृदय दास जी महाराज ने कहा कि चित्रकूट अपने आप में एक औषधी केन्द्र है। सारा ज्ञान विलुप्त हो जाए तो चित्रकूट एक ऐसी धरा है जहां आने के बाद विशेष ऊर्जा प्राप्त होती है। संतोषी अखाड़ा के महंत रामजी दास महाराज ने कहा कि चित्रकूट हमारी आध्यात्मिक राजधानी है। यहां शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में अभिनव प्रयोग हो रहे हैं। राजकीय मेडिकल कालेज बांदा के डीन डा. डी. नाथ ने कहा कि जब तक समाज के अंतिम पंक्ति का सर्वांगीण विकास नहीं होगा तब तक भारत का उदय नहीं होगा। इसके लिए युवाओं के चिंतन को दिशा देने की जरुरत है। मप्र फार्मेसी काउंसिल के अध्यक्ष श्री ओम जैन ने कहा कि देश में शिक्षा और चिकित्सा इन दोनों क्षेत्र में हम सब सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने वाले कार्यकर्ता लगे है। खुशहाल गांव-खुशहाल समाज की परिकल्पना को साकार रुप देने का काम शुरू हो चुका है।

डीआरआई के प्रयास से बढ़ा पशुपालन

दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट के आरोग्यधाम परिसर में 1995 में गोवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र आरंभ किया था। 1978 में जयप्रभा ग्राम में तत्कालीन राष्ट्रपति द्वारा भारतीय गोवंश के उन्नयन का शुभारम्भ साहीवाल नस्ल के सॉड वितरण से किया गया। तभी से गोवंश के संरक्षण, संवर्धन, विकास का काम निरन्तर चल रहा है।

पशुपालन के लिए चित्रकूट अंचल में कई तरह के प्रयास किए गए। सतना जिले के बुन्देलखण्ड एवं बघेलखण्ड क्षेत्र में पशुधन की संज़्या सामान्य से अधिक है, किन्तु दुग्ध उत्पादकता का औसत सामान्य से बहुत कम है। गोवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र चित्रकूट ने कृषि विज्ञान केन्द्र, मझगवॉ के सहयोग से गुणवज़ायुक्त हरे चारे का उत्पादन एवं उपयोगिता का प्रयोग पालदेव गांव में पांच पशुपालकों के घर पर किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. रामप्रकाश शर्मा के अनुसार प्रत्येक पशुपालक को 10-10 प्लास्टिक की टोकरी उपलज़्ध कराई गई, जिनमें घर पर उपलज़्ध दाने (गेहूँ, जौ, मज़्का आदि) को 24 घंटे पानी में भिगाने के बाद बोया गया। दस दिनों के उपरान्त वह 6 इंच

बढ़ गया। यह प्रक्रिया इस क्रम में अपनाई गई कि प्रत्येक टोकरी में बोये गए दाने को दस दिन बाद ही खिलाने की निरंतरता बनी रहें। प्रत्येक दिन एक टोकरी अंकुरित दाना/चारा भैंस को खिलाया गया और उसी खाली हुई टोकरी में फिर से एक किलो दाना बो दिया जाता है। यह क्रम निरंतर बनाकर दूध उत्पादन की मात्रा का विश्लेषण किया गया, जिसमें पाया गया कि भैंस के दूध उत्पादन में औसतन 16 प्रतिशत की बढ़ोज़री हुई है। भारतीय गोवंश का संवर्धन के लिए उच्च क्षमता सज़्पन्न सॉड गांवों को दिए जा रहे हैं। जिनसे नई पीढ़ी की उत्पादकता में बढ़ोज़री हुई है। इसका परिणाम है कि गायों को पशुपालक अपने घर पर ठीक से संरक्षित करने लगे हैं। प्रत्येक ग्राम में पशुधन की व्यवस्थित

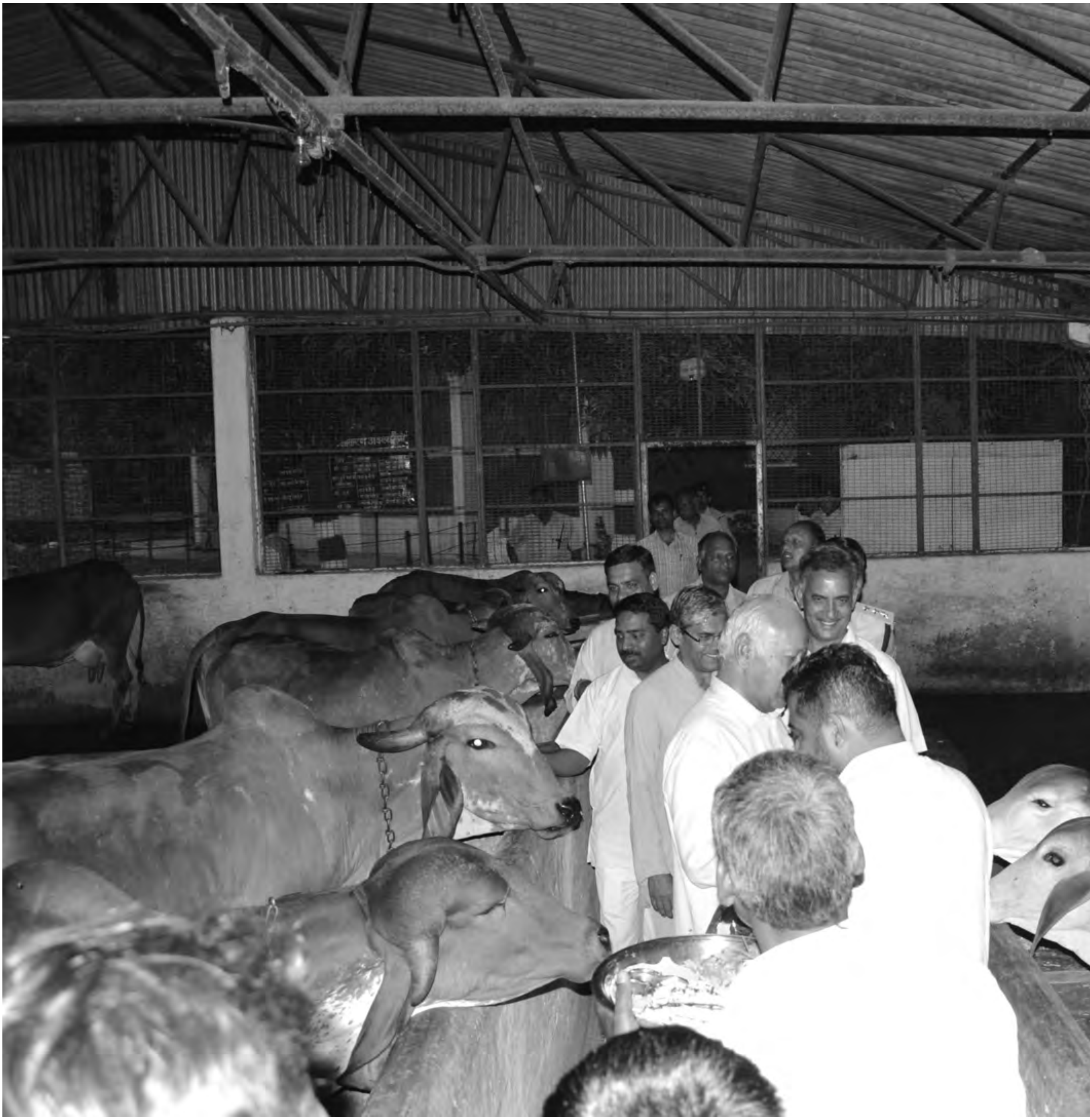

देख-रेख एवं पशुपालन सम्बन्धी आधुनिक तकनीकियों को पशुपालको तक पहुंचाने के लिए, 15 दिवसीय प्रशिक्षण देने की योजना है। इसमें दसवीं तक शिक्षित युवक का चयन करने की प्रक्रिया है ताकि आगामी समय में प्रशिक्षण हो सके। आप अपने ग्राम से एक योग्य युवक का चयन कराने में सहयोगी हो सकते हैं। बीमारियों से बचाव के लिए टीकाकरण कराया जाता है। प्रत्येक स्वावलंबन केन्द्र में पशु-टीकाकरण का आयोजन होता है। इसके अलावा पशु चिकित्सा शिविरों का आयोजन कर पशुओं को रोग से बचाने के उपाय बताए जाते हैं। पशुपालन का अभिप्राय केवल दूध उत्पादन नहीं है, बल्कि गाय का गोबर-गोमूत्र जीवनपर्यंत आवश्यक होता है। चित्रकूट में

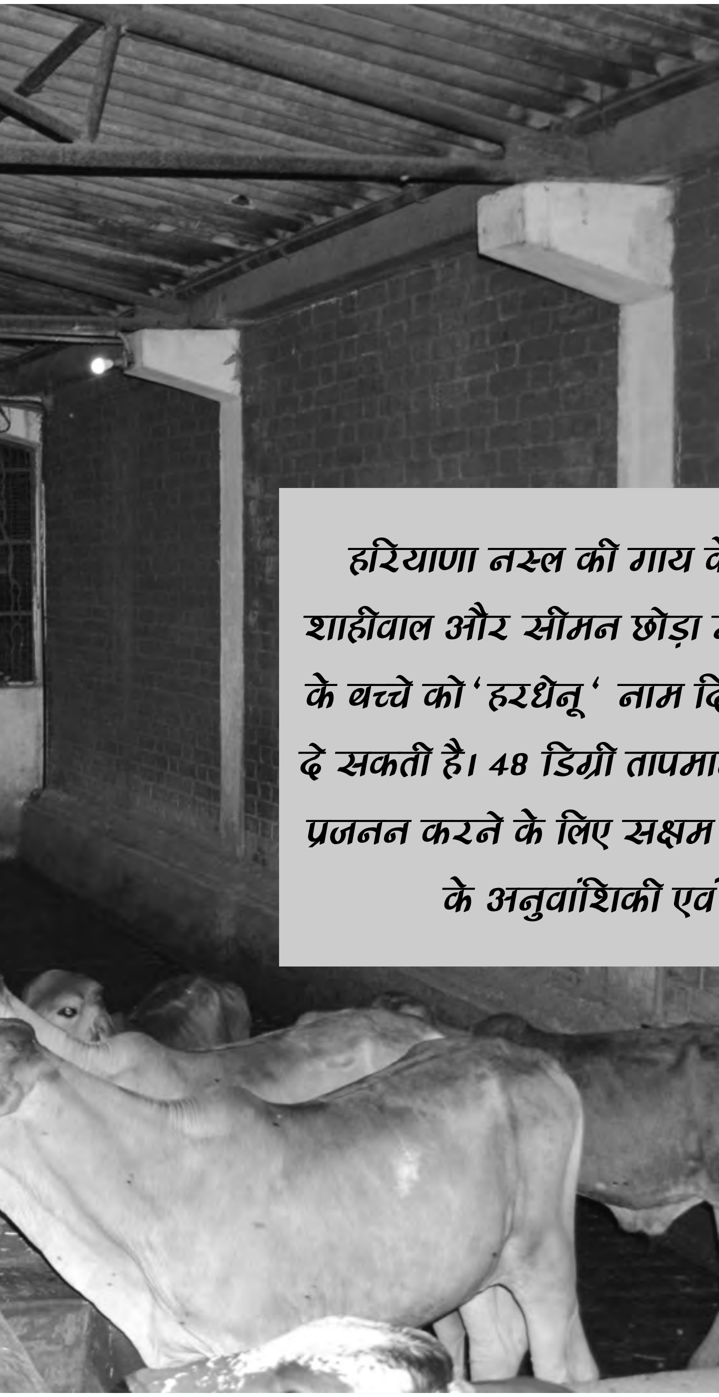

हरियाणा नस्ल की गाय के अंदर यूएसए व कनाडा की हॉलस्टीन, शाहीवाल और सीमन छोड़ा गया। तीन नस्लों के मेल से तैयार हुए गाय के बच्चे को 'हरधेनू' नाम दिया गया। हरधेनू 50 से 55 लीटर तक दूध दे सकती है। 48 डिग्री तापमान में सामान्य रहती है। यह 18-19 माह में प्रजनन करने के लिए सक्षम है। यह संभव किया हिसार के लुवास विवि के अनुवांशिकी एवं प्रजनन विभाग के वैज्ञानिकों ने।

इसी उदेश्य को लेकर पंचगव्य का उत्पादन किया जा रहा है। यह रक्तचाप, मधुमेह, मोटापा, उदर सज़्बन्धी विकार शारीरिक व्याधियों का समाधान करता है। इसके अलावा दैनिक जीवनोपयोगी सामग्री जैसे शैज़्पू, साबुन, दन्तमंजन, फिनायल का भी सुगमता से उत्पादन एवं उपयोग किया जा रहा है। इससे होने वाली आय से अल्पोत्पादक गायों के रख-रखाव में होने वाले व्यय में सहयोग मिल रहा है। दीनदयाल शोध संस्थान, गोवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र आरोग्यधाम चित्रकूट में पंचगव्य उत्पादन का पन्द्रह दिवसीय व्यावहारिक प्रशिक्षण भी उपलज़्ध कराया जा रहा है। चित्रकूट के किसी भी आश्रम-अखाड़े में देसी गाय के अलावा विदेशी गाय या भैंस को आश्रय नहीं दिया जाता। दीनदयाल शोध संस्थान ने 1995 से चित्रकूट के आश्रमों द्वारा संचालित गौशालाओं में आश्रय प्राप्त गोवंश की

उत्पादकता बढ़ाने के कार्य चुनौती के रूप में स्वीकार किया है। आरोग्यधाम के द्वार से लगे दतिया अखाड़े की गौशाला इसका उदाहरण है जहां तीन पीढ़ियों का गाय परिवार रह रहा है। गांव में कम हो रहे पशुपालन को बढ़ावा देने की दिशा में राष्ट्रऋषि नानाजी ने सार्थक प्रयास किया। दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना चित्रकूट में करते समय उन्होंने देशी नस्ल की गायों के संरक्षण का अलग प्रावधान रखा। देश के विभिन्न राज्यों से ऐसी गायों को लाया गया जिनकी नस्ल लगातार घट रही है। श्रद्धेय नानाजी कहा करते थे कि भारतीय गाय का समाज के प्रति योगदान की पूर्णता मात्र दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र की प्रदायता से नहीं होती, बल्कि किसान के सहकर्मी बलिष्ठ बैल भी इसी गोमाता से प्राप्त होते हैं। चित्रकूट में गोवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र बनाकर श्रद्धेय नानाजी ने साहीवाल, गिर, राठी, लालसिंधी, हरियाणा, थारपारकर, कॉकरेज, अंगोल, माल्वी, नागोरी, खिल्लार, लाल कंधारी, देवनी, वेचूर का संरक्षण किया। देश-समाज में गाय की उपयोगिता, श्रेष्ठता आदि काल से ही स्वीकार्य है। शास्त्रों-उपनिषदों में गाय, नन्दी पंचगव्य के विषय में बहुत कुछ बताया गया है। आधुनिक विज्ञान ने भी भारत में भारतीय-गोवंश की उपादेयता को मात्र स्वीकारा ही नहीं है अपितु सुदृढ़ राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य व्यवस्था एवं स्वावलज़्बी सामाजिक व्यवस्था में भारतीय गोंवश के योगदान को धनात्मक अनुपात में पाया है। गाय को सदगुणों के कारण ही माता का सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। गोवंश की प्रमुख नस्लें एवं गोवंश की संज़्या में लगातार गिरावट आ रही है। उदाहरण के रूप में सन् 1947 में 1000 की मानव जनसंज़्या के मध्य गोवंश की संज़्या 453 थी जो सन् 1981 में 278, सन् 1991 में 216 तथा सन् 1998 में 140 रह गई है। इसी प्रकार गोवंश की अनेक नस्लें विलुप्त हो गई हैं या विलुप्त होने वाली हैं। जैव विविधिता से सज़्पन्न राष्ट्र में 26 नस्लें अभी भी अस्तित्व में हैं इनमें से 14 नस्लें चित्रकूट में संरक्षित हैं।

साहीवालः इसे मांटगोमरी, मुल्तानी और लोला नामों से भी जाना जाता है। साहीवाल गाय मुज़्य रूप से पंजाब, दिल्ली, हरियाणा और उज़्र प्रदेश में होती है। यह गाय की अत्यधिक दुधारू किस्म है। तीन सौ दिनों में यह औसतन

लगभग 2000 कि.ग्रा. या इससे अधिक दूध देती है। कभी-कभी तो यह लगभग 5000 कि.ग्रा. तक दूध देती है।

गिरः गाय की इस किस्म को सूर्ती, देकन और काठियावाड़ी नामों से भी पुकारा जाता है। गिर गाय गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान और महाराष्ट्र राज्यों में पाई जाती है। यह औसतन लगभग 1700 कि.ग्रा. से अधिक दूध देती है।

सिन्धीः इनका आयात कराची से किया गया था। सिंधी गाय गहरे लाल या भूरे रंग की और मोटे सींग वाली होती है। यह लगभग 1500 कि.ग्रा. दूध का उत्पादन करती है।

देओनीः इसे डोंगरपट्टी के नाम से भी जाना जाता है। यह मुज़्य रूप से उज़्र-पश्चिमी क्षेत्रों में पाई जाती है। देओनी गाय लगभग 1000 कि.ग्रा. तक दूध देती है।

करण स्विसः यह साहीवाल और भूरे स्विस की संकर प्रजाति है। ये मुज़्यतः उज़्र प्रदेश, आंध्र प्रदेश तथा कर्नाटक में पाई जाती हैं। इसकी अधिक-से-अधिक दुग्ध-उत्पादन क्षमता 3000 कि.ग्रा. तक होती है।

औंगोलः यह प्रजाति आंध्र प्रदेश में पाई जाती है। इसे नेल्लौर के नाम से भी जाना जाता है। यह सामान्यतया उजले रंग की होती है और 1200 से लेकर 2200 कि.ग्रा. तक दुग्ध-उत्पादन करती है।

हरानाः दिल्ली और हरियाणा में पाई जाने वाली गाय की एक नस्ल है, जो उजले और हल्के धूसर रंग की होती है। हराना गाय लगभग 1400 कि.ग्रा. तक दूध देती है।

कांकरेजः इसे बन्नाय या नागू नाम से भी जाना जाता है। यह नस्ल राजस्थान और गुजरात में पाई जाती है, इसकी दूध उत्पादन क्षमता लगभग 1330 कि.ग्रा. तक होती है।

थारपारकरः यह नस्ल राजस्थान और गुजरात में पाई जाती है। इसे उजली सिंधी के नाम से भी जाना जाता है। गाय की यह नस्ल लगभग 1500 कि.ग्रा. तक दूध देती है, परंतु कहीं-कहीं 4000 कि.ग्रा. से अधिक दूध देने के मामले भी सामने आए हैं।

भारत में मवेशियों का 42 प्रतिशत भाग बैलों का है। बैलों की मुज़्य किस्में हैं- नागौरी (राजस्थान), बचौर (भागलपुर, मुजफ़्फ़रपुर और चंपारण), मालवी (मध्य प्रदेश), कंटाहा (उज़्र प्रदेश), हलीवर और अमृतमहल (कर्नाटक), खिल्लारी (महाराष्ट्र), बार्गर और कंगायम

(तमिलनाडु) तथा सिरी (पश्चिम बंगाल और सिक्किम) में पाए जाते हैं। विश्व में गायों की संख्या 13 खरब (1.3 बिलियन) होने का अनुमान है। भारत इसमें पहले स्थान पर है। यहां 281,700,000 गाय हैं। दूसरे स्थान पर ब्राजील और तीसरे स्थान पर चीन है। सांस्कृतिक और सामाजिक ताने-बाने में कृषि प्रधानता और पशुधन की परिकल्पना प्राचीन समय से ही रही है। किसी भी समाज में खाद्य-सुरक्षा के लिए कृषि उत्पाद और पशुधन उत्पाद की उपलब्धता आवश्यक मानी जाती थी। ग्रामीण भारत में कृषि के साथ पशुपालन की परंपरा भी समानांतर तरीके से चलती रही है। पशुपालन किसानों की नियमित आय का साधन रहा है। इसमें पशुपालन का काम सबसे ज्यादा कम जोत एवं भूमिहीन वर्ग के लिए सबसे ज्यादा लाभदायक रहा है। भारत कृषि प्रधान देश है। यहां अभी भी 80 प्रतिशत से अधिक आबादी गांवों में बसती है। ग्रामीण भारत में बसने वाली आबादी का मुख्य पेशा खेती ही रहा है। यह खेती पशुधन पर आधारित रही है। समय बदलता गया और पशु की जगह मशीनों का उपयोग खेती में होने लगा। मशीन का उपयोग होना गलत नहीं है। लेकिन पशुपालन से मुंह मोड़ने के कारण देश में पशुओं की आवश्यकता को कम कर दिया गया है और इससे आबादी खतरे में पड़ गई है। पशुपालन के लिए सरकारीस्तर पर बहुत प्रयास हो रहे हैं। इसके लिए केन्द्र और राज्य सरकारों की तरफ से पूरा एक विभाग बना दिया गया है। ये विभाग पशुपालन की दिशा में काम भी कर रहे हैं, परन्तु समाज के लिए पशुपालन क्यों जरूरी है, यह बताने में विभाग अभी तक सार्थक सफलता सामने नहीं ला पाए हैं। सरकारी महकमें का काम करने का अपना तरीका है। समाज के किस वर्ग के बीच जाकर यह काम करना उपयोगी होगा, इस धारणा से विभाग काम नहीं करता। सरकारी विभाग क्वालिटी की वजाय क्वांटिटी के हिसाब के कार्य करता है। इसलिए गांव में रहने वाली बहुसंख्यक नई आबादी भी पशुधन के महत्व से अनजान है। पशु को धन की संज्ञा इसलिए दी गई थी कि उसे समाज में बराबरी का दर्जा प्राप्त था। वह परिवार का अभिन्न हिस्सा माना जाता था। उसके रहने, खाने-पीने की उसी तरह चिंता होती थी जैसे परिवार के अन्य सदस्यों की की जाती थी। गाय को माता और बैल का दर्जा मुखिया का होता था। कारण, गाय जहां परिवार के सदस्यों के लिए दूध, घी, मक्खन, दही जैसे पौष्टिक आहार का दाता थी, वहीं बैल के गाड़ी और हल में चलने से होने वाली आय से परिवार का खर्च चला करता था। सिर्फ गाय-बैल ही नहीं, बल्कि कम जोत वाले किसानों तथा भूमिहीनों के लिए भेंड़, बकरी, ऊंट जैसे पशु पालनहार माने जाते थे। भारत में पशुपालकों की संख्या में लगातार गिरावट आ रही है। हालांकि सरकारी पशु गणना के हिसाब से पशुओं की तादात में वृद्धि आई है, लेकिन एक तरह से देखा जाय तो पशु पालन का कार्य लगातार सिमटता जा रहा है। पशुपालन बड़े कारोबार में परिवर्तित होना देश की उन्नति के लिए अच्छा है, लेकिन पशुपालन का सामाजिक दृष्टि से जो महत्व रहा है, वह कम हुआ है। इसके कई कारण है। गांवों में गौचर की जगह खत्म हो रही है या खत्म हो गई है। पशु आहार का संकट भी बढ़ा है। देश में अधिकांश आज भी ऐसे गांव हैं जहां के लोग समय के साथ उन्नति नहीं कर पाए हैं। उनके सामने रोजगार का बड़ा संकट है। वह चाहकर भी पशु पालन नहीं कर सकते, क्योंकि सबसे बड़ी समस्या पशु आहार की है। दुनिया में भारत ऐसा देश है जहां दुधारू पशु सबसे ज्यादा पाए जाते थे। इन पशुओं से दूध का आमद कम थी, लेकिन पौष्टिकता इतनी होती थी कि उस दूध का सेवन करने वाले के पास बीमारी फटकने से डरती थी। इसमें पशु की बनावट अथवा नस्ल का महत्व नहीं था, बल्कि इसका संबंध उस खान-पान से था जो पशु को मिला करता था। विचरण करता पशु गांव के आसपास लगे पेड़ों की पत्तियां, चारा का जो सेवन करता था, उसमें आहार के साथ बहुत सारी वनस्पति और औषधि पशु के शरीर में जाती थी और उससे दूध का जो निर्माण होता था, वह मनुष्य को शक्तिशाली बनाता था। पशु का प्रयोग खेती में बिलकुल बंद होता जा रहा है। कुछ स्थानों पर बैल से खेती की जाती है, लेकिन वहां बैल से जोत करना किसान की मजबूरी है। क्योंकि पहाड़ी और तलहटी क्षेत्र में खेत जोतने के लिए ट्रैक्टर ले जाना संभव नहीं है। इसलिए कुछ स्थानों पर बैल की उपयोगिता रह गई है। देशी नस्ल की गाय पालन का चलन बहुत सीमित हो गया है। इससे नस्ल खत्म होने का खतरा भी मंडरा रहा है। केन्द्र सरकार द्वारा कराए गए 19वीं पशुगणना 2012 पर नजर डालें तो पशुओं की कुल आबादी 3.33 फीसदी घट गई है। हालांकि कुछ राज्यों जैसे गुजरात (15.36 फीसदी), उत्तर प्रदेश (14.01 फीसदी), असम (10.77

फीसदी), पंजाब (9.57 फीसदी), बिहार (8.56फीसदी), सिक्किम (7.96फीसदी), मेघालय (7.41 फीसदी) और छत्तीसगढ़ (4.34 फीसदी) में पशुओं की आबादी में बढ़ोतरी दर्ज की गई है। पशुधन गणना के अनुसार, दुधारू भैंसों की संख्या 48.64 मिलियन से बढ़कर 51.05 मिलियन हो गई है जो कि पिछली पशुधन गणना से 4.95 प्रतिशत अधिक है। देश में भेंड़ों की संख्या 65.06 मिलियन है। इसमें पिछली पशुधन गणना से 9.07 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। बकरियों की संख्या में पिछली पशुधन गणना की तुलना में 3.82 प्रतिशत की कमी आई है। ऊंटों की संख्या में पिछली पशुधन गणना की तुलना में 22.48 प्रतिशत की कमी आई है। मुर्गी पालन में 12.39 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

भैसों की नस्ल

मुर्रा: ये सबसे प्रमुख किस्म है। इसे दिल्ली भैस के नाम से भी जाना जाता है। पंजाब, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में पाई जाती है। दस माह की अवधि में इसका औसतन दूध उत्पादन 1500 कि.ग्रा. से लेकर 2000 कि.ग्रा. तक होता है।

नीली-राकी: यह भैंस पंजाब में पाई जाती है। यह 250 दिन में लगभग 1600 कि.ग्रा. तक दूध देती है।

भदवारी: यह उप्र की देशी भैंस है, जो मध्य प्रदेश और राजस्थान में भी पाई जाती है। इसकी 305 दिनों में 2000 कि.ग्रा. से अधिक दूध देती है।

नागपुरी: भैंस की इस प्रजाति को गुलानी, बेरारी, गौली नामों से भी जाना जाता है। यह मुख्य रूप से महाराष्ट्र में पाई जाती है, जो 1000 कि.ग्रा. तक दूध देती है।

माण्डा: भैस की इस किस्म को परलाकीमेडी और गंजाम नाम से भी पुकारा जाता है। भैंस की यह प्रजाति आंध्र प्रदेश में पाई जाती है।

सुर्ती: यह गुजरात में पाई जाने वाली प्रजाति है, जो लगभग 2000 कि.ग्रा. तक दुग्ध उत्पादन करती है।

जफरबादी: गुजरात में पाई जाने वाली भैंस की यह अत्यधिक दुधारू प्रजाति है, जो प्रतिदिन 16 कि.ग्रा. दूध देती है।

मेहसाना: यह भैंस मुर्रा और सुर्ती की संकर से उत्पन्न प्रजाति है।

टोडा: नीलगिरि प्रजाति में यह पाई जाती है। यह प्रतिदिन लगभग 7 कि.ग्रा. तक दूध देती है।

Integral Humanism is Muc
Sustainable Developm

New Delhi. The seminar on the subject “Sustainable Development Goals vis-s-vis Integral Humanism” was held at Jacaranda Hall, India Habitat Centre. It was a part of Pandit Deendayal Upadhyay Centenary Celebrations. On first day, Inaugural session was addressed by Dr. Mahesh Sharma, Minister of Culture. Subject matter discussed during different sessions was Sustainable Economic Growth: Implementing SDG 8 and SDG 12, Multidimensionality of SDGs for harmony between ‘Man & Nature’, SDGs and Integral Humanism: Exploring Convergences and Policy Imperatives. On next day valedictory session of the national seminar took place at Vigyan Bhawan in presence of Honorable Finance Minister Sh. Arun Jaitleyji.

The idea of Sustainable Development Goals (SDGs) was first mooted at the United Nations Conference on Sustainable Development held in Rio de Janerio in June 2012. The foundation for the post 2015 development agenda was laid by the outcome document of Rio+20 conference (titled “The Future We Want”), which was based on international consensus at the highest level on the entire gamut of sustainable development issues. The SDGs were slated to be built upon

ch Wider then ent Goals

the Millennium Development Goals (MDGs) which were conceptualized in 2000 as a set of eight goals on diverse dimensions with most direct relevance to universal developmental outcomes. The MDGs encapsulated eight globally agreed goals in the areas of poverty alleviation, education, gender equality and empowerment of women, child and maternal health, environmental sustainability, reducing HIV/AIDS and communicable diseases, and building a global partnership for development. The time period allocated for MDGs was fifteen years which ended in 2015. At the conceptual and operational level SDGs may not merely be an extension of MDGs, but focus on global systemic reforms to remove main impediments to development and secure an accommodating international environment for sustainable development. The SDGs have been evolved through participatory consensus building process at various levels and collectively adopted by nations in 2015 including India. The SDGs cover 17 goals and 169 targets. India is already following an impressive national agenda of sustainable development guided by the vision and leadership of the Prime Minister. The high volume of India's aspirations and actions is however unmatched by others and India is steady on its path of paradigm changes both at the conceptual as well as operational level. Pandit Deendayal Upadhyaya (1916-1968) was one of the tallest political thinkers of the 20th Century, who has been highly influential in guiding India's post Independence political trajectory and social movements. He glorified the notion of integrated existence of 'man and nature' rooted in ancient Indian philosophy and spiritualism. He called this philosophy as 'Integral Humanism'. This rendition of the old Indian wisdom suggests prosperity, happiness and progress of society wherein physical, mental, intellectual, and spiritual well-being of every individual is essential constituents. He underlined that Indian culture stands on the foundations of interdependence, cooperation and concord, rather than conflict, contradiction and discord. He was of the firm view that despite their variegated characteristics, different nations can play a complementary role in the building of world unity. He suggested that 'Man' is not only integrated in society, he is also an integral part of the world or nature. In Indian tradition nature is worshipped as 'Mother'. To pollute nature is a sin. We need a system in which man's own initiative remains unobstructed and in which his relation with the rest of society, human values do not suffer. He considered individual to be the expression of the integral of body, mind, intellect and the soul. Progress

of man means simultaneous progress of body, mind, intellect and soul of the man. It must be realized that the object of our economic system should not be to make extravagant use but a well-regulated use of available resources. Instead of thriving on the exploitation of nature, we need to sustain nature. He further stressed on the merit of securing employment for all, patronage of education and health and the importance of capital formation through restrained consumption. He favoured decentralized economic systems, protection of cultural and other values of life. Finally, he strongly advocated a principled approach originating in ideals of 'integral humanism' for promoting the economy, protecting the nature and nurturing the society. In view of the introduction of the Sustainable Development Goals globally and the new enthusiasm of present times aimed at preparing for a 'New India' under the vision of the PM, an occasion of deliberations on progress, prosperity, and sustainability would be timely and meaningful. The Research and Information System for Developing Countries (RIS) and Deendayal Research Institute jointly organized the 'National Conclave on SDGs and Integral Humanism' on 23-24 September 2017 at New Delhi. The objective of the seminar was to explore the vitality and contemporary value of the Indian wisdom as enshrined in Pandit Deendayal Upadhyaya's idea of 'Integral Humanism' which is not only older in origin but as explained, a precedent for global understanding and persuasions on inclusive and sustainable 3 development. Accordingly, appropriate way forward on strategies for national development and the SDGs may emerge from the deliberations. SDGs and Integral Humanism – Moving for New Paradigm of Development the SDGs are considered integrated and indivisible connecting 5 Ps – people, planet, prosperity, peace and partnership. To implement an overtly ambitious global agenda, SDGs have identified several means of implementation, viz. resources,

knowledge, trade, capacity building, policy coherence, multi-stakeholder partnerships and monitoring mechanisms as a standalone and the final goal (SDG 17). The integrated nature of the SDGs, the desire of universal accomplishment across all countries (with the underlying philosophy of leaving no one behind) and connecting all 5 Ps in thought and action have initiated reforms in approach and transformations in practice in many countries. India, guided by its well conceived national policy priorities is poised for paradigm shifts to bring about the so called triple transition in politics, economics and social life. Taking cue from one of India's leading policy architects, we note, India is trying to promote a globally competitive economy based on impressive benchmarks of sustainability, while at the same time affording to its people liberal democratic

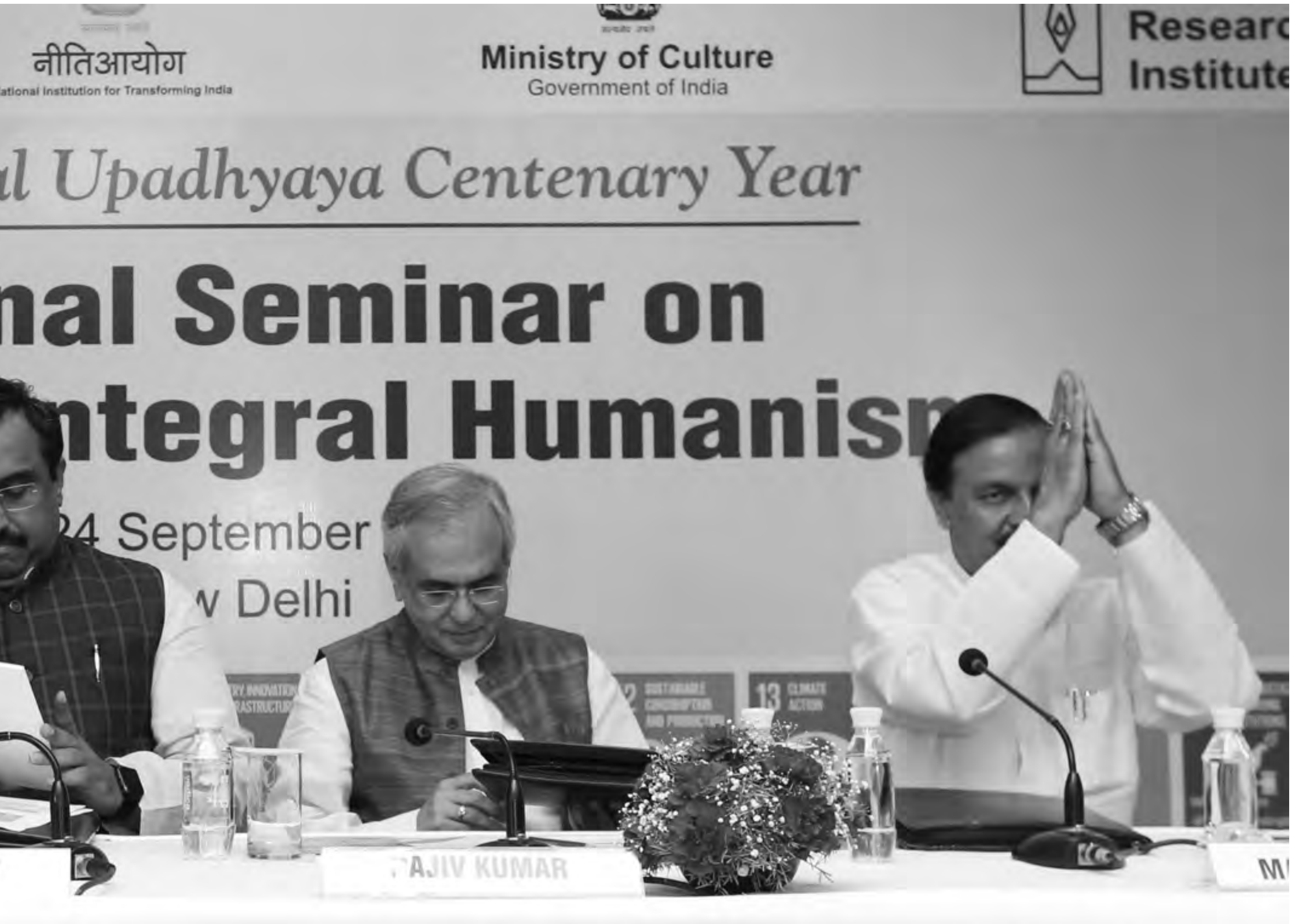

rights and overcoming the deep-rooted and widespread caste and other social evils Keeping in view the ideals of 'Integral Humanism' it needs to be emphasized that there is underlying unity and interconnectedness among all SDGs. Hence, implementation of one particular SDG cannot take place in isolation. The SDGs are to be achieved in an integrated manner wherein efforts are made for simultaneous implementation of all SDGs. Successful implementation of one SDG would reinforce implementation of other SDGs. The entire implementation mechanism needs to work with the spirit of cooperation and coherence. In doing so, SDGs would sustain and enrich one another for fuller realization of material prosperity, equity and sustainability. Implementing SDG 8 and SDG 12. The SDG 8 and its associated targets are a comprehensive prescription for attaining high economic growth by infusing productivity, creativity and innovation at all levels of production but at the same time caring for resource efficiency, inclusiveness through gainful and secure employment and bridging disparities between big and small, formal and informal, and man and woman. The SDG 12 and its targets that place reduction of wastes in production and regulation of wasteful consumption at its core are however a departure from conventional approach on economic policymaking. The template of sustainable consumption and production as advocated in SDG 12 cover sustainable management and efficient use of natural resources; reduction of 4 food wastage and food losses; environmentally sound

management of chemicals and wastes; substantial reduction of waste generation through prevention, reduction, recycling and reuse; encouragement of sustainability compliance through strict reporting and monitoring; adoption of sustainability oriented public procurement practices; awareness; scientific and technological capability; sustainable tourism; and rationalizing inefficient fossil fuel subsidies apart from suggesting implementation with rigor of international agreements in these areas. While the SDG 8 is sufficiently well meaning and well equipped for promotion of economic growth grounded in principles of sustainability, the domains identified in the SDG 12 offer definite solution oriented approach internalising sustainability challenges. The ideas of sustainable production and consumption are often elusive and at best conceptual. This makes it extremely difficult for policymakers to be able to chart a credible roadmap towards a paradigm of economic prosperity that is environmentally sustainable and inter-generationally equitable. The SDG 12 is a close approximation and a commendable effort in framing a direction on the subject. Hence, one sees a lot of merit in pursuing objectives of the SDGs 8 and 12 together. Multidimensionality of SDGs for harmony between 'Man & Nature' Critical to the idea of sustainable development is holism, integration and confluence of actions meant for conserving and protecting the natural habitat, and combating contamination and changes in the agro-climatic conditions. The SDGs in their approach of integration have robustly connected the social, economic and environmental dimensions of development across the 17 Goals. Economic policymaking has to be socially sensitive since a well nurtured and equitable society provides the most convincing ecosystem for economic growth, prosperity and all round development. The economy and the society thrive in an environment that is least damaged and sustainably exploited. The philosophy of the intrinsic connection between 'Man and Nature' is old, time tested and eternal. Human existence is invalid without resources drawn from the nature and human consciousness is void without the imagination of the surroundings. However, such ideals have come under stress and crisis in the post industrial revolution era, when economic progress through rampant industrialization has been reckless and insensitive. The early industrialized countries carry much greater shame and responsibility in this regard. The SDGs are looked upon as an agenda of course correction. This entails multipronged approach and adoption of sustainability practices at all levels. There is natural connect and convergence between several targets under the SDG 2 (covering sustainable agriculture), the SDG 4 (mandating skills for sustainable lifestyles), the SDG 13 (for combating climate change and its impacts), the SDG 14 (for conservation and sustainable use of marine resources) and the SDG 15 (for protecting terrestrial ecosystems).

Venue: India Habitat Centre, New Delhi and Vigyan Bhawan, New Delhi

Organiser: Deendayal Research Institute, New Delhi & Research & Information Sustainable Development

Subject: National Seminar on SDG's and Integral Humanism

Speaker/s: Dr. Rajiv Kumar, Dr. Mahesh Sharma, Sh. Mahesh Chandra Sharma, Sh. Ram Madhav, Smt. Meenakshi Lekhi, Smt. Archana Chitnis, Dr. Ashok Tandon, Dr. Ramesh Jalan, Dr. Gajanan Dange, Dr. Venkatachalam Ambumozhi, Prof. A. Damodaran, Dr. P.K. Anand, Dr. Rajendra Prasad, Ms. Bhavdeep Kang, Dr. Bajrang Lal Gupta, Dr. Harsh Vardhan, Sh. Ashok Jain, Sh. Rambahadur Rai, Sh. K. N. Govindacharya, Sh. Manish Jain, Sh. Sushil Pandit, Dr. Vinay Sahastrabuddhe, Sh. Vansant Pandit, Dr. P. K. Anand, Dr. Ashwani Mahajan, Sh. Sanjay Ganjoo, Sh. Atul Jain, Prof. Sachin Chaturvedi

मुकुवन गांव बना उपवन

गनीवां। रानीपुर खाकी का मुकुवन पुरवा गांव एकदम से बदल गया है और यह संभव हुआ है गांव की उन बालिकाओं की पहल पर जिन्होंने न केवल परिवार को इस परिवर्तन के लिए तैयार किया, बल्कि पूरे गांव को स्वच्छता से समृद्धि आने की समझ विकसित करने का काम किया।

दीनदयाल शोध संस्थान के समाजशिल्पी दज़्पति अनिल शुज़्ला एवं शालिनी शुज़्ला जब ग्राम सज़्पर्क के दौरान रानीपुर खाकी के मुकुवन पुरवा गांव पहुंचे तो उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि ये गांव आज भी काफी पीछे चल रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में सिर्फ एक बालिका ऐसी थी, जिसने 12वीं तक की पढ़ाई पूरी की थी और पढ़ाई के बाद भी उसका कोई उपयोग नहीं था। बिजली वहां के लिए स्वप्न जैसी थी। गांव के बहू-बेटियों के पास कोई काम नहीं था। घर के काम से फुर्सत होने के बाद खाली रहती थी। समाजशिल्पी दज़्पति ने परिवर्तन की पहल की। पहली बैठक गांव के लोगों की बुलाई गई, पहुंचे केवल पांच लोग। वहां निर्णय किया गया कि गांव में सिलाई प्रशिक्षण का कार्यक्रम रखा जाय। योजना बन गई, लेकिन प्रशिक्षण कौन लेगा। इसके बाद लोगों से बातचीत की गई, तब कहीं जाकर 25 बालिकाओं और बहूओं को प्रशिक्षण के लिए तैयार किया जा सका। तीन माह के प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें दीनदयाल शोध संस्थान के लोगों के साथ ज्यादा समय रहने का मौका मिला। इससे उनके मन को बदलवे का काम हुआ। इसके बाद गांव में सौ परिवार को लेकर स्वच्छता का कार्यक्रम प्रारज़्भ किया गया। सभी परिवारों में उन 25 बालिकाओं और बहुओं ने तुलसी पौध रोपण किया और गृहवाटिका बनाने में सहयोग देने लगीं। इसके बाद कृषि से जुड़े लोगों को खेती के तरीके बताए गए। उन्हें उन्नत किस्म के बीज उपलज़्ध कराए गए। तब उन्हें महसूस होने लगा कि ये काम उन्हें खुद से करना चाहिए। इसके बाद समग्र स्वच्छता अभियान चलाया गया। पूरे गांव की सफाई लोगों ने मिलकर किया। सभी ने अपने दरवाजे पर पांच-पांच दीपक जलाकर अपने माता-पिता और बुजुर्गों का पूजन भी किया। परिणाम यह हुआ कि गांव स्वच्छता में दूसरो के लिए प्रेरणा बन गया। जल्द ही गांव में बिजली पहुंच गई। इसके अतिरिज़्त ग्राम भारती के सहयोग से बालसंस्कार केन्द्र का शुभारज़्भ हुआ। सिंचाई परियोजना का प्रोजेज़्ट मुकवन पुरवा में प्रारज़्भ होने वाला है।

रेशम की खेती से बढ़ी आय

अंबाजोगाई। कृषि विज्ञान केन्द्र की सलाह और सहयोग एवं अपनी इच्छाशज़्ति ने किसान की आर्थिक स्थिति बदल गई। बीड जिले के वरपगांव के किसान शुक्राचार्य राऊत ने परज़्परागत खेती को अपनाए रखते हुए रेशम कीट पालन का काम शुरू किया और उससे न केवल उनकी आमदमी में बढ़ोत्तरी हुई, बल्कि दलहन, तिलहन की खेती भी प्रभावित नहीं हुई। किसान शुक्राचार्य के पास जमीन तो बहुत थी, लेकिन पैदावार इतनी नहीं हो पाती थी कि परिवार का खर्च चल सके। वह दिन-रात मेहनत करते और बाद में जब हिसाब जोड़ा जाता तो आमदनी नहीं के बराबर रहती थी। एक दिन वह कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के सज़्पर्क में आए। उन्हें सारा हाल बताया। वैज्ञानिकों द्वारा खेत पर जाकर देखा गया। जमीन उनकी अच्छी थी, लेकिन तरीका बेहतर नहीं होने के कारण पैदावार में कमी थी। वैज्ञानिकों ने डेढ़ एकड़ जमीन में रेशम की खेती करने की सलाह दी। इसके साथ किसान को रेशम की खेती के लिए जरूरत की चीजें उपलज़्ध कराई गई। शुक्राचार्य ने रेशम की खेती शुरू की। पहले साल ही उन्हें फायदा मिला। इसके बाद उन्होंने रकबा बढ़ा दिया। लगातार तीन साल तक खेती करने के बाद आज किसान की आय दोगुना हो गई है। इसके साथ उनकी परज़्परागत तिलहन और दलहन की खेती भी सुचारू रूप से हो रही है। इस किसान से प्रेरणा लेकर आसपास के करीब दस किसानों ने रेशम की खेती में दिलचस्पी दिखाई है। बीड़ महाराष्ट्र का कम वर्षा वाला क्षेत्र है। वहां कृषि विज्ञान केन्द्र लगातार किसानों के बीच उन्नत खेती के लिए काम कर रहा है।

प्रगतिपथ को आलोकित करता दीनदयाल शोध संस्थान

- अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर 12 केन्द्रों पर योग प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसके बाद नगर में सामूहिक योग कार्यक्रम किया गया। जिसमें लगभग ढाई हजार लोगों ने हिस्सा लिया। इसके अलावा स्वावलज़्बन केन्द्रों में भी योग कार्यक्रम आयोजन किया गया।
- स्वावलंबन अभियान के तहत 512 गांवों में से 78 ग्रामों में ग्राम संयोजक दज़्पति-57, कृषि ज्ञानदूत-68, पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता-37, रोजगार प्रेरक-40, स्वास्थ्य कार्यकर्ता-43 का प्रशिक्षण आयोजित किया गया।
- दीनदयाल शोध संस्थान के मार्गदर्शक माननीय मदनदासजी के द्वारा नानाजी स्मृति श्रद्धा केन्द्र का भूमि पूजन किया गया।
- पंडित दीनदयाल एवं नानाजी के जन्म शताज़्दी पर 45 स्वावलज़्बन केन्द्रों में प्रश्नोज़री, भाषण, खेलकूद, मशाल जुलूस, चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- कृष्णादेवी वनवासी बालिका आवासीय विद्यालय परिसर में विद्यालय भवन का 12 नवज़्बर 2017 को शुभारज़्भ किया गया।
- स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के सहयोग से 46 स्वावलज़्बन केन्द्रों में औषधी वाटिका का निर्माण किया गया।
- ग्रामोदय पखवाड़ा में 22 पंचायतों में कृषक गोष्ठी का आयोजन कर 1207 किसानों को उन्नत खेती की जानकारी दी गई।

- नानाजी के जन्मदिन शरद पूर्णिमा पर पांच दिन का शरदोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- ग्रामोदय विश्व विद्यालय प्रांगण में पांच दिन का ग्रामश्री मेला का आयोजन किया गया।
- अंचल के 108 स्वावलज़्बन केन्द्रों में स्वास्थ्य जागरुकता एवं उपचार शिविर लगाया गया। जिसमें डा. हेडगेवार रुग्णालय सेवांकुर,महाराष्ट्र के चिकित्सा छात्रों द्वारा करीब 16 हजार 200 ग्रामीणों की जांच और उपचार किया गया।
- सात संकुल केन्द्रों में चार दिवसीय बाल शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें आसपास के गांव के करीब एक हजार विद्यार्थियों ने भाग लिया।
- गुरूकुल संकुल में व्यज़्तित्व विकास शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 164 गांव के 305 बालक-बालिकाओं ने भाग किया।
- सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय के 12वीं के छात्र सोहनलाल धतुरहा ने 94.2 प्रतिशत अंक अर्जित कर सतना जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- अंचल में 15 अप्रैल से 10 मई तक मृदा स्वास्थ्य परीक्षण अभियान चलाया गया, जिसमें 203 गांवों के 408 किसानों से मिट्टी के नमूने लेकर उनका परीक्षण किया गया।
- सामुदायिक बीज बैंक में 146 देशी एवं 302 पंजीकृत किस्मों का संग्रह किया गया।
- समाजशिल्पी दज़्पति योजना में 23 नए दज़्पतियों के आवेदन आए, जिसमें 20 दज़्पतियों का चयन कर उसमें ग्यारह को प्रशिक्षण दिलाया गया।
- गांवों में 102 किसानों द्वारा 702 पशुओं का टीकाकरण कराया गया।
- आरोग्यधाम में 9852 मरीजों का उपचार तथा 445 कार्यकर्ताओं रज़्त की जांच की गई।
- स्वावलज़्बन केन्द्र बैहार तथा कुरमनताला में बाल शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 25 गांव के 185 बच्चों ने हिस्सा लिया।
- शल्य चिकित्सा शिविर में 70 मरीजों का पंजीकरण एवं 26 मरीजों की सर्जरी की गई।
- तकनीक आदान प्रदान और संयुज़्त परियोजनाओं के लिए दीनदयाल शोध संस्थान एवं राष्ट्रीय वनस्पति शोध संस्थान के बीच समझौता किया गया।
- सुरेन्द्रपॉल ग्रामोदय विद्यालय के विद्यार्थी अनिमेष मिश्रा ने राज्य स्तरीय गोला फेक प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान अर्जित किया। विद्यालय के छात्र उदेश्य सिंह हाकी में राष्ट्रीय स्तर पर एवं 9 विद्यार्थी तैराकी, कुस्ती एवं दौड़ प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर चयनित हुए।
- जैव प्रौद्योगिकी एवं हर्बल उत्पाद में चुनौतियां एवं संभावनाएं विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- तुलसी कृषि विज्ञान केन्द्र, गनीवा में महिला प्रशिक्षणार्थियों का सज़्मेलन कराया गया ।
- मानिकपुर ज़्लाक के वनवासी बंधुओं के सज़्मेलन में 1100 बंधुओं की सहभागिता रही।
- कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां में आयोजित कृषि ज्ञान दूत कार्यशाला में 223 किसानों ने भाग लिया।
- एमेटी विश्व विद्यालय के छात्रों ने 15 दिन रहकर ग्राम विकास के कार्य को करीब से समझा।
- कृषि विज्ञान केन्द्र गनीवां एवं मझगवां द्वारा आयोजित संकल्प से सिद्धि कार्यक्रम में 783 किसानों की सहभागिता रही।
- नेशनल अकादमी साइंस ऑफ इंडिया और दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित उद्यमशील एवं कौशल विकास कार्यशाला में वाराणसी, इलाहाबाद, लखनऊ, सतना महाविद्यालयों से 187 छात्रों ने हिस्सा लिया।
- कृषि विज्ञान केन्द्र, गनीवां द्वारा मोती पालन व्यवसाय प्रारज़्भ करने के लिए 24 नवयुवकों को प्रशिक्षण दिया गया।
- उद्यमिता विद्यापीठ में नेहरु युवा केन्द्र के 81 जिलों के 144 प्रशिक्षणार्थियों को नेतृत्व क्षमता एवं सामुदायिक विकास पर प्रशिक्षण दिया गया।
- कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां एवं गनीवां में विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस मनाया गया, जिसमें 1031 किसानों की सहभागिता रही।
- स्वामी विवेकानन्द जयंती पर आरोग्यधाम एवं राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, नई दिल्ली द्वारा छह दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया, जिसमें ए.के.एस. विवि सतना के 228 छात्र-छात्राओं को कृषि संबंधी जानकारी दी गई।

गोंडा प्रकल्प

- पुरूष एवं महिला कृषकों के लिए 86 प्रशिक्षण हुए, जिसमें 1726 लोग प्रशिक्षित हुए।
- ग्रामीण युवक एवं युवतियों के लिए रोजगारमूलक नौ विषयों पर प्रशिक्षण चलाया गया, जिसमें 123 लोगों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- सेवारत कर्मचारियों के लिए छह विषयों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम कराया गया। जिसमें 97 लोगों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- वर्मीकज़्पोस्ट उत्पादक एवं बकरी पालन जैसे व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में 40 नवयुवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- अलग-अलग फसलों में 222.84 हेज़्टेयर क्षेत्रफल में 1385 किसानों के प्रक्षेत्र पर प्रथम पंज़्ति प्रदर्शन आयोजित किया गया।
- विभिन्न विषयों से सज़्बन्धित 11 तकनीकियों पर 55 किसानों के प्रक्षेत्र पर कृषक सहभागी प्रशिक्षण आयोजित किया गया।
- 603 प्रसार गतिविधियां चलाई गई, जिसमें 11137 किसानो की सहभागिता रही।
- इमलिया कोडर में महाराणा प्रताप जयंती पर थारू सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें थारू क्षेत्र के 54 गांव के एक हजार से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लिया। मुज़्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथजी मुज़्य अतिथि रहे।
- प्रत्येक शनिवार को प्रकल्पशः सामूहिक स्वच्छता कार्य निश्चित किया गया है।
- महिला किसान सज़्मेलन का आयोजन कृषि विज्ञान केन्द्र, गोपालग्राम में किया गया, जिसमें 1254 महिलाओं ने भाग लिया।
- केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री कृष्णपाल गुर्जर द्वारा जयप्रभा ग्राम में 600 दिव्यांगजनों को सहायक यंत्र एवं उपकरण वितरित किए गए।
- जयप्रभा ग्राम में लघु एवं कुटीर उद्योगों में महिलाओं की सहभागिता विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें स्वरोजगार कर रही 485 महिलाओं ने भाग लिया।
- अंतरराष्ट्रीय मृदा स्वास्थ्य दिवस पर कृषि विज्ञान केन्द्र गोपालग्राम में जिले के 1500 किसानों ने भाग लिया।

बीड प्रकल्प

- किसानों की आय दोगुना करने की जानकारी देने के लिए किसान मेला का आयोजन किया गया। जिसमें 40 गांव के 432 किसानों ने नवीन कृषि तकनीक की जानकारी ली।
- किसान सुरक्षा जागरुकता अभियान के तहत सात ग्रामों के 1132 किसानों को फसल सुरक्षा संबंधी जानकारी दी।
- नवाचारी कृषक सज़्मेलन में किसानों में बढ़ रही जैविक खेती के चलन पर चर्चा की गई। जिसमें डिघोलअंबा की महिला किसान श्रीमती विद्या एवं देवला के रवींद्र देवरवाडे द्वारा जैविक और जलवायु परिवर्तन के बाद खेती करने की पद्धति की जानकारी दी गई।
- कृषि तकनीक का हस्तांतरण के लिए 4 महाविद्यालयों से एवं ग्लोबल परली से समझौता करार किया गया।
- पशुसंवर्धन को बढ़ावा देने हेतु पांच गांवों में कार्यक्रम कराए गए। जिसमें किसानों को हरा चारा निर्मित करने, अझोला का उत्पादन बढ़ाने एवं अन्य तकनीकी जानकारी दी गई।
- कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा दो दिन की रेशम उद्योग पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें 650 किसानों को रेशम उत्पादन बढ़ाने संबंधी जानकारी दी गई।
- जलवायु परिवर्तन की चुनौतियां विषय पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, आंचलिक निदेशालय पुणे और कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृषि क्षेत्र में काम कर रही संस्थानों के साथ मिलकर औरंगाबाद में कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- कृषि विज्ञान केन्द्र अंबाजोगाई द्वारा उन्नतशील बनाए गए किसान रवींद्र एवं विद्या को एग्रोवन स्मार्ट किसान पुरस्कार से सज़्मानित किया गया।
- महिला किसान मेला में क्षेत्र की महिलाओं को खेती में सहभागिता बढ़ाने के लिए प्रेरित किया गया।
- क्षेत्र के चार गांवों में जय विज्ञान सप्ताह का आयोजन किया गया।
- मृदा दिवस मनाया गया, जिसमें 200 किसानों को स्वाइल हेल्थ कार्ड दिए गए।
- कृषि विज्ञान केन्द्र के हायड्रोपोनिक चारा उत्पादन प्रकल्प में पशु आहार उत्पादन इकाईयों की प्रदर्शनी लगाई गई। मेले में 86 ग्रामों के 1250 किसानों की सहभागिता रही।

दिल्ली प्रकल्प

- राष्ट्रधर्म पर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली में संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें मुज़्यवज़्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकार्यवाह माननीय कृष्ण गोपालजी रहे। यह आयोजन 16 नवंबर, 2016 को हुआ।
- महात्मा गांधी शांति प्रतिष्ठान राजघाट दिल्ली में दीनदयाल शोध संस्थान और जीएसडीएस द्वारा 3 दिसंबर, 2016 को गांधीजी, कुमारप्पाजी, दीनदयालजी और नानाजी पर परिचर्चा का आयोजित किया गया।
- दिल्ली के द्वारका में दिल्ली पुलिस और डीआरआई द्वारा परिवार के मूल्यों पर चर्चा का आयोजन किया गया। जहां मोहित चौहान का संगीतमय कार्यक्रम भी हुआ। यह आयोजन 8 फरवरी, 2017 को हुआ।
- संसद भवन के बालयोगी सभागार में विकास के स्वदेशी मॉडल स्मृति विषय पर सप्तम नानाजी स्मृति व्याज़्यान का आयोजन किया गया। जिसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परमपूज्य सरसंघचालक डा. मोहनराव भागवतजी ने मार्गदर्शन किया और डा. महेश शर्मा व श्री रजत शर्माजी ने विचार व्यज़्त किए। यह आयोजन 26 मार्च, 2017 को हुआ।
- दिल्ली के इंडिया इंटरनेशन सेंटर में पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी के अंग्रेजी में दिए गए भाषण पर 22, 23, 24, 25 अप्रैल, 2017 को विचार-विमर्श का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें डॉ. भरत दहिया, एम.जे. अकबर, डॉ. महेश शर्मा, श्री रविशंकर प्रसाद एवं राजीव प्रताप रुड़ी ने उस भाषण का विश्लेषण किया।
- दिल्ली के तीनमूर्ति भवन में संस्कार भारती एवं दीनदयाल

शोध संस्थान द्वारा दृश्य और प्रदर्शन कला में भारतीय दर्शन विषय पर व्याज़्यान का आयोजन हुआ। जिसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकार्यवाह माननीय कृष्णगोपालजी, सोनल मान सिंह और बाबा योगेन्द्र ने विचार रखे। यह आयोजन 6 जून, 2017 को हुआ।

- दिल्ली के विज्ञान भवन में स्वामी विवेकानंद जयंती पर युवा भारत का आयोजन हुआ। जिसमें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने विचार रखे। यह आयोजन 11 सितंबर, 2017 को हुआ। जिसमें केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर, डा. महेश चंद्र शर्मा, कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौर भी शामिल हुए।
- दिल्ली के लोदी रोड इंडिया हैबिटेड सेंटर में सतत विकास लक्ष्यों को हासिल करने की **भारतीय दृष्टि** विषय पर 23 सितंबर, 2017 को राष्ट्रीय संगोठी का आयोजन किया गया। जिसमें श्री राममाधवजी ने मुज़्य वज़्तज़्व दिया।
- दिल्ली के विज्ञान भवन में केन्द्रीय वित्तमंत्री श्री अरूण जेटली ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर पंडित दीनदयालजी पर 100 रुपए एवं 5 रुपए के सिज़्के भी जारी किए गए। यह आयोजन 24 सितंबर, 2017 को हुआ।
- दिल्ली के इंदिरा गांधी इन्डोर स्टेडियम में संगीतमय कार्यक्रम भारत गीतमाला का आयोजन हुआ। जिसमें भाजपा अध्यक्ष श्री अमित शाह शामिल हुए। यह आयोजन 25 सितंबर, 2017 को हुआ।
- दिल्ली के पूसा इंस्टीट्यूट में नानाजी जन्म शताज़्दी के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी भी कार्यक्रम में शामिल हुए। इसमें दिशा एप्पस, ग्राम संवाद एप्पस, नानाजी देशमुख प्लान्ट फैनोमिज़्स फेसिलीटी एवं नानाजी देशमुख पर डाक टिकिट भी जारी किया। इस अवसर पूसा में दो दिन की तकनीक एवं ग्रामीण जीवन पर प्रदर्शनी भी लगाई गई। यह आयोजन 11 अज़्टूबर, 2017 को हुआ। प्रधानमंत्रीजी ने देशभर के 11 ग्रामीण स्वयं रोजगार प्रशिक्षण संस्थानों (आर.एस.ई.टी.आई.) का भी उद्घाटन किया।
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र दिल्ली में लोक गाथा उत्सव का आयोजन 28 नवंबर से 3 दिसंबर, 2017 को हुआ। इस अवसर पर रामायण थीम पर सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

नागपुर प्रकल्प

- अप्रैल से जून 2017 तक ग्रीष्मकालीन शिविरों का आयोजन किया गया। उसमें 2 से 15 साल तक के बच्चे सहभागी हुए थे। कुल 67 प्रकार के शिविरों में 1200 बच्चों ने हिस्सा लिया। शिविर में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।
- रामनवमी में बालजगत से शोभायात्रा निकाली गई। इस शोभायात्रा में पालक भी बड़ी संज़्या में शामिल हुए।
- बालजगत में मातृपूजन का कार्यक्रम किया गया। बच्चों ने अपने माता के चरणों की पूजा की। वेदशास्त्री श्री. भूषण जी ने मंत्रोच्चार से मातृपूजन का कार्यक्रम कराया।
- बालजगत में गुड्डा गुड्डी की शादी बड़ी धूमधाम से कराई गई। बच्चों के माता-पिता भी शादी में शामिल हुए। बच्चों द्वारा चॉकलेट बिस्किट गुड्डा-गुड्डी को भेंट दी गई।
- ग्रीष्मकालीन शिविर में जलतरण प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें 2212 विद्यार्थिओं ने जलतरण प्रशिक्षण का लाभ उठाया।
- लोकमाता सुमतीताई सुकळीकर स्मृती जलतरण स्पर्धा का आयोजन 28 मई 2017 को किया गया। उसमें 242 विद्यार्थियों ने सहभाग लिया था।
- भानजीभाई पाटणकर स्मृती चित्रकला स्पर्धा का आयोजन 30 मई 2017 को किया गया। जिसमें 300 विद्यार्थिओं ने सहभाग लिया।

देशभर में आयोजन

(पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख जन्मशताब्दी वर्ष में देश के विभिन्न भागों में एकात्म मानवदर्शन पर व्याख्यानमाला, कार्यशाला, राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम)

- 9-10 जनवरी, 2017- भोपाल में पोषण पर कार्यशाला का आयोजन हुआ, जिसमें मप्र की मंत्री श्रीमती अर्चना चिटनिस, आईसीएआर के निदेशक श्री अनुपम मिश्रा एवं डीआरआई के प्रधान सचिव श्री अतुल जैन ने विचार रखे।
- 24 जनवरी 2017-मथुरा में डीआरआई और संकल्प द्वारा जीएलए विश्वविद्यालय में एकात्म मानवदर्शन पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें विवि के उप कुलपति प्रो. डी.एस. चौहान एवं डीआरआई के प्रधान सचिव श्री अतुल जैन ने विचार रखे।
- 27-28 जनवरी, 2017-जबलपुर में डीआरआई और रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में एकात्म मानवदर्शन पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसमें गुजरात के महामहिम राज्यपाल श्री ओ.पी. कोहली, म.प्र. की महिला बाल विकास मंत्री श्रीमती अर्चना चिटनिस ने चर्चा में हिस्सा लिया। अगले दिन हरियाणा के महामहिम राज्यपाल श्री कप्तान सिंह सोलंकी, मप्र सरकार के मंत्री श्री जयभान सिंह पवैया ने विचार रखा।
- 11 फरवरी, 2017- ओड़िशा के कटक में एकात्म मानव दर्शन की प्रासंगिकता विषय पर प्रज्ञा प्रवाह के सहयोग से व्याख्यान का आयोजन हुआ। जिसमें मुख्यवक्ता भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव श्री पी. मुरलीधर राव रहे।
- 12 फरवरी, 2017- ओड़िशा के भुवनेश्वर में एकात्म मानव दर्शन की प्रासंगिकता विषय पर प्रज्ञा प्रवाह के सहयोग से व्याख्यान का आयोजन हुआ। जिसमें मुख्यवक्ता केवीआईसी पूर्व अध्यक्ष डा. महेश शर्मा रहे।
- 5 मार्च, 2017- राजस्थान के भीलवाड़ा में एकात्म मानवदर्शन पर व्याख्यान हुआ, जिसमें प्रमुख वक्ता श्री मुकुंद बिहारी रहे।
- 23 मार्च, 2017- नागपुर में जीवन दर्शन कार्यक्रम के तहत संगीतमय आयोजन हुआ।
- 30 मार्च, 2017- ओड़िशा के राउरकेला में एकात्म मानव दर्शन की प्रासंगिकता विषय पर प्रज्ञा प्रवाह एवं एनआईटी के सहयोग से व्याख्यान का आयोजन हुआ। जिसमें मुख्यवक्ता पूर्व राज्यसभा सांसद श्री तरुण विजय रहे।
- 14 अप्रैल, 2017-महाराष्ट्र के बीड जिले के अंबाजोगाई में एकात्म मानवदर्शन एवं विज्ञान विषय पर व्याख्यान हुआ। मुख्यवक्ता डीआरआई के प्रधान सचिव श्री अतुल जैन एवं विधायक श्रीमती संगीताजी थोम्ब्रे ने विचार रखे।
- 8 जून, 2017-चंडीगढ़ राजभवन में एकात्म मानवदर्शन पर व्याख्यान का आयोजन हुआ, जिसमें हरियाणा के राज्यपाल माननीय कप्तान सिंह सोलंकी और मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल मुख्यवक्ता रहे।
- 12 जून, 2017-राजस्थान सीकर के हरदयालपुर में एकात्म मानवदर्शन व्याख्यान में परंपरागत व्यवसाय विषय पर चर्चा की गई। जिसमें मुख्यवक्ता डीआरआई के प्रधान सचिव श्री अतुल जैन एवं जोर की ढाणी संस्थान के श्री कान सिंह निर्वाण रहे।
- 27 जून, 2017- होशंगाबाद (मप्र) में एकात्म मानवदर्शन व्याख्यान में पंडित दीनदयालजी के दर्शन पर विस्तार से चर्चा की गई। जिसमें मुख्यवक्ता मप्र सरकार की मंत्री श्रीमती अर्चना चिटनिस और डीआरआई के संगठन सचिव श्री अभय महाजन रहे।
- 5 जुलाई, 2017-राजस्थान के बाड़मेर में एकात्म मानवदर्शन व्याख्यान पर पारंपरिक ज्ञान विषय पर

प्रो. राजकुमार फुलवरिया, श्री मुकुंद बिहारी ने विचार रखे।

- 13 जुलाई, 2017– जज़्मू में भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर व्याज़्यान का आयोजन हुआ, जिसमें मुज़्यवज़्ता माननीय सहसरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबले, जज़्मू-कश्मीर के उपमुज़्यमंत्री श्री निर्मल सिंह रहे।
- 18 जुलाई, 2017– तिरुवनंतपुरम में एकात्म मानवदर्शन व्याज़्यान में केरल के लिए एक वैकल्पिक विकास मॉडल विषय पर चर्चा की गई, जिसमें मुज़्यवज़्ता पूर्व केन्द्रीय मंत्री व सांसद श्री राजीव प्रताप रुड़ी रहे।
- 30 जुलाई, 2017–गुवाहाटी में एकात्म मानवदर्शन पर व्याज़्यान का आयोजन किया गया, जिसमें मुज़्यवज़्ता केन्द्रीय कानून मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद रहे।
- 14 अगस्त, 2017– इन्दौर में एकात्म मानवदर्शन व्याज़्यान पर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री सुरेश जोशी (भय्याजी) का मार्गदर्शन हुआ।
- 23 अगस्त, 2017–कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में एकात्म मानवदर्शन की प्रासंगिकता विषय पर व्याज़्यान हुई। जिसमें मुज़्यवज़्ता सांसद श्रीमती मीनाक्षी लेखी, कुलपति श्री कैलाशचंद्र शर्मा एवं डीआरआई के प्रधान सचिव श्री अतुल जैन रहे।
- 24 सितंबर, 2017– उज़्ररांचल के हल्द्वानी में एकात्म मानवदर्शन समग्र विकास हेतु दिशाबोध विषय पर उत्तरांचल उत्थान परिषद एवं डीआरआई के संयुज़्त तत्वाधान में व्याज़्यान का आयोजन किया गया। जिसमें प्रमुख वज़्ता डा. महेश शर्मा, डॉ.बी.एस. बिष्ट, डॉ शिवेंद्र कश्यप, श्री प्रेम बराकोटी रहे।
- 6-7-8 अज़्टूबर, 2017– राष्ट्रीय कारीगर परिषद द्वारा परज़्परागत कारीगरी विषय पर व्याज़्यान का आयोजन हुआ। जिसमें मुज़्यवज़्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सहसरकार्यवाह श्री सुरेश सोनी, केन्द्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी, केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री हंसराज अहिर, श्री सुरेश सोहनी, श्री प्रभाकर राव मुंडले, श्री अभय महाजन रहे।
- 26-27 अज़्टूबर, 2017– मुज़्यधारा के निर्णय लेने में महिलाओं की भूमिका विषय पर पुणे में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें मुज़्यवज़्ता श्रीमती गीताताई गुंडे, प्रो. अनिरुद्ध देशपांडे, श्रीमती निर्मला आप्टे, श्रीमती ज्योति चौथवाईवाला, डॉ दिव्या गुप्ता, श्रीमती निरुपमा देशपांडे, श्रीमती शताज़्दी पांडे, डॉ पूर्णिमा आडवाणी, श्रीमती विजया रहटकर, डॉ विनय सहस्त्रबुद्धे, श्रीमती अर्चना चिटनिस रहे।
- 4-5 नवंबर, 2017–उज़्ररांचल के अलमोड़ा में दैशिक शास्त्र पर कार्यशाला हुई। जिसमें प्रमुख वज़्ता पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी, पूर्व मुज़्यमंत्री श्री भगत सिंह कोश्यारी एवं पूर्व मंत्री प्रकाश पंत रहे।
- 18 नवंबर, 2017– अजमेर में एकात्म मानवदर्शन व्याज़्यान पर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री सुरेश जोशी (भय्याजी) का मार्गदर्शन हुआ।
- 14 दिसज़्बर 2017– जयपुर में एकात्म मानवदर्शन व्याज़्यान पर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री सुरेश जोशी (भय्याजी) का मार्गदर्शन हुआ।
- 24 जनवरी, 2018– कोलकता में एकात्म मानवदर्शन व्याज़्यान पर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री सुरेश जोशी (भय्याजी) का मार्गदर्शन हुआ।
- 28 जनवरी 2018– महाराष्ट्र के जलाज़्ब में सुरभि सेवा प्रकल्प एवं डीआरआई के संयुज़्त तत्वाधान में जल कार्यशाला का आयोजन हुआ।
- दीनदयालजी के एकात्म मानवदर्शन को कथा रूप में प्रस्तुत किया गया। इसका आयोजन दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किया गया। कथावाचक श्री आलोक कुमारजी रहे।

  16-17-18 दिसंबर, 2016 को भोपाल।

  26-27-28 जून, 2017 को इंदौर।

  24-25 सितंबर, 2017 को मुज़्बई।

  5-6 अज़्टूबर, 2017 को रायपुर।

प्रबंध समिति

संस्थापक राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख

संपर्क अधिकारी **मा. श्री सुरेशजी (भैयाजी) जोशी,** डॉ. हेडगेवार भवन, (संघ भवन), महाल,
नागपुर-440032 (महा.) फोन : 0712-2723003, 2720150
मा. मदनदास जी, यशवन्त भवन 5वां तला, पांडुरंग बुधकर मार्ग दीपक टाकीज के पीछे लोअर परेल,
मुम्बई-400013 (महा.) फोन : 022-24947224, 24947330

अध्यक्ष

श्री वीरेन्द्रजीत सिंह
15/198-ए, विक्रमाजीत सिंह मार्ग, कानपुर-208001 (उ.प्र.)
फोन: 0512-2304325, 3015444 मोबा.: 9506270909
email : vpaditya123@yahoo.co.in

उपाध्यक्ष

श्री प्रभाकरराव मुण्डले
''प्रतिभा'', 164, शिवाजी नगर, नागपुर-440010 (महा.)
फोन: 0712-2248172, 2248641 (नि)
फैक्स: 2541272, 2524643 (का.) 2248119 (नि.)
मोबाइल: 9822467830
email : prmundle@ yahoo.com

डॉ. पूर्णिमा आडवाणी
73, महरदाद, प्रेसीडेन्ट होटल के सामने, कप परेड,
मुम्बई-400005 (महा.) फोन: 022-22844332 (का.)
22182508 (नि.) मोबा. 9920364784
email : pa@thelawpoint.com

DR. NARESH SHARMA
Field Head House, 66, Latham Lane, Gomersal
Cleckheaton, West Yorks BD 19 4 AP (U.K.)
Ph. : 00441274 872773, 0044790 0804177
email : nareshsharma1@btinternet.com

डॉ. भरत पाठक
C/o 7-ई, स्वामी रामतीर्थ नगर, झण्डेवाला एक्स., नई दिल्ली-55
फोन: 011-23526735, मोबा.: 09967720060
email : bharatpathak67@rediffmail.com

प्रधान सचिव

श्री अतुल जैन
5186, बसन्त रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 011-23585521 मोबाइल: 9811055166
email : atulj.dri@gmail.com

संगठन सचिव

श्री अभय महाजन
सियाराम कुटीर, चित्रकूट, जिला-सतना-485334 (म.प्र.)
फोन: 07670-265353, 265510
मोबाइल: 9868244642, 9425436524
email : abhay1947@rediffmail.com

सचिव

श्री रामकृष्ण तिवारी
ग्रामोदय प्रकल्प, जयप्रभाग्राम-271209 जिला-गोण्डा (उ.प्र.)
फोन: 05262-250005 मोबाइल: 9415057301
email: drijaiprabhagram@gmail.com

डॉ. अशोक पाण्डेय
उद्यमिता विद्यापीठ, ए-12, दीनदयाल परिसर, चित्रकूट,
जिला-सतना-485334 (म.प्र.) मोबाइल: 9424617837
email: ashokpandey02oct@gmail.com

कोषाध्यक्ष

श्री नितिन साबले
लक्ष्मी निवास, सुभाष नगर, शुक्रवार पेठ, पुणे-411002 (महा.)
फोन: 020-24472008 मोबाइल: 9822448000
email : nitinsable@gmail.com

सदस्य

श्री रामअवतार बिंजराजका
पुराना रांची रोड, चक्रधरपुर-833102 जिला-सिंहभूम (प.),
झारखंड फोन: 06587-238176, 9425571028
email : ramawtar@gmail.com

श्री रंगन दत्ता
सी-106, सेक्टर-40, नोएडा-201301 (उ.प्र.)
फोन: 0120-2501778, 4350602 मोबा.: 9811733109
email : rangandutta@yahoo.co.in

श्री के.पी. शुक्ला
4-एफ, नवाब युसुफमार्ग, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद-211001
(उ.प्र.) फोन: 0532-2408686 मोबा.: 9450601478
email: kamtaprasadshukla@outlook.com

श्री सूर्यकांत जालान
'सन्तकृपा' 84-बी, रवीन्द्रपुरी, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
फोन: 0542-2310071, 2310072 मो.: 9415300125
email : kanujalan@gmail.com

श्री ज्योति प्रकाश मस्करा
द महावीर जूट मिल्स प्रा.लि., सहजनवा, गोरखपुर-273209 (उ.प्र.)
मोबाइल: 9935078829
email : jmaskara@rediffmail.com

डॉ. विक्रमा प्रसाद पाण्डेय
सरयू कुटीर, एम-358, अवधपुरी कालोनी, फेज-1, अमानीगंज,
फैजाबाद-224001 (उ.प्र.) मोबाइल: 9415717208

डॉ. ओम शंकर त्रिपाठी
335, अटल बिहारी नगर, उन्नाव-209801 (उ.प्र.)
फोन: 09935368353
email : tripathi.omshankar@gmail.com

सौ. अनुजा परचुरे
258, रामनगर ग्राउण्ड के पास, नागपुर-440010 (महा.)
फोन: 0712-2534611 मोबाइल: 08975067911
email : anuja.parchure@yahoo.com

श्री वीरेन्द्र सिंह
रामदर्शन, चित्रकूट,जिला-सतना-485334 (म.प्र.)
मोबाइल: 9425837675
email : ramdarshan@chitrakoo.org

श्री पुरूषेन्द्र कौरव
भ.सं.30, योजना क्र. 14, विजय नगर, जबलपुर-482001 (म.प्र.)
फोन: 0761-2649529 मोबाइल: 9425410910
email : pkkaurav@rediffmail.com

श्री संजीव गुप्ता
1860, वजीर सिंह स्ट्रीट, चूना मंडी, पहाड़ गंज,
नई दिल्ली-55 मोबाइल: 9810309511
email : yakshaindia@yahoo.co.in

श्री कमलाकर आम्बेकर
16ए, सुयोग अपार्टमेन्ट समाधान कॉलोनी, सिविल कोर्ट के पीछे,
कोकणवाडी, औरंगाबाद-431005 (महा.)
फोन: 0240-2338218 मोबाइल: 7798645425
email:kdambekar48@gmail.com

डॉ. उपेन्द्र दत्तात्रेय कुलकर्णी
23, यशवंत नगर एक्स., पावड़े वाड़ी नाका,
नांदेड-431602 (महाराष्ट्र) मोबाइल: 9175073286
email: udknanded@gmail.com

श्री रमेश पांडव
साहूजी स्मृति, 47, माया नगर, एम-2, सिडको, दिपाली होटल
के पीछे, मारुती मंदिर के सामने औरंगाबाद-431003 (महा.)
मोबाइल: 9730081661
email: rameshmpandav@gmail.com

श्री वीरेन्द्र जायसवाल
बी-22/225, ए-3, खोजवा, वाराणसी-221010 (उ.प्र.)
मोबाइल: 9415285369
email: drvirendrajaiswal@gmail.com

श्री हरमेश चौहान
11/273, विकास नगर, नजदीक मिनी स्टेडियम,
लखनऊ-226022 (उ.प्र.) मोबाइल: 9450930087
email: harmeshschauhan@gmail.com

श्री वीरेन्द्र चतुर्वेदी
हीरा निवास, बांदा रोड, नैरेनी, बांदा-210129 (उ.प्र.)
मोबाइल: 9415591332

श्री अशोक सोहनी
198, व्यास नगर, उज्जैन-456010 (म.प्र.) मो.: 9425916555
email: ashoksohony@gmail.com

विशेष आमंत्रित

मेजर टी.आर. वर्मा
ईए-1/13, इंद्रपुरी, नयी दिल्ली-12 फोन: 011-23524555
(का.), 25832242 (नि.) मोबाइल : 9868101569
email : dridelhi@rediffmail.com

श्री जेह वाडिया
द वाडिया ग्रुप, सी-1, वाडिया इण्टरनेशनल सेन्टर बाम्बे डाइंग,
पांडुरंग बुधकर मार्ग, वरली, मुम्बई-400025 (महा.)
फोन: 022-22262651, 24105759
email : jeh@wadiagroup.com

श्री करणपाल
निदेशक ए.पी.जे. एजूकेशन एशोसियेशन प्रा.लि.
ए.पी.जे. हाउस, 15, पार्कस्ट्रीट, कलकत्ता-700016
फोन: 033-22295455, 22295456
email: karnpaul@apeejaygroup.com

श्री पुनीत सोहल
अर्बन सिस्टम इंडिया प्रा. लि.
डी-159, सूरजमल विहार, दिल्ली-110092
मोबाइल: 9810073766
email : puneet.sohal@urbanarchitect.in

श्री संजीव नैयर
260, गुजरावाला टाउन, पार्ट-3, नई दिल्ली-110009
मोबाइल: 9910600700
email: nayyarsir@yahoo.com

श्री राजेश महाजन
15, आनंद नगर, चितावड, इंदौर-452001 (म.प्र.)
मोबाइल: 9425057910
email : rajeshklmahajan@gmail.com

श्री राजेन्द्र सिंह
जन शिक्षण संस्थान, गनीवां, जि.-चित्रकूट-210206 (उ.प्र.)
मोबाइल: 8765432192
email: rajendrmanju.sw1996@gmail.com

SH. NARESH SETHI
Upper Floors, 16 Vernon Street, West Kensington, London W14 0RJ, UK. Ph. +442076030455
Mob.+447787147362 email : n.sethi@aol.co.uk

श्री नीलेश कुलकर्णी
4, सुशील दज़ अपार्टमेंट, 4 पद्मा रेखा सोसायटी, कर्वे नगर, पुणे-411052 (महा.) मोबाइल: 9822439650
email : neeleshkulkarni@msn.com

श्री सुनील जायसवाल
बी-101, विथिका टावर, दोस्ती विहार, वर्तक नगर, ठाणे (प.)-400606 (महाराष्ट्र) मोबाइल: 9821452000
email: sunil@wadiagroup.com

श्री उत्तम बैनर्जी
एल-बी/97, बांधवगढ़ कालोनी, सतना-485005 (म.प्र.)
मो.: 9425173457 email: uttamji.satna@gmail.com

पदेन सदस्य

श्री जगदीश सुकलीकर
543, रेणुका, पुरानी रामदास पेठ, नागपुर-440033 (महा.)
मो.: 9422111464 फोन: 0712-2224331 (का.) 2457266 नि.
email : jbsuklikar@gmail.com

श्री प्रज्योति कुमार त्रिपाठी
जन शिक्षण संस्थान, गांधी पार्क,
जिला-गोण्डा-271201 (उ.प्र.)
फोन: 05262-230569, 9450223956
email : jssgonda@gmail.com

श्री अमिताभ वशिष्ठ
117, पुष्पांजलि वाटिका, सिकंदरा,
आगरा-282007 (उ.प्र.) मोबाइल: 9868738582
email : amitabh_72@yahoo.com

डॉ. रामलखन सिंह सिकरवार
जन शिक्षण संस्थान, गनीवां, जि.-चित्रकूट-210206 (उ.प्र.)
फोन: 05198-290304, मोबाइल: 9425886085
email : jss_chitrakoot@yahoo.in

श्री गंगाधर देशमुख
जन शिक्षण संस्थान, राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख, उद्यमिता भवन, दीनदयाल नगर, चक्रधर नगर के पीछे, पांगरी रोड,
जिला-बीड-431122 (महाराष्ट्र) मोबाइल: 9270157147
email: beedjss@gmail.com

डॉ. चंद्रमणि त्रिपाठी
कृषि विज्ञान केन्द्र, डिघोलअंबा, पोस्ट बाक्स नं. 28, तालुका, अम्बाजोगाई, जिला-बीड-431517 (महा.) मो.: 98904 67522
email: cmstripathi@yahoo.co.in
kvkbeed@rediffmail.com

डॉ. उपेन्द्र नाथ सिंह
लाल बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केन्द्र, गोपाल ग्राम, गांव-तुलसीपुर, पोस्ट-दुरगोड़वा, जिला-गोण्डा-271001 (उ.प्र.)
मोबाइल: 9415534704
email: drikvkgonda@gmail.com

डॉ. नरेन्द्र सिंह
कृषि विज्ञान केन्द्र, गनीवां, जिला-चित्रकूट-210206 (उ.प्र.)
मोबाइल: 9415176268
email: nskvkchitrakoot@gmail.com
kvkganiwan@rediffmail.com

डॉ. राजेन्द्र सिंह नेगी
कृषि विज्ञान केन्द्र, मझगवां, जिला-सतना-485331 (म.प्र.)
मोबाइल: 9425887138
email: kvksatna@rediffmail.com

साधारण सभा

श्रीयुत श्रीकृष्ण माहेश्वरी
माहेश्वरी निवास, रामना टोला, जि.-सतना-485001 (म.प्र.)
मोबाइल : 9425172937

श्री देवेन्द्र स्वरूप अग्रवाल
178, सहयोग अपार्टमेन्ट, मयूर विहार, फेस-1, दिल्ली-92
फोन: 011-22750116 मोबाइल: 9414012905
email: devendra_swarup@hotmail.com

डॉ. महेश चन्द्र शर्मा
सी-108, राम कृष्ण अपार्टमेंट,
सेक्टर-23, द्वारका, नई दिल्ली-75
मोबाइल: 9868219784
email: mahesh.chandra.sharma@live.com
ekatmrdvf@yahoo.co.in

श्री अतुल श्रॉफ
श्राफ फाउण्डेशन ट्रस्ट, पोस्ट-कलाली,
जिला-वड़ौदा-390012 (गुजरात)
फोन : 0265-2335252 (नि.)
email: sft@shroffsfoundation.org

श्रीमती श्रुति श्रॉफ
श्रॉफ फाउण्डेशन ट्रस्ट, पोस्ट-कलाली, जि.-वड़ौदा-390012 (गुज.)
फोन : 0265-2680702 (का.), 2335252 (नि.)
email: sft@shroffsfoundation.org

श्री रसिक भाई खमार
308/ए/4, अशोक अपार्टमेंट, नजदीक ओरीएंटल क्लब, एलिस ब्रिज, अहमदाबाद-380006 (गुज.)
मोबाइल: 9327008869
email: anand_swadesh@yahoo.com

डॉ. अजीत नारायण गुंजीकर
23, मयूर, प्लाट नं. 19, बांद्रा रिक्लेमेशन, (पश्चिम) बांद्रा, मुंबई-400057 (महा.) मोबाइल: 9820042505
email: ajit.gunjikar@arexlab.com

श्री अनूप अगरवाला
84, मेकर्स चेम्बर-3, नरीमन प्वाइंट, मुंबई-400021 (महा.)
मोबाइल: 9820069525
email: anup@bla.co.in, anup29@gmail.com

डॉ. नितिन भरत धर्मराव
'स्वागत', केशव नगर, अम्बाजोगाई, बीड-431517 (महा.)
मोबाइल: 9422243318
email: drnbd@rediffmail.com

डॉ. विनय बह्राले
'मानस' 8, संमित्र कॉलोनी, नजदीक मारावाड़ प्रेस, औरंगाबाद-413001 (महा.) मोबाइल: 9860798041
email: vinay.barhale@gmail.com

श्रीमती ज्योति मुजुमदार
20, अकबर रोड, नई दिल्ली-11, मोबाइल: 9999001866
email: jyotimujumdar@gmail.com

श्रीमती मल्लिका नड्डा
63, रौरा सेक्टर, बिलासपुर-174021 (हि.प्र.)
मोबाइल: 9418000055
email: mallikanadda@yahoo.co.in

डॉ. नंदिता पाठक
C/o 7-ई, स्वामी रामतीर्थ नगर, झण्डेवाला एक्स., नई दिल्ली-55
फोन: 011-23526735, मोबाइल: 09987027499
email: bharatnandita@yahoo.com

सुश्री शैला देशमुख
सियाराम कुटीर, चित्रकूट, जिला-सतना-485334 (म.प्र.)
मोबाइल: 9425884683
email: s.mgcgv@gmail.com

श्रीमती कुमुद सिंह
7-ई, स्वामी रामतीर्थ नगर, झण्डेवाला एक्स.
नई दिल्ली-110055 फोन: 011-23526735

श्री राकेश शुक्ला
225, वी.पी. हाउस रफी मार्ग, नई दिल्ली-110 001
मोबाइल: 9871728516
email: rakeshukla7@gmail.com

श्री वीरेन्द्र तिवारी
गली न. 9, राजेन्द्र नगर, सतना-485001 (म.प्र.)
मोबाइल: 9425394293
email: virendrakumar.tiwari@gmail.com

श्री हेमन्त पाण्डेय
5/758, सेकेण्ड फ्लोर, सेक्टर-5, वैशाली,
जिला-गाजियाबाद-201010 (उ.प्र.) मोबा.: 9868112727
email: hemant.dri1988@gmail.com

श्री हरीश गुरुबक्शानी
कनुडा कुटीर, मालीपुरा मोड के सामने, कैथोन रोड, रायपुरा, कोटा-324003 (राजस्थान) मोबाइल: 9783053851
email: harish.gurbaxani@gmail.com

श्री सी.एम. नारायण शास्त्री
मै. फलाडा एग्रो रिसर्च फाउण्डेशन प्रा. लि., नं. 92/5, कननाली गांव, सीगेहली क्रास, मागाड़ी मेन रोड, बंगलौर-560060 (कर्नाटका) मोबाइल: 9448374763, 9900039413
email: krishnashastry@hotmail.com

श्री मनुवीर अग्रवाल
701, ई विंग, मनीष गार्डन सोसाइटी,बिल्डिंग न. 2/3/4, जे.पी. रोड, 4 बंगलोस एरिया, अंधेरी (प.),मुंबई-400053 (महा.)
फोन: 022-26353029 मोबाइल: 9823229000
email: manuvir@viralloys.com

श्री चतर सिंह
राम गढ़, जैसलमेर (राजस्थान) मोबाइल: 9672140359

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

लाडो अभियान

बाल विवाह न रचें, अपराध से बचें

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

बाल विवाह → FIR → जेल/जुर्माना

बाल विवाह अपराध है

बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के अनुसार 18 वर्ष से कम उम्र में लड़की तथा 21 वर्ष से कम उम्र में लड़के का विवाह करना कानूनन अपराध है।

बाल विवाह में शामिल सभी व्यक्ति एवं सेवाप्रदाता अपराधी है।

ऐसे विवाह में शामिल होने वाले सभी नाते-रिश्तेदार, मित्र एवं सेवाप्रदाता जैसे धर्मगुरू, मैरिज गार्डन, टेंट हाउस, बैंड-बाजा, सैलून, प्रिंटिंग प्रेस इत्यादि से सम्बन्धित सभी व्यक्ति/ संस्था भी अपराधी की श्रेणी में आते हैं।

दण्ड-कठोर कारावास/ जुर्माना / या दोनों

बाल विवाह करने और करवाने वाले दोषियों को दो वर्ष तक का कठोर कारावास या एक लाख तक का जुर्माना अथवा दोनों का प्रावधान है।

बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006

बाल विवाह कानूनी अपराध है

आप बाल विवाह होता पायें तो इसकी सूचना जिला कलेक्टर, स्थानीय पुलिस या महिला बाल विकास विभाग के अधिकारी को तत्काल दें।

सूचनादाता की पहचान गोपनीय रखी जाती है।

संचालनालय महिला सशक्तिकरण, महिला एवं बाल विकास विभाग, मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आरएनआई नं. दिल्ली-एन/2002/7201

रुडयार्ड किपलिंग ने
उन्हें अपनी कल्पनाओं
में बसाया और अब हम
उन्हें बसा रहे हैं,
एक नए परिवेश में।

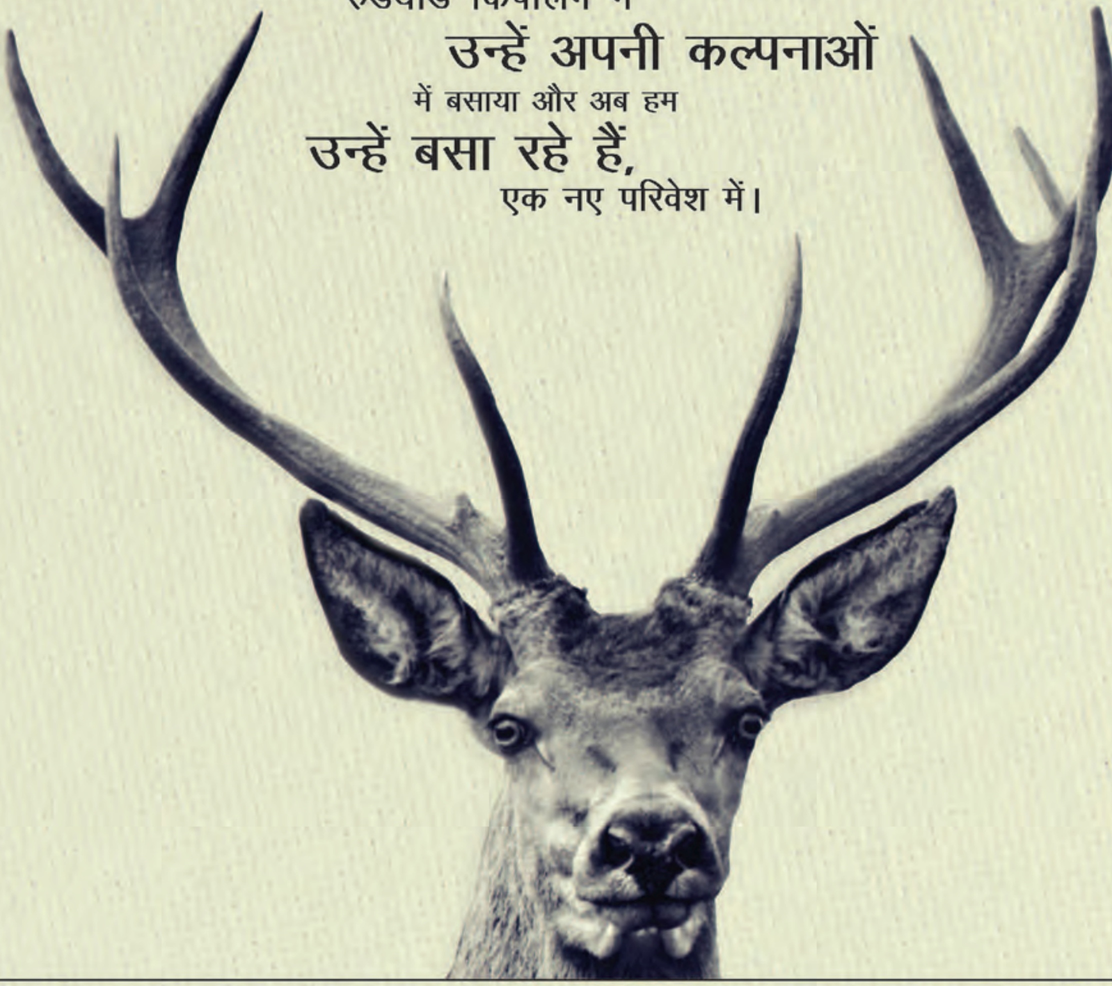

"ओएनजीसी बारासिंघा (ईस्टर्न स्वैम्प डीअर) संरक्षण परियोजना"

एक दुर्लभ प्रजाति को विलुप्त होने से बचाने के लिये ओएनजीसी की सीएसआर पहल।

असम में पाये जाने वाले बारासिंघा या ईस्टर्न स्वैम्प डीअर *(Rucervus duvaucelii ranjitsinhi)* आज विलुप्त होने की कगार पर है। प्रसिद्ध लेखक रुडयार्ड किपलिंग ने जिस से मंत्रमुग्ध हो कर उसकी सुन्दरता को अपनी दूसरी किताब 'द सेकंड जंगल बुक' में कैद किया हो, उस जीव के लिये यह काफी दुखद स्थिति है।

ओएनजीसी ने इस प्रजाति को विलुप्त होने से बचाने के लिये अपने कदम बढ़ाये, और वो भी बिल्कुल सही समय पर।

इसके पहले चरण के अन्तर्गत इनकी अनुमानित आबादी, अनुकूल पर्यावरण, पशु–चिकित्सा अंतःक्षेप एवं सामान्य अध्ययन और जागरूकता अभियान किया गया। इनके स्थानांतरण के लिये मानस राष्ट्रीय उद्यान को चुना गया, जो इनके रहने के लिये बिल्कुल उपयुक्त स्थान था।

काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान से 19 बारासिंघो को मानस में स्थानांतरित करना बहुत ही कठिन काम था। योजना के इस अत्यंत कठिन दूसरे चरण को दक्षिण अफ्रीका से बुलाये गये वन्यजीव विशेषज्ञों ने बहुत खास तरीके से अंजाम दिया। 19 बारासिंघो का स्थानांतरण खास तंबुओ में किया गया, जिनको अन्दर से उनके प्राकृतिक आवास जैसा ही बनाया गया था। कुछ ही महीनों में 6 नवजात बारासिंघो ने झुण्ड में जुड़कर, स्थानांतरण की खुशी को दुगना कर दिया।

इस योजना के विस्तार के तीसरे चरण के अन्तर्गत 20 अतिरिक्त बारासिंघो का स्थानांतरण किया जा रहा है।

यह परियोजना संतुलित पर्यावरण की ओर ओएनजीसी की एक शुरुआत है। लुप्तप्राय प्रजातियों का संरक्षण करने के लिये प्रेरित, हमारा संगठन प्रकृति की असली सुंदरता को बनाये रखने के लिये प्रतिबद्ध है।

ओएनजीसी
ONGC

ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन लिमिटेड

पंजीकृत कार्यालयः- पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऊर्जा भवन, 5, नैलसन मंण्डेला मार्ग, वंसत कुंज, नई दिल्ली-110070
दूरभाषः 011-26752021, 26122148, फैक्सः 011-26129091 www.ongcindia.com /ONGC Limited @ONGC_